Digtized by Muthulakshmi Research Academy

126

वर्ल्ड बुक

नपुंसकता

कारण और उपचार

अनेकों प्रकार की सेक्स सम्बन्धी कमजोरियां, शीघ्रपतन और नपुंसकता आदि उत्पन्न होने के कारण और उनका उपचार

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नपुंसकता : कारण और उपचार

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नपुंसकता दाम्पत्य सुख में सबसे बड़ी बाधा है। इस रोग से ग्रस्त पुरुष का जीवन नीरस ही नहीं, नर्क तुल्य बन जाता है। यह रोग जितना शारीरिक है उससे कहीं अधिक मानसिक है। प्रस्तुत पुस्तिका के लेखक डाक्टर गोलीवर, एम० डी०, अमेरिका के चोटी के मानस चिकित्सक हैं जिन्होंने इस पुस्तिका में अपने पचासों रोगियों के सच्चे उदाहरण देते हुए बड़े ही मनोरंजक ढंग से नपुंसकता उत्पन्न होने के अनेकों कारण बताने के साथ ही वे सरल उपाय भी बताए हैं जिनके द्वारा लाखों नपुंसक पुरुषों ने फिर से अपनी यौन सामर्थ्य हासिल कर ली है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नपुंसकता

कारण और उपचार

अनेकों प्रकार की सैक्स सम्बन्धी कमजोरियां, शीघ्रपतन तथा
नपुंसकता आदि उत्पन्न होने के कारण और
उनका सरल उपचार

मूल लेखक—
डा० गोलीवर, एम० डी०
संशोधन व परिवर्धन
डा० कालीचरन गुप्ता

वर्ल्ड बुक कम्पनी
३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
बिक्री केन्द्र—4531-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नपुंसकता : कारण और उपचार

© सर्वाधिकार स्वरक्षित

मूल लेखक
डा० गोलीवर, एम० डी०
संशोधन व परिवर्धन
डा० कालीचरन गुप्ता

पांचवा संस्करण १९८४

मू 6/-

प्रकाशक :
मेडीकल प्रेस,
(वर्ल्ड बुक कं० के स्वामित्व में)
४५३१-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

मुद्रक :
नवनीत प्रिण्टर्स
वैस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भूमिका

यूं तो नपुंसकता के विषय पर वाजार में पचासों पुस्तकें उपलब्ध हैं परन्तु इनमें से किसी भी पुस्तक में इस विषय का गंभीरता से अध्ययन नहीं किया गया है जिसका कारण यह है कि स्वयं इन पुस्तकों के लेखक भी इस रोग की वास्तविकता से परिचित नहीं हैं अतः उन्होंने अपनी पुस्तकों में नपुंसकता नाशक इन्जेक्शनों, टेब्लेट्स व टानिकों और अधिक-से-अधिक कुछ तिलाओं का प्रयोग करने का सुझाव देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली है।

सच्चाई यह है कि नपुंसकता कोई रोग नहीं है बल्कि एक भावनात्मक (Emotional) समस्या है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि २० वर्ष से लेकर ४० वर्ष तक के वीच की आयु का कोई भी पुरुष नपुंसक नहीं होता, अगर वह अपने को नपुंसक समझता है तो इसका कारण केवल मनो-वैज्ञानिक है।

डाक्टर गोलीवर अमेरिका के एक प्रसिद्ध मनोरोग विशेषज्ञ हैं। उन्होंने हजारों नपुंसक पुरुषों का अध्ययन करने के पश्चात् जो दिलचस्प निष्कर्ष निकाले हैं वे इस पुस्तक में दिए गए हैं। इस पुस्तक को पढ़कर हजारों पुरुष जो अपने को नपुंसक समझे वैठे थे अपनी समस्या का सही निदान पाकर सफल दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

थोड़े से ही समय में इस पुस्तक के कई संस्करण समाप्त हो जाना इसकी उपयोगिता का प्रमाण है।

—प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

विषय सूची

1. नपुंसकता के कारण और लक्षण 7
2. शीघ्रपतन 11
3. विवाहित पुरुषों में नपुंसकता 26
4. सुहागरात या··· 35
5. परकीय सम्बन्ध और नपुंसकता 43
6. परिस्थिति-जन्य नपुंसकता 52
7. धार्मिक कट्टरता 60
8. नशीली चीजें और नपुंसकता 62
9. शारीरिक नपुंसकता 79

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 1

नपुंसकता के कारण और लक्षण

भिन्न-भिन्न यौन-विशेषज्ञों की दृष्टि से नपुंसकता की परिभाषाएं भी भिन्न-भिन्न हैं। गम्भीरता से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इन सब परिभाषाओं का सार एक ही है। विभिन्न परिभाषाओं में शब्दों का अन्तर भले ही हो; परन्तु सबका निष्कर्ष एक ही है कि नपुंसकता का सम्बन्ध शरीर से उतना नहीं है जितना कि मन (Mind) से है। डाक्टर लम्बर्ड कैली ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि वास्तव में नपुंसक वह पुरुष है जिसके लिंग में शारीरिक दोष होने के कारण उत्थान नहीं आता और जो स्त्री के साथ मैथुन करने में असमर्थ रहता है।

मनोचिकित्सक कॉर्ल मैनिंजर ने डाक्टर कैली की परिभाषा में थोड़ा-सा संशोधन करके लिखा है कि अनेक पुरुष योनि में अपना शिश्न प्रविष्ट करके यह समझ बैठते हैं कि वे सच्चे पौरुष के स्वामी हैं, उनमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है। परन्तु केवल शिश्न प्रवेश ही संभोग नहीं है। यह ठीक है कि इससे उन्हें कुछ सन्तुष्टि होती है, परन्तु यह वास्तविक आनन्द नहीं है; अधूरा आनन्द है। सच पूछो तो आनन्द की यह अपूर्णता इस बात का संकेत देती है कि उनमें अब नपुंसकता के लक्षण प्रगट होने लगे हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि नपुंसकता की ओर ले जाने वाला यह मील का पहला पत्थर है।

सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक फ्रैंक एस० कैप्रियो, एम० डी०, ने भी 'नपुंसकता' का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि यदि किसी पुरुष के शिश्न में उत्थान तो आ जाये परन्तु वह मैथुन क्रिया की समाप्ति तक शिश्न के उत्थान को बनाये रखने में असमर्थ रहे तो उसे भी सच्चे अर्थों में नपुंसक ही कहा जाना चाहिए। नपुंसकता के लक्षणों का विवेचन करते हुए उन्होंने अपूर्ण उत्थान, साधारण-सा उत्थान, शीघ्र स्खलन, बिना किसी कारण के विलम्ब से होने वाले स्खलन, मैथुन-क्रिया में

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

वास्तविक आनन्द का अभाव अर्थात् चरम सुख प्राप्त न कर सकने की स्थिति, मैथुन की अनिच्छा या बहुत कम इच्छा, सम्भोग करते हुए वीर्य का स्खलित न होना अथवा सम्पूर्ण सम्भोग की अवधि में शिश्न के उत्थित न रहने आदि को नपुंसकता के लक्षण माना है।

सुप्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डाक्टर एल्बर्ट एलिस विवाह और वैवाहिक समस्याओं की अधिकारी विदुषी मानी जाती हैं। अन्य चिकित्सकों, विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों के नपुंसकता सम्बन्धी मतों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् उन्होंने लिखा है कि उस व्यक्ति को वास्तव में नपुंसक मानना चाहिए जिसमें निम्नलिखित दोषों में से किसी भी दोष का लक्षण पूर्णतः या आंशिक रूप से, थोडे समय के लिए या सदा के लिए, मानसिक अथवा शरीरिक रूप से दिखाई दे :

1. संभोग की इच्छा न होना या कम होना अथवा मानसिक रूप से उसके प्रति उदासीन बने रहना।
2. संभोग में आनन्द प्राप्त न होना और यदि हो भी तो कम होना।
3. संभोग करते समय पीड़ा की अनुभूति होना।
4. मैथुन के द्वारा चरम आनन्द की उपलब्धि न होना।
5. या तो वीर्य स्खलित ही न होना, और यदि हो भी तो स्खलन के पश्चात् सन्तुष्टि का न होना।
6. या तो साधारणतया यौन सम्बन्ध स्थापित ही न होना और यदि हो भी जाये तो उसका बना न रहना।

डाक्टर एल्फ्रेड किन्से ने इस विषय पर सर्वेक्षण और अनुसंधान किया है। इस विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने सैकड़ों व्यक्तियों से सम्पर्क करके उनके अनुभवों को संकलित किया। इन संकलित अनुभवों के आधार पर उनका मत है कि ऐसे बहुत कम नपुंसक हैं जिनके शिश्न में नाममात्र को भी उत्थान नहीं होता। इस प्रकार के पुरुषों की गणना की जाए तो ऐसे लोग पैंतीस वर्ष से कम आयु वालों में एक प्रतिशत भी नहीं मिलेंगे। जो पूछताछ उन्होंने विवाहित पुरुषों से की उससे उन्हें ज्ञात हुआ कि लगभग 45 प्रतिशत पुरुष ऐसे हैं जिन्होंने कभी सम्पूर्ण संभोग नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अमेरिका के सुप्रसिद्ध यौन-चिकित्सक दम्पति डाक्टर अब्राहम स्टोन और उनकी श्रीमती (डाक्टर) स्टोन का मत है कि अमेरिका में ऐसे लगभग दस प्रतिशत पुरुष नपुंसक हैं जिनकी आयु पचास से कम है। विवाहित पुरुषों में लगभग 15 प्रतिशत पुरुष ऐसे हैं जिनके शिश्न में समुचित समय पर उत्थान नहीं आता और यदि उसमें उत्थान आ भी जाता है तो उतना कड़ापन नहीं आता जितना कि आना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह उत्थान अधिक समय तक नहीं रहने पाता। ये पुरुष इतने दुर्बल होते हैं और संभोग की तकनीक से इतने अनभिज्ञ होते हैं कि उनकी पत्नियां इस बात की आशा ही छोड़ बैठती हैं कि उनके पति कभी उनकी कामवासना को सन्तुष्ट भी कर सकेंगे। ऐसे पुरुषों की संख्या पच्चीस प्रतिशत से कम नहीं है।

डाक्टर कॉर्ल मैनिजर का मत है कि "आज सर्वत्र जो यौन दुर्बलता देखी जाती है, वह नपुंसकता ही का एक रूप है। इसके अतिरिक्त वह और कुछ नहीं है। उसकी व्यापकता का जितना अनुमान लगाया जाता है, यह उससे कहीं बढ़-चढ़कर है।" उन्होंने आगे लिखा है कि कुछ लोग तो ऐसे हैं जो अपने इस दोष से अवगत भी नहीं हैं और बहुत से पुरुष ऐसे भी हैं जो अपनी नपुंसकता को ईश्वरीय कोप या भाग्य का दोष मान कर चुप होकर बैठ जाते हैं। ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है जो अपने अन्दर नपुंसकता का आभास पाकर ही स्तम्भित हो जाते हैं और उनके हाथ-पांव फूल जाते हैं।

नपुंसकता के अनेक कारण हो सकते हैं, परन्तु इनमें शारीरिक कम और मानसिक अधिक होते हैं। लगभग 90 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं जो मानसिक कुण्ठा से ग्रसित होकर सैक्स सम्बन्धी दुर्बलता के शिकार हो गए हैं। यह बात जितनी युवकों के विषय में सत्य है, उतनी प्रौढ़ पुरुषों के विषय में नहीं है; क्योंकि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है पुरुषों के पुंसत्व में कमी आती जाती है। यह मानी हुई बात है कि जैसे-जैसे शरीर थकता जाता है, वैसे-वैसे कामवासना भी शिथिल होती जाती है। डाक्टर कैली ने अपने सर्वेक्षण में इस कथन को सर्वथा सही पाया है। जब उन्होंने बारह सौ युवकों की जांच की तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनमें से केवल 10 युवक ही शारीरिक रूप से नपुंसक थे, शेष 1190 को तो उनकी मानसिक भावना ने ही नपुंसक बना दिया था।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डाक्टर किन्से ने तो इससे भी एक कदम आगे बढ़कर घोषणा की है कि पचपन वर्ष से कम आयु वाले जिन व्यक्तियों में नपुंसकता के लक्षण मिलते हैं, उनकी नपुंसकता के लिए प्रायः उनके शरीर नहीं, बल्कि उनके मस्तिष्क उत्तरदायी होते हैं। इसके लिए जिन मानसिक कारणों की खोज की गई उनमें प्रमुख हैं—

1. भय
2. अज्ञान
3. धर्म भीरुता
4. हीन भावना और
5. बलात्कार से सम्बन्धित भावना।

नपुंसकता के मूल में जो कारण साधारणतया होते हैं वे इतने सूक्ष्म होते हैं कि अच्छे-अच्छे चिकित्सक तथा साधारण विशेषज्ञ भी इन्हें नहीं पहचान पाते। नपुंसकता के सामान्य लक्षण—जिन्हें कोई भी भुक्तभोगी जान सकता है, ये हैं—शरीर की कमजोरी, हारमोनों के दोष या उनका कम मात्रा में उत्पन्न होना, प्रौढावस्था को पार कर वृद्धावस्था में प्रवेश, चिन्ता, बहुत अधिक या बहुत कम संभोग-क्रिया, संयम का अभाव, व्यभिचार की ओर अधिक प्रवृत्ति, अति दीर्घ-कालीन ब्रह्मचर्य।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है नपुंसकता के मूल कारण शारीरिक कम और मानसिक अधिक हैं। इसलिए हम आगामी अध्यायों में इन मानसिक कारणों का ही मुख्य रूप में विवेचन करके उनसे उत्पन्न होने वाली दुर्बलताओं से मुक्ति पाने के उपाय लिखेंगे।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 2

शीघ्रपतन

बहुत से मामलों में नपुंसकता की शुरूआत शीघ्रपतन अर्थात् वीर्य के समय से पहले स्खलित होने से ही हो जाती है। वास्तव में यह है भी उसकी पहली सीढ़ी। यौन-दुर्बलता की यह पहली सीढ़ी दाम्पत्य सुख की नींव में लगा हुआ ऐसा घुन है जो सारे ढांचे को ही तहस-नहस कर देता है। यहां तक कि उस दम्पति का सारा गृहस्थ-जीवन खोखला हो जाता है और फिर उसके पनपने की कोई संभावना नहीं रहती।

यह शीघ्र स्खलन तीन प्रकार से और तीन रूपों में होता है—

1. शिश्न में उत्थान आने के तत्काल पश्चात् ही वीर्य स्खलित हो जाना।
2. भगोष्ठ से शिश्न के स्पर्श होते ही या रगड़ खाते ही वीर्य स्खलित हो जाना और
3. शिश्न के योनि में प्रवेश करके घर्षण आरम्भ करने के थोड़ी देर बाद ही वीर्य का स्खलित हो जाना।

यह ऐसी दुर्बलता है जिसने अधिकांश विवाहित पुरुषों को अपने चंगुल में फंसा रखा है। यह रोग गर्म देशों तक ही सीमित नहीं है, ठण्डे देशों में भी यह खूब फैला हुआ है। बहुत-सी पत्नियां जो विवाह के कुछ दिनों बाद ही अपने पतियों के प्रति संभोग में अरुचि दिखाने लगती हैं, उसका कारण भी यही दुर्बलता है। इसी के फलस्वरूप बहुत से नवविवाहित पति-पत्नियों के बीच कलह उत्पन्न हो जाती है। एक बार अमेरिका की सरकार ने यह जानने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की थी कि उस देश में तलाक के मुकदमे दिन प्रति दिन क्यों बढ़ते जा रहे हैं। आयोग ने ऐसे हजारों विवाहित युवक-युवतियों से सम्पर्क करके उनके बयान लिए जो अपने दाम्पत्य जीवन से असंतुष्ट थे। उस रिपोर्ट से मालूम हुआ कि सभी युवतियां अपने पतियों के शीघ्रपतन से पीड़ित थीं। इसीलिए वे

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अपने पतियों को तलाक देने को विवश हुईं। डाक्टरों ने इस प्रकार के मामलों के जो विवरण तैयार किए हैं, उनसे भी इस बात की पुष्टि होती है। डाक्टर किन्से तथा उनके सहयोगियों ने जिन विवाहित पुरुषों से सम्पर्क स्थापित किया था, उनकी भी यही समस्या थी। इस रोग के रोगियों में 40 प्रतिशत ऐसे पुरुष थे जिन्हें वीर्य स्खलित होने में तो कोई कठिनाई नहीं होती थी, परन्तु शिश्न प्रवेश के दो एक मिनट बाद ही अथवा थोड़ा-सा शिश्न प्रविष्ट होते ही उनका वीर्य स्खलित हो जाता था और शिश्न शीतल होकर निस्पंद हो जाता था। केवल दो मिनट के इस अल्पकालिक संभोग को शरीर प्रक्रिया विशेषज्ञों ने अत्यन्त अल्पकालीन, अस्वाभाविक और यौन-दुर्बलता का द्योतक माना है।

डाक्टर किन्से की मान्यता है कि अमेरिका की कुल जनसंख्या का 75 प्रतिशत भाग ऐसा है, जो दो मिनट भी अपने शिश्न को योनि में नहीं रख सकता और स्खलित हो जाता है। ऐसे भी बहुत से पुरुष हैं जिनका वीर्य दस-पन्द्रह सैकिण्ड में ही स्खलित हो जाता है। इतना ही नहीं ऐसे पुरुष भी कम नहीं हैं जिनका शिश्न योनि के सम्पर्क में आने से पहले ही ठण्डा पड़ जाता है।

डाक्टर किन्से की इस खोज से मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों तथा इस प्रकार के अन्य चिकित्सकों एवं विशेषज्ञों को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। इसका कारण यह है कि उनके अपने अनुभवों से भी इस तथ्य की पुष्टि होती थी। उनके पास अपनी दुर्बलता का वर्णन करके उनसे सम्मति लेने के लिए जो युवक आते थे उनमें से अधिकांश ऐसे होते थे जिनमें पति बनने या किसी स्त्री के साथ संभोग करने की क्षमता नहीं थी। इसका कारण था उनकी शीघ्र स्खलनशीलता।

महान मनोचिकित्सक डाक्टर रावर्ट एल० डिकिन्सन ने दाम्पत्य जीवन में व्याप्त असन्तोष के कारणों का पता लगाने के लिए 362 पत्नियों से भेंट की। इस भेंट के फलस्वरूप वे इस निश्चित मत पर पहुंचे कि उनके पतियों में से 12 प्रतिशत ऐसे थे जो शिश्न योनि में प्रविष्ट करने से पूर्व ही स्खलित हो जाते थे; 15 प्रतिशत के शिश्न योनि में दो मिनट भी नहीं रह पाते थे कि स्खलित हो जाते थे; और 10 प्रतिशत दो मिनट का समय पार कर लेते थे, परन्तु तीसरे मिनट के अन्त तक नहीं पहुंच पाते थे। इन सबको मिलाकर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कुल वयस्क अमरीकी आबादी का 40 प्रतिशत इस अभिशाप से पीड़ित था।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डाक्टर डिकिन्सन ने इस समस्या पर गम्भीरता से अध्ययन किया तो उन्हें ज्ञात हुआ कि इन पीड़ित पतियों में से अधिकतर ऐसे थे जो प्रयत्न करके अपनी सम्भोग अवधि को बढ़ाकर अपनी पत्नियों को संतुष्ट कर सकते थे। उनका स्पष्ट मत था कि उन पुरुषों में से 40 प्रतिशत ऐसे थे जो योनि में शिश्न प्रविष्ट करने के पश्चात् पांच से लेकर पन्द्रह मिनट तक सम्भोग क्रिया को जारी रखने की क्षमता रखते थे; और 17 प्रतिशत पन्द्रह मिनट से भी अधिक समय तक समागम कर सकते थे। ऐसे पुरुषों की संख्या कम नहीं थी जो आवश्यकता पड़ने पर एक घण्टे से अधिक समय तक सम्भोग करके स्त्री को संतुष्टि प्रदान करने की सामर्थ्य रखते थे।

यह बता देना अप्रासंगिक न होगा कि जिन स्त्रियों ने डाक्टर डिकिन्सन के सामने अपने बयान दिए थे, लगभग वे सभी उच्च या मध्य वर्ग की थीं और उनके पति काम-कला के विशेषज्ञ थे। वे यह भी जानते थे किस प्रकार अपनी इच्छानुसार स्खलित हुआ जाता है। जो लोग निम्न वर्ग के होते हैं और जिन्हें काम-कला का कोई ज्ञान नहीं होता, वे तो अज्ञानवश शीघ्र स्खलन को ही पुरुषत्व की निशानी मान बैठते हैं।

वास्तव में पति होने योग्य वही व्यक्ति है जो अपनी पत्नी की काम-वासना जाग्रत करके उसको कामोन्मत बनाकर अधिक से अधिक समय तक उसके साथ रति करके उसे अलभ्य आनन्द प्रदान करने की क्षमता रखता हो।

मेरीलिन और दावे नामक पति-पत्नियों के विवरणों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि कुछ विशिष्ट उपायों का सहारा लेकर स्त्रियों के असंतोष को दूर ही नहीं किया जा सकता, उन्हें चरम सुख भी पहुंचाया जा सकता है।

दावे-मेरीलिन दम्पति का उदाहरण

दावे एक चौबीस वर्ष का युवा श्रमिक है। इस समय वह नंगे बदन, केवल पाजामा पहने, सोफे पर लेटा बियर की चुस्की ले रहा है। गर्मी की ऋतु अपने यौवन पर है। गर्म-गर्म हवा ने यह हाल कर रखा है कि शरीर पर कपड़ा डालना बुरा लगता है। मन उड़ा-उड़ा-सा है। वह किसी काम में लगने को तैयार नहीं। फिर दावे दिन भर के कठोर परिश्रम के पश्चात् इस समय रात्रि में कोई काम क्यों करे। इसलिए वह मजे में पैर पसारे पड़ा है। हां, बीच-बीच में बियर की

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

चुस्की लेना नहीं भूलता। या बीच-बीच में उड़ती हुई नजर छत पर डाल लेता है। एक प्रकार से यह उसका मस्ती का आलम है।

सामने से यह कौन नीली आंखों वाली, वीनस जैसी सुन्दर लावण्यमयी उन्नीस वर्षीया नवयुवती चली आ रही है। अरे, यह तो उसकी नव-परिणीता वधू मेरीलिन है। वह अपने पति से लगभग दस फीट दूर खड़ी रह कर मन्त्र मुग्ध-सी अपने युवा पति को देखने लगी है। उसके मन में एक अद्‌भुत आनन्द की अनुभूति होती है। उसका मन आनन्द से हिलोरें मारने लगता है। कितना सुन्दर, कितना आकर्षक है उसका प्रियतम! और उसकी मांसपेशियां, वे तो सैकड़ों में भी नहीं मिलेंगी। वह अपने प्राणेश्वर की सौन्दर्य छवि को अपनी आंखों से पी डालना चाहती है।

दृष्टि ने प्यार उंडेला। उसे दावे का सौन्दर्य देवताओं जैसा दिखाई देने लगा। ऐसा मालूम होता था कि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं सच्चे अर्थ में पूर्ण पुरुष हो जिसमें अद्‌भुत पौरुष कूट-कूटकर भरा हो। उसकी सबल भुजाएं; सुपुष्ट मांस-पेशियां, भरी-भरी-सी जंघाएं उसके पौरुष की ढोल पीट रही थीं। कोमल-भूरे नेत्र, साफ-चिकना शरीर और मुख मण्डल पर उगने को आकुल दाढ़ी की श्यामता उसके मन को और भी आकर्षित कर रही थी। किसी भी बलवान आकर्षक पुरुष में जो मनमोहक गुण हो सकते हैं, वे सभी तो उस समय मेरीलिन को दावे में दिखाई दे रहे थे।

जब मेरीलिन का मन इस प्रकार के विचारों में डुबकियां लगा रहा था उस समय दावे को इस बात का आभास भी नहीं था कि उसकी नवयौवना पत्नी काफी देर से उसकी रूप छटा का रसास्वादन कर रही थी और उसे देख-देख कर आह्लादित हो रही थी। उसे यह भी मालूम नहीं था कि उसे देख-देखकर मेरीलिन वासना की तरंगों में डूबने उतरने लगी थी। तभी दावे को आभास हुआ कि उस कमरे में वह अकेला नहीं है, बल्कि उसके अलावा कोई और भी है। उसने चौंक-कर सिर उठाया और मेरीलिन को देख कर बोला, "अरे प्रियतमा। आओ-आओ। लो बियर का घूंट तुम भी लो।"

मेरीलिन का चेहरा लज्जा से लाल हो गया, जैसे वह अनायास चोरी करते पकड़ी गई हो। फिर भी वह साहस करके मुस्काई, कुछ आगे बढ़ी और लजाती हुई दावे की बगल में जाकर बैठ गई। दावे ने थोड़ा सरक कर उसके बैठने के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लिए स्थान कर दिया। फिर उसके अधरों से बियर का गिलास लगाते हुए बोला, "लो पी लो ! ज्यादा नहीं तो केवल एक घूंट !"

मेरीलिन दावे के आग्रह को न टाल सकी। उसने भी अपनी कोमल अंगुलियों में गिलास को थाम लिया और मुस्कराते हुए दो घूंट बियर गले के नीचे उतार ली। फिर उसने अपनी वाणी में मधु घोलते हुए कहा, "बहुत स्वादिष्ट है, साथ ही शीतल भी।"

पत्नी की प्यारी वाणी सुनकर उन्मत्त होते हुए दावे ने कहा, "सच ! एक बार फिर कहो मेरी रानी ! एक बार और···!" फिर उसने मदिरा पात्र अपने हाथ में ले लिया और मेरीलिन को प्रेम से सहलाने व थपथपाने लगा।

मेरीलिन ने मुड़कर दावे की ओर देखा। उसकी आंखों में उसने प्रेम-निमंत्रण पढ़ा और आगे बढ़कर उसके माथे को चूम लिया। उसके होंठ कुछ आगे बढ़े और उसके भूरे केशों पर फिरने लगे। इसके बाद वह अपने कपोलों से उसके केशों को सहलाने लगी। फिर अस्फुट स्वर में बोली, "ओह ! कैसी गर्मी है !"

"गर्मी तो है, किन्तु तुम अपने शीतल कोमल अंगों से सहला-सहलाकर मुझे अद्भुत ठंडक पहुंचा रही हो।" दावे ने अपनी वाणी में रहस्य घोलते हुए कहा।

उसकी मर्म-भरी वाणी सुनकर मेरीलिन लजा गई। उसे याद आया कि उसके उन्नत उरोज ब्रेसियर के बन्धन में नहीं हैं। वह संभलकर बैठ गई और बोली, "क्षमा करना दावे, मैं ब्रेसियर पहनना भूल गई। अन्दर कुछ न रहने से तुम्हें परेशानी हुई।" यह कहकर उसने अपना सूती कोट सीने के पास कस लिया।

दावे ने एक घूंट में बची हुई बियर समाप्त करके मदिरा पात्र को एक ओर सरका दिया और मेरीलिन को अपनी ओर खींच कर बोला, "तुम्हारा यही रूप तो मैं सदा देखना चाहता हूं।" यह कहते-कहते दावे के दोनों हाथ मेरीलिन के कोट को सामने से हटाते हुए उसके उन्नत उरोजों पर पहुंच गए और फिर वह उनके साथ अठखेलियां करने लगा।

अब मेरीलिन दावे की गोद में थी। उसकी पीठ दावे की छाती से चिपक रही थी और उसका दायां कपोल दावे के बाएं कपोल से सटा हुआ था। उसकी कोमल कुंचित केशराशि से भीनी-भीनी सुगन्ध निकल रही थी। इस अद्भुत स्वर्गीय आनन्द से मेरीलिन की आंखें इस तरह से झंपी जा रही थीं, मानो वह स्वप्नों की निराली दुनिया में विहार कर रही हो।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कुछ क्षण इस प्रकार आनन्द लेने के पश्चात् मेरीलिन ने अपने मुंह को दावे की गर्दन में छुपा लिया। यह स्थिति भी अधिक देर नहीं रही। उसने अपना मुंह उठाया, दावे की आंखों में आंखें मिलाकर मूक संकेतों का आदान-प्रदान किया और एक-दूसरे के अधर आपस में चिपक गए। दोनों के शरीर में काम की तरंगें उठने लगीं। अब मेरीलिन का मन उसके वश में नहीं था। उसने सहसा उठते हुए कहा, "मेरे प्रियतम ! मेरे प्राण ! आओ हम अपने शयनागार में बिस्तर पर चलें।"

दावे फुर्ती से उठ खड़ा हुआ। शयनागार में पहुंचकर उसने बत्ती बन्द कर दी; क्योंकि खिड़की के मार्ग से छनछन कर रसोईघर से आने वाला प्रकाश उनके लिए काफी था। फिर आपस में उनके अधर अधरों से जा मिले। दावे के अधर जब अधरामृत पान कर रहे थे तो उसके हाथ की अंगुलियां मेरीलिन के गुदगुदे कपोलों को थपथपा रही थीं। शरीर वासना के वशीभूत होकर कांप रहा था। मेरीलिन पलंग पर पीठ के बल लेट गई। उसकी बेचैनी प्रति क्षण बढ़ती जा रही थी।

इधर दावे के शरीर में कंपकंपी बढ़ने लगी। सांस की गति तेज हो गई। वह सब देखकर मेरीलिन को कुछ आश्चर्य हुआ। बोली, "क्या बात है दावे ? ऐसा क्यों हो रहा है।"

दावे ने एक गहरी सांस छोड़ी। उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकला। मेरीलिन का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। उसने फिर पूछा, "आखिर बात क्या है ? बोलते क्यों नहीं ? तुम्हें क्या हो गया है ?"

आखिर साहस बटोरकर वह बोला, "मुझे दुःख है। मैं बहुत लज्जित हूं प्रिये !"

मेरीलिन कुछ चिन्तित और परेशान हुई। उसने दावे की दोनों जांघों के बीच हाथ डालकर कुछ टटोलने की कोशिश की। वहां जो कुछ उसने देखा, वह अत्यन्त निराशाजनक और परेशान कर देने वाला था।

मेरीलन का साहस जवाब दे गया। शरीर ठंडा पड़ गया। वह अब भी दावे के आलिंगन-पाश में बंधी हुई थी। उसने एक बार फिर अपने पति को अपने शरीर के साथ कसकर चिपटाने की चेष्टा की। वह उसके हृदय की धड़कनों को साफ-साफ सुन रही थी।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दावे ने बताया, "मुझे दुःख है। मैं लाख चेष्टा करके भी अपने उत्थान को बनाये रखने में असमर्थ हूं।"

मेरीलिन ने जैसे-तैसे अपनी बिखरी हुई उमंगों को एकत्रित करने का यत्न किया। अपनी कोमल अंगुलियों से दावे के घुंघराले केशों को थपथपाया। उसके गाल को अपने मुक्त वक्षस्थल पर रखकर प्रेम से दबाया। फिर धीरे से बोली, "तुम कोई चिन्ता न करो दावे! सब ठीक हो जाएगा।"

कुछ देर तक वे दोनों इसी स्थिति में रहे। मेरीलिन ने जिस कामवासना को जबरदस्ती दबा लिया था, अब वह बलवती होकर सारे शरीर को मरोड़ती हुई नस-नस में व्याप्त हो गई।

अब दावे की सांस पहले की भांति तेजी से नहीं चल रही थी। उसकी उत्तेजना भी लगभग मिट चुकी थी। उसका अंग-प्रत्यंग शिथिल हो गया था, क्योंकि उसे नींद आ गई थी।

परन्तु मेरीलिन की आंखों से नींद कोसों दूर थी। वह सूनी आंखों से छत की ओर देखे जा रही थी। धीरे-धीरे सूनेपन का स्थान आंसुओं ने ले लिया जो अब ढुलक-ढुलक कर उसके कपोलों पर बह रहे थे; और वहां से गिरकर तकिये को भिगोये जा रहे थे। मन उड़कर न जाने कहां-कहां जा रहा था जबकि शरीर अब भी दावे की भुजाओं में लिपटा पड़ा था।

अपने विवाह के एक वर्ष पश्चात् दावे मुझसे सलाह लेने के लिए आया। इस अवधि में उसकी शीघ्र-स्खलन की शिकायत यथावत् बनी हुई थी। उधर मेरीलिन का जीवन भी उसी प्रकार अनबुझी प्यास, चिन्ता, निराशा की भंवर में हिलोरें मार रहा था। जब वह मेरे पास आया तो मैंने पूछा, "क्या आपको ऐसा प्रतीत नहीं होता कि आपकी समस्या असाधारण है?"

"जी हां, डाक्टर हान्सेन ने भी···।"

"डाक्टर हान्सेन ने आपकी क्या सहायता की?"

"उन्होंने खाने के लिए मुझे कुछ गोलियां दी थीं।"

"क्या उनसे कोई फायदा हुआ?"

"जी नहीं, कोई फायदा नहीं हुआ। उन गोलियों को खाने के पश्चात् नींद आने लगती थी। बस इतना ही होता था। उनके खाने से शिश्न में उत्थान आ जाता, या वह अधिक देर तक बना रहता; ऐसी कोई बात नहीं हुई।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"और कोई विशेष बात ?"

इसके अतिरिक्त उन्होंने शिश्न मुण्ड पर लगाने के लिए एक प्रकार का मरहम भी दिया था; परन्तु उससे भी कोई लाभ नहीं हुआ।

दावे ने जिस मरहम की चर्चा की थी, उसके विषय में मुझे सब कुछ मालूम है। उससे त्वचा की संवेदन शक्ति कम हो जाती है, कुछ डाक्टर शीघ्र-स्खलन को रोकने के लिए यह मरहम रोगियों को दिया करते हैं। इस मरहम से लगभग 75 प्रतिशत रोगियों की रुकावट बढ़ जाती है परन्तु शेष रोगियों को इससे कोई लाभ नहीं पहुंचता।*

"मरहम और गोलियों के अतिरिक्त और भी कुछ आपको दिया गया ?"

"जी नहीं। डाक्टर हान्सेन ने कहा कि साधारणतया मैं बिल्कुल ठीक हूं। फिर भी उन्होंने मुझे सलाह दी है कि मैं आपसे मिल लूं।"

दावे के बारे में डाक्टर हान्सेन ने जो कुछ कहा था वह बिल्कुल ठीक था, क्योंकि आधुनिक गवेषणाओं से यह सिद्ध हो चुका है कि नब्बे प्रतिशत शीघ्र-स्खलन केवल मानसिक विकारों के फलस्वरूप होता है। इन विकारों के प्रमुख अंग हैं—चिन्ता, डर, अज्ञान, आत्म-विश्वास की कमी आदि।

दावे का अनुमान था कि शीघ्र-स्खलन पीढ़ियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाला रोग है। मैंने उसे समझाया कि "इस रोग से मुक्ति पाने के लिए कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए। यह बताइए कि आपके मन में यह भावना कब और कैसे पैदा हुई !"

"यह भावना मेरी पत्नी मेरीलिन के प्रयासों से उत्पन्न हुई है। जब उसने देखा कि मैं इस विषय में कुछ नहीं कर रहा हूं तो वह किसी पुस्तकालय में जाकर विवाह एवं काम से सम्बन्धित पुस्तक ले आई और मुझसे आग्रह किया कि मैं इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ूं।"

---

* ये मरहम भारत में भी मिलते हैं। इसकी जानकारी और प्रयोग विधि के लिए देखिए डाक्टर कालीचरन की पुस्तक **मेडीकल सैक्स गाइड** मूल्य 10 रुपये, प्रकाशक—वर्ल्ड बुक कम्पनी 301-चावड़ी बाजार, (कूचा मीर आशिक) दिल्ली-110006

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"विवाह और काम से सम्बन्धित पुस्तक ?"

"जी हां ! और उसको पढ़ने से मुझे कुछ लाभ भी हुआ। उस पुस्तक को पढ़ने से मुझे स्त्रियों के विषय में अनेक नई-नई बातें मालूम हुईं। यह पुस्तक पढ़ने से पहले मैं यही समझता था कि सम्भोग-क्रिया में मेरीलिन को भी उतना ही आनन्द आता होगा जितना कि मुझे आता है। परन्तु इस पुस्तक का अध्ययन करने से मुझे मालूम हुआ कि मेरीलिन की वासना वास्तव में अतृप्त ही रह जाती है। वह पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं होती।"

यह स्थिति केवल दावे की ही नहीं है। ऐसे लाखों करोड़ों व्यक्ति हैं जो अज्ञान में पड़े हुए हैं। बहुत से पति ऐसे हैं जो अपनी अर्द्धांगिनियों की करुण दशा से अपरिचित रहते हैं। अपने वीर्य के स्खलन से उन्हें जो आनन्द प्राप्त होता है, वे उसी में मस्त रहते हैं और अपने मन में यह मान लेते हैं कि उनकी पत्नी को भी इतना आनन्द और चरमसुख प्राप्त होता है जबकि वे वास्तव में अतृप्त रहकर तड़पती रह जाती हैं।

मेरीलिन की इस बुद्धिमत्ता की सराहना करनी चाहिए कि उसने दावे को किसी मनोचिकित्सक से सलाह लेने का परामर्श दिया। यदि वह ऐसा न करती तो वह जीवन भर अतृप्त रहकर दुःख उठाती रहती। इतना ही नहीं वह अपने पति के साथ कभी सम्भोग न करने की सौगंध भी खा लेती।

मैंने दावे से पूछा—"क्या ऐसा कभी हुआ है कि आपका शिश्न सम्पूर्ण रूप से आपकी पत्नी की योनि में गया हो और आपने वह संभोग भली-भांति पूरा किया हो ?"

इस पर दावे ने बताया—"दो-तीन बार ऐसा हुआ था। परन्तु सम्भोग पूरा कभी नहीं हुआ। प्रत्येक बार वह शिथिल होकर जल्दी स्खलित हो जाता है।"

"ज्यादा से ज्यादा आप कितनी देर तक बिना स्खलित हुए ही रह सके हैं ?"

"लगभग आधा मिनट।" उसने लजाते हुए उत्तर दिया। फिर थोड़ी देर मौन रहने के पश्चात् उसने पूछा, "क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं ?"

"अवश्य कर सकता हूं। शर्त यह है कि इस विषय में आपको भी चेष्टा करनी होगी।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

यह कहकर जब मैंने उसकी ओर ध्यान से देखा तो मुझे प्रतीत हुआ कि वह मेरी बात समझ नहीं पाया।

मैंने बताया—"मैं रोगी को औषधि नहीं देता। न गोलियां खिलाता हूं और न मरहम लगाने की सलाह देता हूं। इसका कारण यह है कि मैं कोई चिकित्सक नहीं, मनोवैज्ञानिक हूं। यदि आप इस दुर्बलता से मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो आप मेरी सलाह के अनुसार कार्य करें। आप अवश्य स्वस्थ हो जाएंगे।"

"यदि आप मुझे स्वस्थ कर सकते हैं तो मैं अवश्य आपके आदेश का पालन करूंगा।" उसने मुस्कराकर कहा।

शीघ्र-स्खलन से बचने के लिए आवश्यक है कि निम्नलिखित तीन बातों पर अमल किया जाए।

1. मनोचिकित्सा,
2. सैक्स-सम्बन्धी वैज्ञानिक साहित्य का अध्ययन और
3. काम-कला की व्यवहारिक जानकारी व उसका समुचित अभ्यास।

यह लाभदायक होगा कि विवाह के प्रारम्भिक दिनों में किसी सुयोग्य मनोचिकित्सक से परामर्श लेकर उसके आदेशानुसार अमल किया जाए। ऐसा न करने पर पुरुष स्थायी रूप से यौन दुर्बलता का शिकार बन सकता है। इतना ही नहीं, पत्नी के साथ उसके यौन-सम्बन्ध इतने बिगड़ सकते हैं कि फिर उनका सुधारना कठिन हो सकता है।

शीघ्र-स्खलन से छुटकारा पाने के लिए दो बातों को ध्यान में रखना चाहिए। एक तो यह कि पत्नी को चरम सुख की प्राप्ति अपने आप से पहले हो। दूसरे यह कि भावनात्मक दृष्टि से मन को अपने नियन्त्रण में रखकर सम्भोग की अवधि को अधिक-से-अधिक बढ़ाने का भी प्रयत्न किया जाए।

परन्तु ये दोनों बातें सोचने मात्र से नहीं हो सकतीं। इनके लिए उपाय करने होंगे। पहली बात, अर्थात् पत्नी को चरम सुख देने के लिए आवश्यक है कि रति-क्रिया आरम्भ करने से पूर्व उसकी कामवासना को इतना बढ़ा दिया जाए कि वह काम-विह्वल हो जाए। यह स्थिति तभी पैदा हो सकती है जबकि स्त्री अपने पति से खूब प्रेम करे और उससे प्रेम का प्रतिपादन चाहे तथा उसकी प्रणय-क्रीड़ाओं को उत्साह के साथ स्वीकार करे। यह स्थिति उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

करने के लिए पति को किसी प्रकार की जल्दी नहीं करनी चाहिए। सम्भोग की ओर उसे धीरे-धीरे कदम बढ़ाना चाहिए। सिर पर लदा हुआ बोझा समझ कर एकदम मैथुन आरम्भ नहीं कर देना चाहिए। उसे चाहिए कि वह बार-बार प्रेम दर्शाते हुए स्त्री का आलिंगन और चुम्बन करे, विभिन्न अंगों को थपथपाये, उरोजों को सहलाए व मसले, गुप्त अंगों का बार-बार स्पर्श करे। यह सब यन्त्रवत् न करके इस प्रकार करे कि उसकी वासना जाग्रत हो जाये, वह कामातुर हो जाये। आवेश के साथ होठों, गालों, स्तनों और नाभि के आस-पास के भागों को चूमे, बीच-बीच में उन पर दांत भी गढ़ा दे। भगोष्ठ और शिश्निका को धीरे-धीरे सहलाने से भी स्त्री जल्दी ही कामोत्तेजित हो जाती है।

इस प्रकार जब स्त्री काम-विह्वल हो जाये और उसकी योनि के अन्दर से स्राव निकलने लगे जिससे योनि चिकनी और गीली हो जाये तब ही मैथुन आरम्भ करना चाहिए।

जिन दो उपायों की हमने ऊपर चर्चा की है, उनमें यह पहला उपाय है, किन्तु यही काफी नहीं है। अगर पुरुष अपने मन पर नियन्त्रण नहीं रखता तो इस दशा में भी वह शीघ्र-स्खलित हो सकता है। मन को नियन्त्रण में रखना बहुत जरूरी है और उसके लिए प्रशिक्षण व अभ्यास दोनों ही अनिवार्य हैं।

यहां मन पर नियन्त्रण रखने की जो बात कही गई है उसको विस्तार से समझना जरूरी है। शीघ्रपतन के रोगी को सम्भोग क्रिया में जल्दबाजी से बचना चाहिए। ये रोगी प्रायः मन ही मन डरते रहते हैं कि यदि उन्होंने जल्दी से शिश्न को योनि में डालकर घर्षण करना आरम्भ न कर दिया तो कहीं वे योनि के बाहर ही स्खलित न हो जाएं। यहीं पर आकर ये लोग गलती कर जाते हैं। शीघ्रता से घर्षण आरम्भ कर देने से ये शीघ्र ही स्खलित भी हो जाते हैं।

इन रोगियों को मन पर नियन्त्रण करना सीखने के लिए आगे लिखा कार्यक्रम अपनाना चाहिए। पहली बात यह कि प्रारम्भ में इन लोगों को प्रचलित आसन जिसमें स्त्री नीचे होती है और पति ऊपर से आकर सम्भोग करता है, प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें पुरुष को बहुत अधिक उत्तेजना मिलती है जिससे वह जल्दी स्खलित हो जाता है। इनके लिए सबसे अच्छा आसन वह है जिसमें स्त्री और पुरुष एक दूसरे की ओर मुंह करके करवट के बल लेट जाते

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

हैं। अब पुरुष हाथों से सहलाकर, चुम्बन आदि क्रियाओं से पत्नी को उत्तेजित करता रहता है।

नारी के तैयार हो जाने पर शिश्न को योनि के मुख पर रख दिया जाता है और घर्षण आरम्भ नहीं किए जाते बल्कि दो-तीन मिनट यों ही शिश्न को योनि के ऊपर ही रहने देकर अपने शरीर को ढीला छोड़कर पति विश्राम करता है तथा स्वाभाविक रूप से गहरे-गहरे सांस लेता रहता है। ऐसा करने से उसके शरीर में भरी हुई कामोत्तेजना कुछ मंद पड़ जाती है, शिश्न में जो असाधारण स्पन्दन हो रहा था वह कम हो जाता है और शरीर में ताजगी-सी मालूम पड़ने लगती है। अब पुरुष अपने पर नियन्त्रण रखते हुए शिश्न का थोड़ा-सा भाग, केवल शिश्न-मुण्ड ही, योनि के अन्दर प्रविष्ट कर देता है। अब फिर दो-तीन मिनट विश्राम करते हुए गहरे-गहरे सांस लेता है। जब वह देखता है कि स्थिति उसके नियन्त्रण में है तो शिश्न थोड़ा और अन्दर को कर देता है तथा फिर दो-तीन मिनट विश्राम करता है। यदि इस दौरान में उसे ऐसा प्रतीत हो कि वह बहुत अधिक उत्तेजित होने लगा है तथा यदि उसने शारीरिक चेष्टा बन्द नहीं की तो वह स्खलित हो जाएगा तो उसे तुरन्त ही शिश्न को बाहर निकाल कर केवल योनि के मुख पर शिश्न मुण्ड टिका कर पहले की तरह गहरे-गहरे सांस लेने चाहिए। इस प्रकार वह रुक-रुककर काफी देर तक मैथुन का आनन्द उठा सकता है।

कुछ ही देर में पत्नी पूर्णतः कामोत्तेजित हो जाती है और अपनी चेष्टाओं एवं क्रिया-कलापों से स्पष्ट कर देती है कि अब पुरुष को कुछ और प्रगति करनी चाहिए। इस समय पुरुष को तो केवल यही करना है कि वह पत्नी को अपने आलिंगन में कस ले और शिश्न को अधिक-से-अधिक अन्दर प्रविष्ट कर दे परन्तु उसे योनि की दीवारों से रगड़ने का प्रयत्न कदापि न करे। जब स्त्री को चरम सुख की अनुभूति होने लगे, तभी वह सक्रिय होकर स्त्री का चुम्बन, सुदृढ़ आलिंगन, शिश्न द्वारा योनि घर्षण आदि काम-क्रीड़ा का क्रम आरम्भ करे। इसमें स्त्री को ही नहीं पुरुष को भी परम आनन्द प्राप्त होगा।

शीघ्रस्खलन के भयानक रोग से मुक्ति पाने के ये उपाय बहुत सीधे और सरल हैं। फिर स्त्री की कासवासना को धीरे-धीरे जगाने तथा शीघ्रस्खलन को रोकने के लिए बड़े धैर्य और दीर्घकालीन अभ्यास की आवश्यकता होती है। जब

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डा० कालीचरन प्रस्तुत करते हैं

सैक्स ऐफीशियंसी ट्रेनिंग कोर्स

कमजोरी, शीघ्रपतन और नपुंसकता में ग्रस्त पुरुषों को नवयौवन और पूर्ण पुंसत्वशक्ति देने वाला एकमात्र चिकित्सा वैज्ञानिक कोर्स।

इस कोर्स में किसी दवा की सिफारिश नहीं की गई है बल्कि वे वैज्ञानिक और प्राकृतिक उपाय बताये हैं जिनके द्वारा पुरुष अपनी सैक्स पावर बढ़ा सकते हैं। इस कोर्स में स्त्री और पुरुषों के जनन अंगों को सबल बनाने के लिए कई प्रकार के सरल घरेलू व्यायाम भी बताये हैं। जो पुरुष अपने छोटे शिश्न के कारण हीनता की भावना से ग्रस्त हैं उनके शिश्न के आकार में विकास करने के लिए कुछ प्राकृतिक उपाय बताये हैं। इसके अतिरिक्त काम-कला से अनभिज्ञ नवविवाहितों को प्रेम करने की कला बड़ी अच्छी तरह समझाने के साथ-साथ कई प्रकार के आसनों में सही ढंग से संभोग करने की ट्रेनिंग भी दी है और 'रुकावट' उचित सीमा तक बढ़ाने के गोपनीय नुक्ते भी बताये हैं ताकि ये पुरुष और इनकी पत्नियां विवाहित जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त कर सकें। आसनों के चित्र भी दिए हैं ताकि इन्हें समझने में कठिनाई न हो।

यह पूर्णत: प्राइवेट कोर्स केवल विवाहित रोगियों का प्रार्थना-पत्र तथा साथ में 20 रुपये फीस मिलने पर रजिस्टर्ड डाक से भेजा जाता है। यह कोर्स वी० पी० से नहीं भेजा जाता और न कोई बुकसेलर इसे बेच सकता है।

वर्ल्ड बुक कम्पनी ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय ग्राहक हमारे सेल्स आफिस 4531, दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-6 पर आकर कोर्स ले सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

तक पुरुष अपने मन पर नियन्त्रण रखने की क्षमता प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह कदापि सफल नहीं हो सकता। परन्तु यह कार्य असम्भव नहीं है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पति के स्खलित को जाने पर भी स्त्री को चरम सुख प्राप्त नहीं होता। ऐसी दशा में पुरुष को चाहिए कि वह कुछ देर तक सुस्ताए और लाड़-प्यार के द्वारा पुनः अपने अन्दर उत्तेजना जाग्रत करने का प्रयास करे। यद्यपि चरम सुख न मिलने से स्त्री को दुःख होता है, किन्तु उसे चाहिए कि वह अपने दुःख को भूलकर काम-क्रीड़ा द्वारा पति की उत्तेजना को जाग्रत होने में सहायता दे। ऐसा करने से पुरुष के शिश्न में पुनः उत्थान आ जाएगा। जब उत्थान आ जाए तो पुरुष को चाहिए कि वह स्त्री की वासना को पुनः जाग्रत करके उसे कामोत्तेजित बना दे। इस प्रकार जब वह कामोत्तेजित हो जाये तो ऊपर बताई गई विधि से अर्थात् बीच-बीच में विश्राम करते हुए और गहरे सांस लेकर अपने रक्त को बार-बार ताजा बनाते हुए सम्भोग करना चाहिए।

इस उपाय को अपनाने से यह निश्चित है कि पुरुष काफी देर में स्खलित होगा। अधिक समय तक रति-क्रिया चलने से स्त्री को भी अधिक आनन्द मिलेगा।

यदि दुबारा प्रयत्न करने पर भी पुरुष जल्दी स्खलित हो जाता है तो उसे कुछ देर तक आराम करने के पश्चात् फिर स्वयं को कामोत्तेजित करके उसी प्रकार प्रणय-क्रीड़ा का आरम्भ करना चाहिए जिस प्रकार दूसरी बार के विषय में लिखा गया है। इस बार उत्थान होने के पश्चात् जब वह सम्भोग प्रारम्भ करेगा तो उसका उत्थान अवश्य ही अधिक समय तक बना रहेगा क्योंकि इस बार काम तरंगें पहली-दूसरी बार की भांति प्रबल न होंगी।

कुछ लोगों को यह भ्रम है कि यदि एक ही रात्रि में दो या तीन बार सम्भोग किया जाए तो इससे हानि हो सकती है। उनकी मान्यता है कि अनेक बार संभोग करने से स्त्री-पुरुष दोनों ही बहुत थक जाते हैं और यह थकावट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। वस्तुस्थिति इससे सर्वथा विपरीत है। यदि स्त्री को चरम सुख और पुरुष को तृप्तिदायक आनन्द प्राप्त हो जाए तो शरीर में एक अद्‌भुत फुर्ती पैदा हो जाती है। घुड़सवारी, गोल्फ, तैराकी आदि के व्यायामों से जो थकावट होती है, उसकी अपेक्षा सम्भोग से बहुत कम थकावट होती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अदल-बदलकर आसनों में किया जाने वाला सम्भोग भी स्त्री के लिए विशेष आनन्ददायक होता है। उदाहरण के लिए हम विपरीत रति के आसन को ही ले लें। इस आसन में पति नीचे और पत्नी ऊपर रहती है। यह वह आसन है, जिसमें स्त्री पुरुष की अपेक्षा अधिक सक्रिय रहती है। वह अपनी शिश्निका और भगोष्ठों को शिश्न मुण्ड पर बार-बार रगड़ कर बहुत उत्तेजना प्राप्त करती है—जिससे उसे अद्‌भुत आनन्द मिलता है। इस आसन में पुरुष निश्चेष्ट रहता है इसलिए वह जल्दी स्खलित नहीं होता। विपरीत रति में ज्यों ही स्त्री को चरम सुख प्राप्त हो जाये तभी आसन बदल कर पुरुष को ऊपर आ जाना चाहिए और स्त्री को नीचे कर लेना चाहिए। इस स्थिति में आकर पुरुष को चाहिए कि वह स्वयं में अधिक उत्तेजना पैदा करके स्खलित होने की चेष्टा करे।

ये तो बाह्य और छोटी-छोटी चीजें हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण है इच्छा-शक्ति। इच्छाशक्ति के द्वारा मन पर निरन्तर नियंत्रण करते रहने का अभ्यास करना चाहिए। इच्छाशक्ति से भी अधिक महत्वपूर्ण है स्त्री-पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध। यदि ये सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण न हों तो सारे प्रयत्न बेकार हो जाते हैं।

उपरोक्त उदाहरण में दावे एक समझदार भला पुरुष था। वह हर प्रकार से अपनी पत्नी को संतुष्ट और सुखी रखना चाहता था। उसकी पत्नी मेरीलिन भी अपने पति की कभी भर्त्सना नहीं करती थी, बल्कि उसे सदा प्रोत्साहन ही देती रहती थी। यही कारण है कि दोनों की मिली-जुली कोशिशों से दावे की यौन दुर्बलता दूर हो गई। इसके पश्चात् उनके संतानें भी उत्पन्न हुईं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 3

विवाहित पुरुषों में नपुंसकता

कुछ दिन पूर्व की बात है। एक प्रौढ़ व्यक्ति पर एक साथ दो मुकद्दमे चले। एक मुकद्दमा उसकी पत्नी ने दायर किया था, दूसरा उसकी नौकरानी ने। पत्नी का अभियोग था कि वह नपुंसक है, नौकरानी का दावा था कि वह उस प्रौढ़ पुरुष की संतान की मां बनने वाली है। सबसे मजे की बात यह है कि वह दोनों मुकद्दमे हार गया। एक न्यायालय ने यह स्वीकार किया कि वह नपुंसक है और दूसरे ने यह कि वह सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। इससे एक बात स्पष्ट होती है कि जो पुरुष अपनी पत्नी के लिए नपुंसक हो सकता है, वही दूसरी स्त्री के लिए पूर्ण पौरुष सम्पन्न भी।

आजकल वैवाहिक नपुंसकता का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है, विशेषतः ऐसे प्रौढ़ पुरुषों के लिए जिनके विवाह को अनेक वर्ष बीत चुके हों। वैसे तो यह स्थिति प्रायः अस्थायी होती है, किन्तु इसका स्थायी बन जाना भी असम्भव नहीं है।

वैवाहिक नपुंसकता अनेक प्रकार की होती है और इसके रूप अनेक होते हैं। चाहें वैवाहिक नपुंसकता कैसी भी और किसी रूप में हो, वह दाम्पत्य-जीवन के लिए हानिकरक होती है। केवल चतुर और प्रभावशाली स्त्री ही इस कठिन परिस्थिति से मुक्ति दिला सकती है, पुरुष का भी इस कार्य में उसे सहयोग मिलना जरूरी है।

नपुंसकता के शिकार हुए पति को अपनी पत्नी के प्रति पूरी निष्ठा रखनी चाहिए। उसे चाहिए कि वह अपनी पत्नी से विरक्त होकर किसी अन्य स्त्री से सम्भोग करके पौरुष की परीक्षा न करे। इससे वह ऐसी हानि उठा सकता है जिसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो सकती।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

यहां हम पैरी नामक एक व्यक्ति का मामला लेते हैं। जब उसका विवाह थेरेसा के साथ हुआ तो उन दोनों के कुछ वर्ष बडे आनन्द में कटे। उन दोनों की संभोग क्रिया बड़े मजे में चलती रही। परन्तु चालीस वर्ष की आयु पार करते करते पैरी में यौन-दुर्बलता आ गई। उसके शिश्न में उत्थान आना बन्द हो गया। तात्पर्य यह है कि उसमें नपुंसकता आ गई।

परन्तु पति की नपुंसकता से थेरेसा निराश नहीं हुई। उसे दृढ़ विश्वास था कि पैरी अवश्य किसी दिन अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कर सकेगा। परन्तु पैरी की हिम्मत टूट चुकी थी। उसने यौन-सम्बन्धों से निराश होकर अपना मन दूसरे कामों में लगा दिया। पुंसत्वहीन होकर भी वह अपनी पत्नी और बच्चों से पहले की ही भांति प्रेम करता रहा।

काम-विशेषज्ञों का मत है कि यदि इस प्रकार के पुरुष अन्य स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित कर लें तो ऐसा करना उसके लिए लाभदायक हो सकता है। यदि वह स्त्री पति और संतान-विहीन हो तब तो बहुत ही अच्छा। ऐसे कार्यों के लिए विधवा या तलाकशुदा के अतिरिक्त वैश्या भी उपयोगी हो सकती है। यदि किसी पूर्ण नपुंसक पुरुष को या प्रवास में रहने वाले व्यक्ति को सुन्दर युवती मिल जाए तो बहुत शीघ्र लाभ हो सकता है। इसमें एक ही बाधा है कि समाज ऐसे सम्बन्ध को उचित नहीं मानता।

हमारे सामने एक दूसरा उदाहरण विलियम का है जो अपनी पत्नी कैवरिन से दूसरा बच्चा उत्पन्न करने के बाद हीं नपुंसक हो गया। उसका शिश्न तो दुर्बल और शक्ति हीन हो गया था, परन्तु उसके मन की उमंग नहीं मरी थी। अतएवः वह एक वैश्या के पास नियमित रूप से जाने लगा। उसके इस कृत्य से परिचित होते हुए भी उसकी पत्नी ने कभी कोई आपत्ति नहीं की।

कुछ पत्नियां बड़ी सरल-हृदया होती हैं। वे इस बात पर विश्वास ही नहीं कर पातीं कि जो पुरुष उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाता वह अन्य स्त्रियों को संतुष्ट कर लेता होगा। जब कोई ऐसी घटना उनके सामने आ जाती है तो वे चकित रह जाती हैं।

ऐसी ही एक घटना श्रीमती जिनेट के साथ बीती। ज्योंहि उन्हें मालूम हुआ कि उनका नपुंसक पति क्लार्क एक तलाक-सम्बन्धी मामले में फंस गया है तो वे इस बात पर विश्वास ही नहीं कर सकीं। परन्तु उस समय वे स्तब्ध रह गईं जब

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

क्लार्क ने न्यायालय में स्वीकार किया कि उस स्त्री के साथ उसका अवैध सम्बन्ध कई महीनों से चल रहा है।

कुछ मामले ऐसे भी हैं जिनमें इससे बिल्कुल उल्टी बात होती है। नपुंसक पति जब अपनी पत्नी की उपासना में ही लगे रहते हैं, तब संभोग सुख की खोज में निराश पत्नियां अन्य पुरुषों की सेजों की शोभा बढ़ाती हैं।

इस संदर्भ में क्लैरिस का उदाहरण ले सकते हैं। जब आइवान के साथ उसका विवाह हुआ इससे पूर्व ही वह अनेक पुरुषों के साथ रास-लीला रचा चुकी थी। कुछ समय तक तो आइवान उसे मैथुन-सुख देता रहा, परन्तु अचानक एक दिन उसे अनुभव हुआ कि वह दुर्बलताग्रस्त हो गया है और उसमें संभोग करने की क्षमता नहीं रह गई है। आइवान से निराश होकर क्लैरिस दूसरे पुरुषों को अपनाने लगी। उनके साथ खुलकर रंगरेलियां मनाने लगी। आइवान देखता और तरह दे जाता। इतना होने पर भी क्लैरिस के प्रति उसके मन में प्रेम वैसा ही बना रहा।

ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है, जिनमें पत्नियां उच्छृंखल हो जाती हैं और पति उनकी उच्छृंखलता को अनदेखी कर जाते हैं। ऐसी पत्नियों के लिए तलाक देना साधारण बात है और उससे भी साधारण है अन्य पुरुषों से अवैध अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करना।

गे दम्पति की कहानी भी लगभग ऐसी ही है। श्री गे अपनी पत्नी की दृष्टि में बिल्कुल नपुंसक हैं। परन्तु मजे की बात यह है कि अन्य स्त्रियों को वे केवल संतुष्ट ही नहीं कर देते बल्कि उन्हें ऐसा चरम सुख प्रदान कर देते हैं जो बहुत से पुरुष नहीं दे पाते। इसी प्रकार गे की पत्नी गे के लिए शुष्क, ठंडी व नीरस प्रतीत होती है, परन्तु दूसरे पुरुषों को वे अपनी प्रणय क्रीड़ाओं से इतना दीवाना बना देती है कि वे उसके साथ सम्भोग करने का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहते। इस प्रकार गे दम्पति अन्य स्त्रियों और पुरुषों को समय-समय पर पूर्ण आनन्द प्रदान करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि दोनों ही अपने आपमें पूर्णता लिए हुए हैं। दोनों ही अनैतिक व्यापार में पूर्ण रूप से कुशल हैं। उनके पारस्परिक काम-व्यवहार को छोड़कर दोनों के आपसी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण हैं। उनका पारिवारिक जीवन भी सुखी है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रश्न उठ सकता है कि विवाहित पुरुष में दुर्बलता क्यों आ जाती है। सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक डाक्टर कार्ल मैनिजर के मतानुसार पुरुष में दुर्बलता आने के अनेक कारण हैं। इन कारणों को मोटे तौर से चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

1. कामकला और उसकी तकनीक का ज्ञान न होना,
2. नाना प्रकार के भय से पीड़ित होना,
3. गलत व्यक्तित्व, और
4. ढलती आयु के फलस्वरूप तंत्रिका संस्थान तथा मन की दुर्बलता।

सर्वेक्षण से पता चलता है कि मध्यम वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग के लोगों में शीघ्रपतन की घटनाएं अधिक होती हैं। डाक्टर किन्से का कहना है कि निम्न वर्ग कि स्त्रियां बहुत कम चरम सुख प्राप्त कर पाती हैं। इसका कारण यह है कि ऐसे लोग दिन भर कठोर परिश्रम के कारण रात्रि को जल्दी सो जाना चाहते हैं। इसलिए वे जल्दी-जल्दी संभोग करके सोने के लिए उतावले रहते हैं। उनके पास इतना धैर्य नहीं रहता कि वे स्त्री को उत्तेजित करके फिर मैथुन में प्रवृत्त करें इसके विपरीत मध्यम वर्ग के लोग काम-तकनीक से परिचित होते हैं और संभोग का पूर्ण आनन्द उठाने की क्षमता रखते हैं। ऐसे पतियों की पत्नियों को अधिक-से-अधिक संभोग सुख प्राप्त होता है। इसका एक कारण यह भी है कि ऐसे पुरुषों को स्त्री के गुप्त अंगों की रचना और क्रिया प्रणाली की आवश्यक जानकारी रहती है। वे यह भी जानते हैं कि स्त्री को किस प्रकार उत्तेजित और संतुष्ट किया जाता है।

आयु ढलने के साथ-साथ कामेच्छा धीरे-धीरे कम होती चली जाती है; परन्तु जब यह ह्रास तेजी से होने लगे अथवा कामवासना एकदम कुंठित हो जाये तो समझ लेना चाहिए कि स्थिति खतरनाक है। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से पहले ही सतर्क हो जाना चाहिए और अपने मन पर नियन्त्रण करके ऐसी स्थिति को उत्पन्न नहीं होने देना चाहिए।

सैक्स सम्बन्धी दुर्बलता या नपुंसकता औषधि से दूर नहीं की जा सकती। केवल मनोचिकित्सक ही इसका इलाज कर सकता है। इसका कारण यह है कि वैवाहिक नपुंसकता के मूल में शारीरिक दोष नहीं, मानसिक दुर्बलता होती है। इस दुर्बलता को दूर करने के लिए मनोचिकित्सक का पथ-प्रदर्शन और पत्नी का हार्दिक सहयोग आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

ऐसे नपुंसक पति की पत्नी अपने विवेक और समझदारी से अपने पति की नपुंसकता को दूर कर सकती है। चाहे सेज पर हो, चाहे सेज के बाहर, उसे कभी अपने पति का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। उसे अपने व्यवहार में कभी रूखापन नहीं आने देना चाहिए और न घर-गृहस्थी या बच्चों के सवाल को उठाकर अपने पति को बुरा-भला ही कहना चाहिए। सोते समय तो ऐसी बातों की चर्चा भी नहीं करनी चाहिए। इससे पति का दिल टूट जाता है, कामवासना जागने वाली हो तो भी नहीं जागती। इसके विपरीत पत्नी को चाहिए कि साज-शृंगार द्वारा अपने दाम्पत्य जीवन में निरन्तर नवीनता का संचार करने का यत्न करती रहे। यदि वह आवश्यकता से अधिक मोटी या पतली हो तो उसे और भी अधिक सावधान रहना चाहिए। चिड़चिड़ापन और भी हानिकारक है। यह पति के मन की बची-खुची वासना को भी समाप्त कर देता है। यह भी हो सकता है कि वह घर के वातावरण से निराश होकर दूसरी स्त्रियों के द्वार खटखटाने के लिए उत्सुक हो जाए।

आइये, जरा मार्क के दाम्पत्य-जीवन का विश्लेषण करें। वह इस समय डाक्टर जेकब्सन के क्लिनिक के स्वागत कक्ष में बैठा है। उसका व्यक्तित्व ही आकर्षक नहीं है, वह स्वयं भी अच्छा व्यवसायी और समाज का प्रतिष्ठित सदस्य है। उसकी आयु अड़तालीस वर्ष होते हुए भी कोई उसे देखकर नहीं कह सकता कि उसकी आयु इतनी अधिक होगी। शरीर से हृष्ट-पुष्ट, कमर कुछ मोटी परन्तु तोंद निकली हुई नहीं, चेहरे पर झुर्रियों का नाम भी नहीं, सेव जैसे कपोल, नाक-नक्श से दुरुस्त, देखने में युवा प्रतीत होने वाला, यह है मार्क के चेहरे-मोहरे का आकर्षक नक्शा। इस समय वह बढ़िया सूट-बूट पहने ऐसा लगता है जैसे किसी कालेज का चुस्त विद्यार्थी हो। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता कि वह प्रौढ़ गम्भीर व्यक्ति है।

इसी समय स्वागत कक्ष में एक लम्बे डील-डौल की नर्स ने प्रवेश किया और मुस्कराकर मार्क से बोली, "आइए, अन्दर आ जाइए।"

"धन्यवाद मैवेल ?" कह कर मार्क मुस्करा दिया।

मैवेल और मार्क का प्रथम परिचय लगभग तीस वर्ष पूर्व हुआ था। जब इन दोनों ने मिल कर एक विद्यालय की स्थापना की थी। मार्क वहां से उठ कर डाक्टर के कमरे में चला गया।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मार्क को देखकर डाक्टर ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा, "आज अकस्मात कैसे निकल आए इधर। कहां रहे इन दिनों ? अच्छे तो हो ?"

हाथ मिलाते हुए मार्क ने कहा, "हां कुछ दिन से आ नहीं सका। आप तो ठीक हैं न ?"

"कुछ दिन नहीं आ सके या कुछ साल ? पूरे तीन साल पहले तुम इसी मार्च के महीने में आए थे। परन्तु तुम में तो काफी परिवर्तन आ गया दीखता है ? अब तो ईश्वर की कृपा से कुछ शरीर भी भर गया है। किन्तु सिर के बाल गायब हो गये दीखते हैं।"

मार्क ने अपने अधगंजे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "आपकी नजर बहुत तेज है डाक्टर ! लेकिन अभी बाल मौजूद हैं। हां हड्डियों पर कुछ मांस जरूर चढ़ गया है।"

तभी मार्क की दृष्टि डाक्टर के घने बालों पर जाकर जम गई। वह बोला, "डाक्टर ! आप बड़े भाग्यवान हैं !"

डाक्टर ने मुस्कराकर कहा, "भाग्यवान मैं हूं या आप ? आजकल तो गंजे आदमी को भाग्यवान कहा जाता है। जिसके सिर पर घने बाल होते हैं उसके पास पद, पौरुष, प्रेम कुछ भी तो नहीं होता।"

"आपको बनाना खूब आता है ?"

"मैं आपको बना नहीं रहा, सच कह रहा हूं। गंजे सिर वाले लोगों के पीछे लड़कियां पागल हुई दौड़ती हैं। दूर क्यों जाते हो, अपने आपको ही देख लो।" फिर विषय बदलते हुए डाक्टर जैकब्सन ने कहा, "अच्छा, यह बताओ कैसे आये ?"

"क्या बताऊं ? मैं नपुंसक हो गया हूं।" मार्क ने बताया।

"नपुंसक हो गये हो !" डाक्टर की वाणी में आश्चर्य था।

"हां, डाक्टर !"

"कब से ?"

"यही समझ लीजिए, लगभग पांच साल से।" मार्क ने झेंपते हुए कहा।

"किन्तु इस बीच में तो तुम मेरे पास आ चुके हो तुमने तो कभी इस ओर इशारा भी नहीं किया।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"उस समय मुझे इसकी विशेष चिन्ता नहीं थी। मैंने सोचा था कि कुछ समय बाद आप ही सब कुछ ठीक हो जाएगा।" उदासी भरे स्वर में मार्क ने नीची निगाह किए हुए कहा।

"तो अब क्या कोई विशेष बात हो गई ?"

"मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि मैं इस स्थिति को भी पहुंच सकता हूं। सच तो यह है कि मेरे नपुंसक हो जाने से मुझे कोई खास नुकसान नहीं हुआ है, परन्तु मुझे बेचारी वैण्डा पर दया आती है जिसे एक दिन को भी वैवाहिक जीवन का सुख नहीं मिला, हालांकि हमें पति-पत्नी के रूप में रहते हुए बाईस साल बीत चुके हैं। लोग समझते हैं कि हमारा वैवाहिक जीवन बहुत सुखी है। जबकि वास्तविकता यह है कि हम दोनों में से किसी ने भी कभी यौन सुख नहीं भोगा। हमने वास्तविक आनन्द प्राप्त करने के प्रयत्न तो अवश्य किए परन्तु सफलता कभी नहीं मिली।"

डाक्टर जैकब्सन के चेहरे पर गम्भीरता दौड़ गई। वे दत्तचित्त होकर उसकी बात सुन रहे थे। मार्क कहे जा रहा था, "इस प्रकार धीरे-धीरे मैं सैक्स से ही विरक्त हो गया। दशा यहां तक बिगड़ गई कि मुझे अपने शिश्न में उत्थान लाने के लिए अपने ही हाथ से घर्षण करने की आवश्यकता पड़ने लगी। इसके पश्चात् मैं जैसे ही सम्भोग करने को तैयार होता कि वैण्डा कहती, "क्या आज ···करना जरूरी है ?" बस, यह सुनते ही मेरा शिश्न ठंडा पड़ जाता और एकदम निर्जीव मुलायम व लिजलिजा-सा हो जाता। उसी दिन से मैंने सम्भोग के बारे में सोचना भी बन्द कर दिया और अपने आपको दूसरे कामों में लगाने की कोशिश करने लगा।

"अगर ऐसी बात है तो तुम अब मेरे पास किस उद्देश्य से आए हो ?" क्या वैण्डा अब सम्भोग के लिए उत्सुकता दिखाने लगी है।

"नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं है। मेरे कार्यालय में एक लड़की है, उसने एक बार मुझे अपने घर भोजन पर आमन्त्रित किया था। इससे पूर्व वह मेरे साथ अनेक बार दावत खा चुकी थी। उस दिन दावत के पश्चात् हम एक-दूसरे से इस प्रकार घुल-मिल गये जैसे दो सहपाठी हों।"

"क्या आयु है उस लड़की की ?"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"चौबीस वर्ष, वह तलाकशुदा है। काफी समय पूर्व वह अपने पति को तलाक दे चुकी है।"

"सुन्दर है ?"

"अत्यन्त सुन्दर।"

"फिर क्या हुआ ?" डाक्टर ने पूछा।

"घटना चक्र तेजी से घूमता गया। हम दोनों एक दूसरे के अधिक से अधिक निकट आते गए। आज यह दशा है कि हम दो शरीर एक प्राण वन गये हैं। एक दूसरे के विना एक क्षण भी हमारे लिए भारी लगता है। हम अधिक से अधिक एक दूसरे के आलिंगन में आवद्ध रहना चाहते हैं।"

"क्या इस लड़की के साथ आपको नपुंसकता का वोध नहीं होता ?"

"नहीं, विल्कुल नहीं। मुझे तो उसके साथ नवयौवन और नई जिन्दगी की अनुभूति होती है। वेरा के साथ जव मैंने पहली वार सम्भोग किया तो मुझे अभूत-पूर्व और अद्‌भुत आनन्द प्राप्त हुआ जितना पहले कभी नहीं हुआ था।"

"क्या आप अव भी उसके पास जाते हैं ?"

"निःसंदेह। जव कभी वह वुलाती है, मैं अवश्य जाता हूं।"

"कव-कव ? सप्ताह में एक वार या महीने में एक वार ? अथवा इससे भी अधिक ?"

"सप्ताह में दो या तीन वार तो अवश्य ही जाता हूं। कभी-कभी इससे भी अधिक वार चला जाता हूं।"

"इसका मतलव यह है कि आप में वहुत अधिक पुंसत्व है।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है, किन्तु केवल वेरा के साथ। वैण्डा के साथ ऐसा नहीं होता।"

"क्या आपने इन दिनों अपनी पत्नी वैण्डा के साथ सहवास करने की कोशिश की ?"

"हां की थी।"

"क्यों ?"

डाक्टर के इस प्रश्न से मार्क की भौहों पर वल पड़ गये। वह वोला, "क्यों नहीं करता ? क्या वैण्डा मेरी स्त्री नहीं है। वेरा के पास तो मैं मैथुन का आनन्द प्राप्त करने के लिए जाता हूं और वैण्डा मेरी जीवन-संगिनी है। वहुत दिनों से

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

हम साथ रहे हैं। मैं उससे सम्बन्ध-विच्छेद करने की बात सोचना भी पाप समझता हूं।"

"तुम्हारे और वैण्डा के प्रेम-सम्बन्ध कैसे हैं ?"

"बिल्कुल वैसे ही जैसे कि विवाह के प्रारम्भिक दिनों में थे। मैं उसके साथ मैथुन करने की चेष्टा करता हूं, परन्तु मैथुन आरम्भ होने से पहले ही वह झुंझला उठती है जिससे मैं बिल्कुल ठण्डा पड़ जाता हूं। सदा वह यही कहती है, "तुमने फिर गड़बड़ शुरू की। बूढ़े होने चले, पर हवस नहीं मिटी।" बस इतना सुनते ही मेरे उत्साह पर पानी फिर जाता है।

"तो यह बात है! पत्नी के सामने नपुंसक बन जाते हो और प्रेमिका के सामने पूर्ण पुरुष !"

"कुछ ऐसा ही है डाक्टर साहब !" मार्क ने उत्तर दिया।

"तो ऐसा करो कि वैण्डा से सम्बन्ध-विच्छेद करके वेरा से विवाह रचा लो।"

"यह असम्भव है।"

मार्क के असम्भव कहने पर भी यह बात संभव हुई। वेरा ने शर्त रखी कि यदि तुम्हें मेरे साथ रहना है तो वैण्डा को तलाक देकर मेरे साथ विवाह कर लो। वह इस बात पर अड़ गई कि इसका फैसला आज ही और अभी होना चाहिए।

मार्क ने वैण्डा को तलाक देना स्वीकार न किया। वह वेरा के साथ सम्बन्ध-विच्छेद करके अपनी पत्नी के साथ रहने को लौट गया। उसे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसके ऊपर से कोई भारी बोझ उतर गया। रात्रि को नई उमंग और नये उत्साह के साथ वह वैण्डा के साथ मैथुन की तैयारी करने लगा; परन्तु वैण्डा तो अब भी वही वैण्डा थी। उसने मार्क को झिड़कते हुए कहा, "तुम्हारी आदत गई नहीं। अब तो बुढ़ापे में इन बातों को छोड़ दो।"

इतना सुनना था कि मार्क का सारा जोश ठण्डा पड़ गया। उसका उत्थान समाप्त हो गया।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 4

सुहागरात या...

आर्थर अपने पहाड़ी आवास से बाहर आया। द्वार बन्द कर ताला लगा बाहर की ओर चल दिया। वह कहां और क्यों जा रहा था, यह बताने से पहले आपको आर्थर का थोड़ा-सा परिचय करा दें।

आर्थर एक ख्याति प्राप्त लेखक व नाटककार है; केवल नाटककार ही नहीं नाटक समीक्षक भी। उसकी आयु इकत्तीस वर्ष है, वह देखने में सुन्दर और सुलक्षण है। अनेक युवतियां उससे विवाह करने की इच्छुक थीं। वह सुन्दर, सजीला, फुर्तीला, धनी अविवाहित युवक जो था। वह ऐसे मरणासन्न वृद्ध का पुत्र था जिसकी अपार सम्पत्ति का वही एकमात्र उत्तराधिकारी था। किन्तु अब तक कोई युवती उसकी दृष्टि पर नहीं जम सकी थी। केवल एक युवती करेन ऐसी थी जो उसे आकृष्ट करने में सफल हुई थी। उसी के साथ आज उसका विवाह होने वाला है। विवाह का नीला जोड़ा पहने आर्थर चला जा रहा है। फिर वह सहसा अपनी बहुमूल्य, गहरे रंग की चमकीली कार के पास जाकर रुक गया। इसी कार में बैठकर तो उसे विवाह करने के लिए जाना था। कार का दरवाजा खोल वह अन्दर जा बैठा। फिर फर्राटे भरती हुई उसकी कार गिरजा घर की ओर दौड़ पड़ी। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार की कल्पनाएं उससे भी तेज गति से दौड़ रही थीं। उसका ध्यान विविध वैवाहिक प्रथाओं की ओर खिंच गया। पिछले सप्ताह ही तो उसके विवाह का पूर्वाभ्यास हुआ था। उस दिन पादरी ने कहा, "मैं तुम्हें पति-पत्नी घोषित करता हूं। इस समय तुम अपनी पत्नी का केवल चुम्बन ले सकते हो, परन्तु आगामी सप्ताह जब तक तुम दोनों का औपचारिक विवाह न हो जाए तब तक तुम इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकते।" यह सुन कर आर्थर केवल मुस्करा कर रह गया था और करेन ने लजा कर धीरे से आर्थर का हाथ पकड़ कर दबा दिया था। पादरी के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आदेशानुसार आर्थर ने अपनी भावी पत्नी का केवल हाथ चूम कर संतोष कर लिया था।

आर्थर को विवाह की कोई चिन्ता न थी, उसे केवल यह आशंका थी कि सुहागरात को वह कहां तक सफल होगा। आज तक उसने किसी भी युवती के साथ सहवास नहीं किया। सच तो यह है कि करेन से मिलने से पूर्व उसके मन में कभी काम-वासना ही जाग्रत नहीं हुई थी। उसकी वासना जाग्रत होने की भी कुछ विचित्र कहानी है।

एक दिन आर्थर समुद्र तट पर सामान्य वस्त्र पहने लेटा था। उसके पास ही उसकी बगल में उसकी मित्र करेन लेटी थी। तट पर चांदनी छिटक रही थी। न जाने आर्थर के मन में वासना का ज्वार कैसे जाग उठा कि उसने करवट बदल कर करेन को चूम लिया। इस प्रकार करेन को चूमने का उसका यह पहला अवसर था। आर्थर के मन में आया कि वह खुले शब्दों में उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख दे; परन्तु कुछ सोच कर उसने ऐसा नहीं किया। उसने करेन के साथ मिलकर सैर सपाटे करने का प्रस्ताव रखा। वह चाहता था कि विवाह-बंधन में बंधने से पूर्व वे एक दूसरे के अधिक समीप आकर पूरा-पूरा परिचय प्राप्त कर लें; किन्तु करेन ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उसका कहना था कि वह बहुत जल्दी विवाह करना चाहती है। उसने यह भी कहा कि, "यदि तुम मुझसे विवाह कर सको तो यह मेरे लिए गौरव की बात होगी।"

आर्थर ने उसकी बात को समझा और स्वीकार कर लिया। जब वह करेन के साथ प्यार-दुलार करने लगा तो उसने आर्थर को झिड़क कर ऐसा करने से मना कर दिया। आर्थर को यह बात अच्छी नहीं लगी। आज उस बात को याद करके वह सोच रहा था कि न जाने सुहाग की सेज पर आज करेन का व्यवहार कैसा हो? फिर करेन की आयु भी अधिक नहीं है, केवल इक्कीस वर्ष की ही तो है। वह भी आर्थर की ही भांति अनुभवहीन है।

आर्थर को स्वयं अपने ऊपर भी संदेह था।

उसने केवल एक बार यौन सम्पर्क किया था। उस समय उसकी आयु पन्द्रह वर्ष थी। उस समय वह एक विद्यालय का विद्यार्थी था। उससे कुछ बड़े अर्थात् सत्रह साल के दो सहपाठी उसे अपने साथ वैश्याओं के मौहल्ले में ले गये थे।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पहले तो आर्थर को कुछ झिझक हुई। यद्यपि उसका सारा व्यय वे दोनों उठाने को तैयार थे, फिर भी वह किसी वैश्या के साथ सोना पसन्द नहीं करता था। जिस वैश्या के पास वे आर्थर को ले गए वह नाक-नक्श से आकर्षक और मिलन-सार थी।

सहपाठियों की दृष्टि में आर्थर बुद्धू था। इसलिए वे वैश्या के कमरे में उसे लगभग धकेलते हुए ले गए। आर्थर कुछ भयभीत था, किन्तु उसने अपना भय अपने साथियों के ऊपर प्रकट नहीं होने दिया। कमरे में जाकर वह चुपचाप खड़ा हो गया। वैश्या सेज पर बैठी प्रतीक्षा करने लगी। जब आर्थर ने कहा कि उसे भय लग रहा है, तो वह मुस्कराकर बोली, "तुम कुछ करो या न करो तुम्हें पैसे तो पूरे देने ही पड़ेंगे।"

आर्थर ने फौरन जेब से निकाल कर पांच डालर वैश्या को दे दिए। वैश्या ने धीरे से उठ कर अपने सारे वस्त्र एक-एक करके उतार डाले और उसके सामने बिल्कुल नंगी होकर खड़ी हो गई। आर्थर चकित नेत्रों से उसे देख रहा था। वैश्या ने आगे बढ़कर अपनी दोनों बाहें आर्थर के गले में डाल दीं और उसे कस कर अपने आलिंगन में बांध लिया। फिर फुसफुसा कर पूछा, "क्या यह सब अच्छा नहीं लगता ?"

आर्थर ने सिर हिला कर कहा, "नहीं।"

"परन्तु तुम तो मेरी फीस दे चुके हो। आओ समागम करें। मैं तैयार हूं।"

आर्थर से कुछ कहते न बना। सहसा उसका शरीर कांपने लगा। उसके ऊपर भय-सा हावी होने लगा।

उसकी यह दशा देख कर वैश्या को दया आ गई। उसने आर्थर के रुपये लौटाते हुए कहा, "यह लो अपने पांचों डालर ! मैं बच्चों से उनके दूध के पैसे नहीं छीना करती।"

आर्थर बोला, "नहीं-नहीं, यह पैसे अपने पास ही रहने दो। केवल मेरा एक छोटा-सा काम कर दो। मेरे साथियों से कह देना कि मैंने तुम्हारे साथ बड़े मजे से संभोग किया है। हमारा समागम पूरी तरह से सफल रहा।"

वैश्या ने कहा, "ये डालर तो तुम ले ही लो। मैं तुम्हारे साथियों से तुम्हारी खूब तारीफ कर दूंगी कि ऐसे पौरुष वाले नवयुवक मुझे बहुत कम मिले हैं।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

फिर मिलने का वचन देकर और कृतज्ञता प्रगट करके आर्थर वहां से चल दिया। वचन देकर भी उसने फिर कभी उस वैश्या से भेंट नहीं की। उस वैश्या से ही क्या; किसी भी अन्य स्त्री के साथ उसने सहवास नहीं किया। जब वह कालेज में पढ़ता था, तब कुछ सहपाठियों के साथ उसकी घनिष्ठता अवश्य हो गई परन्तु वह घनिष्ठता चुम्बन आलिंगन तक ही सीमित रही।

विवाह की बेला में अभी कुछ घंटों की देर है। उसके मन में यही विचार घुमड़ रहा है, क्या वह करेन के साथ सही ढंग से सहवास कर सकेगा। सहसा उसके मन में भय की एक हल्की-सी घटा उठी और उसने सोचा कि उसे फौरन घर लौट जाना चाहिए। वह यह भी सोचने लगा कि विवाह को उस समय तक के लिए स्थगित कर देना चाहिए जब तक कि वह किसी अन्य युवती के साथ संभोग करके यह निश्चय न कर ले कि वह नपुंसक तो नहीं है। परन्तु दूसरे ही क्षण उसके मन में आत्म-विश्वास पैदा हुआ और वह कार दौड़ाता हुआ गिर्जाघर आ पहुंचा।

निश्चित समय पर करेन के साथ आर्थर का विवाह हो गया। पति-पत्नी उस होटल में पहुंच गए जहां उन्हें सुहागरात मनानी थी। दोनों ने ही अपने विवाह के परिधान उतार फेंके। करेन के घुंघराले केश नागिन से उसके कंधों पर लहरा रहे थे, नीलाभ नेत्र आशा से चमक रहे थे। काली पतली गाउन उसके मनोरम शरीर को पूरी तरह से नहीं ढक पा रही थी। उसका खुला यौवन, संगमरमर से चिकने कठोर नुकीले उरोज, पतली कमर, सपुष्ट नितम्ब और जंघाएं सभी झांक-झांक कर आर्थर को प्रेम-निमंत्रण दे रहे थे। वे सब और लाल होंठ अपने प्रेमी को मौन स्वर में अपना लाड़-प्यार जताने के लिए आह्वान कर रहे थे।

आर्थर ने निमंत्रण की भाषा को समझा और करेन को उठा कर अपने हृदय से लगा लिया। उसे लगा कि करेन का सीना उसके अपने सीने की अपेक्षा कहीं अधिक गर्म है। उसने आलिंगन में बंधी हुई नववधू के मुख को वासना के वशीभूत होकर चूम लिया, हाथ से उसके मस्तक को थपथपाया और अंगुलियों से उसके मुख, कपोल एवं गर्दन को सहलाने लगा। फिर उसने करेन की गाउन हटा कर दूर फेंक दी। फिर एक नये उत्साह से वह उसके कंधों, गर्दन आदि को चूमता-चाटता हुआ उसे सेज पर लेकर लुढ़क गया।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

थोड़ी देर आर्थर उसकी बगल में लेटा रहा। फिर एकदम उसके ऊपर आ गया। ऊपर आते ही उसने करेन का मुख चूम लिया। करेन ने भी उतने ही उत्साह से उसका प्रत्युत्तर दिया। तभी अपनी जंघाओं के बीच में कुछ अनुभव करके वह समझ गई कि आर्थर संभोग की तैयार कर रहा है। उसे लगा कि आर्थर करेन के गुप्तागों में इस प्रकार आघात कर रहा है जैसे वह रास्ता भूल गया हो। करेन ने चाहा कि वह हाथ बढ़ा कर उसकी सहायता कर दे जिससे आर्थर का शिश्न ठीक स्थान पर पहुंच जाए। इस विचार से जब उसने उसके शिश्न को टटोला, तो एकदम चौंककर उसने हाथ वापस खींच लिया।

"क्या हुआ ?" आर्थर ने धीरे-से पूछा।

"यह तो बिल्कुल निर्जीव होकर मुलायम पड़ गया है।" करेन ने कहा।

इस बात को आर्थर ने भी अनुभव किया। वह लज्जा और ग्लानि से भर कर बोला, "ऐसा कैसे हो गया। इससे तो अच्छा था मैं मर जाता !"

करेन अब भी उसी प्रकार आर्थर के नीचे लेटी हुई थी। उसका कामोन्माद धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा था। फिर भी उसने अपने आपको संभाल कर अपने पति को धैर्य बंधाते हुए कहा, "तुम चिन्ता न करो मेरे प्रियतम। थोड़ा सुस्ता लो। सब ठीक हो जाएगा। थोड़ी देर आराम करने से फिर उत्थान आ जाएगा।"

परन्तु आर्थर का मन निराशा से भर चुका था। वह करवट लेकर एक ओर लेट गया और बोला, "मेरे लिए यह कैसी लज्जा की बात है। दूसरे लोगों के विषय में तो सुना था कि सहवास से पूर्व उनकी ऐसी दशा हो जाती थी; परन्तु मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि मेरे साथ भी ऐसा हो सकता है।"

करेन ने उसका हाथ चूमते हुए उसे धैर्य बंधाया और कहा—"सब ठीक हो जाएगा। तुम दुःखी क्यों होते हो। इतने बड़े जीवन में केवल एक रात्रि का क्या महत्व ? आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, दो-चार दिन में तुम अवश्य ठीक हो जाओगे। इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है।"

ऐसा केवल आर्थर और करेन के साथ ही नहीं हुआ; ऐसे बहुत से वरवधू होते हैं जो सुहागरात्रि को सहवास के आनन्द का उपभोग नहीं कर पाते। जिन लोगों को इस बात की जानकारी नहीं होती वे आर्थर की भांति अपने आपको भाग्यहीन समझकर कोसने लगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आइये जरा इस बात पर विचार करें कि ऐसी कौन-सी बातें हैं जो इस आनन्द-भरी मधुयामिनी को विषयामिनी बना देती हैं। इसके अनेक कारण हैं। इनमें से प्रमुख कारण हैं, घबराहट, अधिक अथवा अस्वाभाविक उत्तेजना, मन पर दबाव या थकावट। आजकल विवाह-पद्धति इतने अधिक रस्मों-रिवाजों में से होकर गुजरती है कि पुरुष का उत्साह बहुत कुछ दब जाता है; और उत्साह-हीन संभोग का स्वाभाविक परिणाम होता है असफलता। इसके अतिरिक्त बहुत अधिक उत्तेजना, डर, अनुभव का अभाव, अज्ञान, चिन्ता तथा किसी विपत्ति की आशंका से भी अस्थायी नपुंसकता आ जाती है।

विवाह की रस्म समाप्त हो जाने पर वर-वधुओं को इतनी अधिक रस्मों का पालन करना पड़ता है कि वे बिस्तर पर पहुंचने से पहले ही थक कर चूर हो जाते हैं। काम वासना प्रायः शिथिल हो जाती है। नींद जोरों से सताने लगती है। फिर भी पुरुष प्रयत्न करता है कि सुहागरात को सफल बनाया जाए। परन्तु एक ओर का प्रयत्न शायद ही कभी सफल होता है। नींद की मारी वधू प्यार-पुचकार को ग्रहण करते-करते ही निद्रा के वशीभूत हो जाती है। ऐसी दशा में थके हुए वर के शिश्न में एक तो उत्थान वैसे ही नहीं आता और यदि आ भी जाए तो निद्राग्रस्त पत्नी की शांत निष्क्रियता के फलस्वरूप टिक नहीं पाता। परिणाम यह होता है कि समुचित सभोग नहीं हो पाता। सामाजिक प्रथा यह रही है कि प्रथम रात्रि को संभोग अवश्य किया जाए। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी इसे आवश्यक समझा जाता है। परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि बहुत से मामलों में यह संभोग असफल रह जाता है। फिर तो उन्हें दूसरी रात्रि की ही प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

यदि नवविवाहिता दम्पत्ति को काम कला का ज्ञान हो तो यह स्थिति उत्पन्न ही न हो। हजारों युवक ऐसे हैं जो काम कला की तकनीक का अध्ययन किए बिना ही विवाह-बंधन में बंध जाते हैं। स्त्री की योनि की संरचना का उन्हें ज्ञान नहीं होता और यदि होता भी है तो अधूरा होता है। इसी प्रकार प्रणय-क्रीड़ाओं के विभिन्न अंगों के विषय में भी वे अनभिज्ञ होते हैं। यदि वे जानते होते कि किस प्रकार स्त्री की वासना को जाग्रत किया जाता है और इस तकनीक को वे सही रीति से अपनाते तो स्त्री कदापि सो नहीं सकती थी।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कुछ पति-पत्नी तो यह भी नहीं जानते कि रति-क्रिया का प्रारम्भ कैसे और कहां से किया जाए। स्त्री किस स्थिति में लेटे और उस समय पुरुष की स्थिति क्या हो। वे तो यह भी नहीं जानते कि शिश्न का प्रवेश योनि में कैसे किया जाता है। तात्पर्य यह है कि उन्हें सहवास की विधि का प्रारम्भिक ज्ञान भी नहीं होता।

एक बार जब एक शोधकर्त्ता ने एक नवविवाहित पति से इस विषय में बात-चीत की तो उसने बताया कि "मैं समझता था योनि नाभि से ठीक नीचे होती है। परन्तु सुहागरात को ही मुझे मालूम हुआ कि वास्तव में योनि कहां होती है।" स्पष्ट है कि उसकी सुहागरात बिना संभोग किए ही बीत गई थी।

डाक्टर लीमन क्लार्क का मत है कि सुहागरात को जो सहवास में असफलता होती है, उसका मूल कारण मन के अन्दर बैठा हुआ यह भयपूर्ण भ्रम है कि संभोग-क्रिया बहुत मुश्किल और जटिल है वह मैं कर भी पाऊंगा या नहीं। जिस प्रकार रंगमंच पर पहली बार उतरने वाला अभिनेता घबराहट के कारण एक के पश्चात् दूसरी भूलें करता जाता है, उसी प्रकार अनुभवहीन पति घबराहट के कारण अपने शिश्न के उत्थान को नहीं बनाए रख पाता। फल यह होता है कि सुहाग-रात का सारा आनन्द मिट्टी में मिल जाता है।

सुहागरात को सभी पुरुष अस्थायी नपुंसकता के शिकार नहीं हो जाते, किन्तु यह सत्य है कि निम्न वर्ग के लोगों की अपेक्षा मध्यम वर्ग के लोगों को यह रोग अधिक सताता है। इसका एक कारण यह है कि निम्न वर्ग के लोगों में मध्यम वर्ग के लोगों की भांति कठोर नैतिक मर्यादाएं नहीं होतीं और वे प्रायः किसी न किसी प्रकार विवाह से पूर्व भी यौन सुख प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं।

डाक्टर एल्फ्रेड किन्से का मत है कि सुहागरात्रि के सम्भोग में उच्च तथा मध्यम वर्ग के पुरुषों को इसलिए भी असफलता मिलती है कि उनमें हस्त मैथुन की लत पड़ चुकी होती है। दूसरा कारण यह है कि ये लोग ताश, शतरंज तथा अन्य दूसरे खेलों में इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि उनका ध्यान काम-क्रीड़ाओं की ओर विशेष नहीं जाता। इसलिए उनकी यौन सम्बन्धों की ओर प्रवृत्ति भी नहीं होती।

यह बात निर्विवाद है कि सुहागरात की नपुंसकता स्थायी नहीं होती। यदि वरवधू दोनों ही धैर्य से काम लें और काम कला का ज्ञान प्राप्त करके वैवाहिक जीवन में उसका प्रयोग करते जायें, एक दूसरे के प्रति सहानुभूति व सद्भावना

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रखें तो चिकित्सकों से परामर्श लिए बिना ही वे अपने इस दोष को दूर कर सकते हैं। कुसंस्कार और कुटेवों के परिणामस्वरूप भूल हो सकती है, परन्तु विवेक और अभ्यास से उसे सुधारा भी जा सकता है।

डाक्टर अब्राहम स्टोन ने एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख किया है जो प्रथम रात्रि की असफलता से निरुत्साहित होकर साहस खो बैठा था। वह एक वर्ष तक हताश होकर मन मारे घर में बैठा रहा। पहली रात्रि को उसके शिश्न का उत्थान जो धोखा दे गया, वह बराबर बारह महीने तक उसे धोखा देता रहा? नौबत यहां तक पहुंची कि उसने संभोग करने का विचार ही मन से हटा दिया और दूसरी बातों की ओर ध्यान देने लगा।

विवाह की प्रथम रात्रि को यदि पति सफल नहीं होता तो पत्नी पर उसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। वह पति को कुछ हेय दृष्टि से देखने लगती है और उसकी कामवासना दब जाती है। इसके परिणामस्वरूप उसके स्वभाव का माधुर्य नष्ट हो जाता है और वह चिड़चिड़े स्वभाव की हो जाती है, सहिष्णुता का अभाव हो जाता है, छोटी-छोटी बातों पर क्रुद्ध होने लगती है। जब मनोमालिन्य उग्र रूप धारण कर लेता है तो तलाक की नौबत आ सकती है। इस प्रकार प्रथम रात्रि की असफलता भावी संकटों का निर्देश और संकेत करती है।

चूंकि आर्थर की यौन दुर्बलता एक साधारण बात थी, इसलिए वह स्थायी रूप धारण नहीं कर सकी। दूसरी ही रात्रि को आर्थर और करेन का सहवास पूर्णतया सफल रहा। फिर भविष्य में उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई। इसका कारण यह था कि आर्थर ने दूसरे दिन मनोचिकित्सक से इस विषय में परामर्श लिया था। जब उसने चिकित्सक से पूछा था कि यह पहली असफलता उसके भविष्य को अन्धकारमय तो नहीं बना देगी तो उसने आश्वासन दिया था कि "इसमें कोई घबराने की बात नहीं है। अनेक व्यक्तियों के लिए यह रात्रि दुर्भाग्य की संदेशवाहिका बन जाती है; परन्तु आपने फौरन यहां आकर सही मार्ग दर्शन प्राप्त कर लिया है।"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 5

परकीय सम्बन्ध और नपुंसकता

समाज को नियन्त्रित रखने में कानून और नैतिकता का बड़ा हाथ है। इनका निर्देश है कि पति-पत्नी को किसी अन्य स्त्री अथवा पुरुष के साथ समागम नहीं करना चाहिए। फिर भी इस प्रकार के समागम करने की चेष्टा की जाती है। इन प्रयासों में उन्हें सफलता भी मिल जाती है और वे इस प्रकार के यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं, परन्तु अक्सर ये सम्बन्ध बहुत मंहगे पड़ते हैं।

डाक्टर एल्फ्रेड किन्से ने लिखा है कि मेरे क्लीनिक में जितने विवाहित व्यक्ति यौन-सम्बन्धी रोगों की चिकित्सा के लिए आते हैं, इनमें से आधे पुरुष ऐसे होते हैं जिन्होंने दूसरे पुरुषों की पत्नियों के साथ सम्भोग किया होता है। उन्होंने अपने सर्वेक्षण के आधार पर बताया कि ऐसे पुरुषों में अधिकतर निम्नवर्ग के थे, परन्तु ज्यों-ज्यों उनकी उम्र ढलती गई त्यों-त्यों उनकी व्यभिचार करने की प्रवृत्ति भी कम होती गई। इन व्यभिचारी पुरुषों में से अधिकतर का सम्बन्ध गृहस्थ स्त्रियों के साथ रहा था, केवल 8 से 15 प्रतिशत तक पुरुष ही वेश्याओं के यहां जाते थे।

इस विषय में डाक्टर किन्से तथा उनके दूसरे साथियों ने विवाहित स्त्रियों से भी पूछताछ की थी। लगभग चालीस प्रतिशत स्त्रियों ने स्वीकार किया कि उन्होंने अपने पतियों के अतिरिक्त एक या एक से अधिक पुरुषों के साथ संभोग किया था। आधी से अधिक पत्नियों ने दो या दो से अधिक विवाहित पुरुषों के साथ अपने यौन सम्बन्धों की बात स्वीकार की।

किन्से के सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि उन पत्नियों ने ही दूसरे पुरुषों के साथ यौन-सम्बन्ध स्थाप्ति नहीं किया जो अपने दाम्पत्य जीवन से असन्तुष्ट थीं, बल्कि उन्होंने भी किया जिनका दाम्पत्य-जीवन पूर्णतया सन्तोषप्रद और सुखी था। इसका कारण यह है कि बहुत से पुरुष विभिन्न स्त्रियों से प्राप्त होने वाले आनन्द के लिए उत्सुक रहते हैं। वे अलग-अलग फूलों का रस चखना चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डाक्टर किन्से का निश्चित मत है कि विवाहित पुरुषों में कम से कम आधे ऐसे हैं कि यदि उनकी पत्नियां उन्हें अपने सहवास से सन्तुष्ट न करें तो वे अवश्य ही उन स्त्रियों से यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेंगे। जो लोग विश्वस्त समझे जाते हैं उनमें भी आधे से अधिक ऐसे हैं कि यदि उन्हें अवसर मिल जाए तो वे परायी पत्नियों से यौन संबंध कायम करने में पीछे न रहें। उनका यह भी मत है कि संभोग से पूर्व जो पत्नियां अपने पति की प्रणय-क्रीड़ाओं का विरोध करती हैं वे परोक्ष रूप से उन्हें ऐसी दूसरी स्त्रियों के पास जाने के लिए प्रेरित करती हैं जो काम कला में प्रवीण होने के कारण अन्य पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखती हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिक डाक्टर एल्फ्रेड किन्से के इस मत को स्वीकार नहीं करते, डाक्टर जी० बी० हैमिल्टन ऐसे मनोवैज्ञानिकों में से एक हैं। उनकी धारणा है कि जो दम्पत्ति एक-दूसरे के प्रति विश्वाघात करके अन्यत्र सुख की खोज करते हैं उनकी अपेक्षा वे दम्पत्ति अधिक सुखी हैं जिनका जीवन एक-दूसरे के प्रति विश्वास को बनाए रखकर चलता है। डाक्टर लुई भी 700 दम्पत्तियों का सर्वेक्षण करके इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं।

डाक्टर लोके का कथन कि अपनी पत्नी से सन्तुष्ट रहने वाले पुरुष प्रायः दूसरी स्त्रियों के पास जाना पसन्द नहीं करते। केवल वे ही पुरुष दूसरी स्त्रियों के पास जाते हैं जो अपनी पत्नियों से असन्तुष्ट होते हैं। ऐसे ही लोग तलाक देने की चेष्टा करते हैं। उन्होंने यह भी लिखा है कि जो सन्तुष्ट पति उनसे मिले, उनमें से केवल 19.9 प्रतिशत ऐसे थे जिन्होंने परायी स्त्रियों के साथ समागम किया था। एक मजे की बात यह है कि परस्त्री गामी पतियों की लगभग आधी पत्नियां ऐसी थीं जो इस बात पर विश्वास करने के लिए तैयार ही नहीं थीं कि उसके पति विश्वासघात भी कर सकते हैं।

इसके विपरीत असन्तुष्ट पतियों में 47.9 प्रतिशत ऐसे थे जिन्होंने स्वीकार किया था कि उनका अन्य स्त्रियों के साथ अनैतिक सम्बन्ध था। बाद में इनकी पत्नियों ने इन्हें तलाक दे दिया था। वे सभी जानती थीं कि उनके पति दुश्चरित्र थे। कुछ ने डंके की चोट की घोषणा की कि उनके पति चाहे कितना ही अस्वीकार करें, परन्तु यह बिल्कुल सत्य है कि उनका अन्य स्त्रियों के साथ सम्बन्ध रहा है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डाक्टर लोके ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यदि पति-पत्नी में से किसी एक को भी मालूम हो जाए या सन्देह हो जाए कि उसके साथी ने उसके साथ विश्वास-घात किया है तो उनका दाम्पत्य-जीवन सुखी नहीं रह सकता। इसके विपरीत यदि उनमें एक-दूसरे के प्रति आस्था हो तो उनका जीवन अवश्य सुखमय रहेगा।

डाक्टर एल्फ्रेड किन्से का मत है कि कभी-कभी परकीय सम्बन्धों के फल-स्वरूप बिगड़े हुए दाम्पत्य-जीवन सुधर भी जाते हैं। इसके विषय में उनका तर्क है कि इस प्रकार के अनैतिक सम्बन्धों से काम-क्रीड़ा एवं संभोग सम्बन्धी तकनीक का ज्ञान बढ़ता है, जिसके प्रयोग पति-पत्नी का सहवास अधिक आनन्दप्रद हो जाता है परन्तु यह विचार सर्वमान्य नहीं है।

प्रश्न उठ सकता है कि कोई पुरुष परस्त्री-गामी क्यों होता है? इसके अनेक कारण हैं। कुछ पत्नियां इतनी ठंडी और वासना रहित होती हैं कि वे पति को बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं कर पातीं। दूसरा कारण यह है कि कुछ पुरुष यह परीक्षण करने के लिए अनेक स्त्रियों के पास जाते हैं कि वे कितनी देर तक सम्भोग करने की क्षमता रखते हैं। कुछ लोग अपनी पत्नियों की अशिष्टता से खीझकर उसे दंड देने के लिए अनेक स्त्रियों के पास जाते हैं। परन्तु यह प्रवृत्ति अन्त में दुःखदायी सिद्ध होती है।

कुछ लोग केवल यह देखने के लिए अनेक स्त्रियों से यौन-सम्बन्ध स्थापित करते हैं कि कौन उन्हें कितना अधिक प्रेम और आनन्द दे सकती है। जिन्हें बचपन में अपनी मां का प्रेम नहीं मिलता वे भी अन्य स्त्रियों के पास दौड़ते फिरते हैं। कुछ व्यभिचारी पुरुष ऐसे भी होते हैं जो दिखावटी प्यार से किसी भोली-भाली युवती का हृदय पहली ही भेंट में जीत लेते हैं, और उसका रस पीकर उतनी ही जल्दी उसका परित्याग भी कर देते हैं।

कुछ भले पुरुषों को कामोन्मत्त युवतियां भ्रष्ट कर देती हैं। ऐसे पुरुषों को नशीली वस्तु खिला-पिलाकर वे अपनी वासना की तृप्ति कर लेती हैं।

साधारणतया किसी स्त्री या पुरुष द्वारा अन्य पुरुष या स्त्री के साथ स्थापित यौन—संबंधों को अनैतिक माना जाता है। परन्तु कुछ ज़ातियों—विशेषतया आदिम जातियों—में भिन्न प्रथाएं प्रचलित हैं। कुछ लोग तो अतिथिसत्कार के लिए अपनी पत्नी को भी अतिथि की अंकशायिनी बनाने में गौरव का अनुभव करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डाक्टर विलियम जी० कोल का कथन है कि बाइबिल के 'ओल्ड टेस्टामेंट' में परपुरुष गमन को बहुत बड़ा पाप माना है। परन्तु स्त्रियों के लिए जितना घोर पाप माना है, पुरुषों के लिए उतना ही नहीं माना गया। बाइबिल के अनुसार यदि कोई स्त्री किसी परपुरुष के साथ सहवास करती है तो उसे व्यभिचार का पाप लगता है। इसके विपरीत यदि कोई विवाहित पुरुष किसी अविवाहित स्त्री के साथ संभोग करे तो उसे उतना बड़ा पाप नहीं लगता। दूसरी ओर 'न्यू टेस्टामेंट' हर प्रकार के व्यभिचार को एक-सा घृणित पाप मानता है।

प्राचीन विचारधारा में इस प्रकार के अनैतिक संबंधों को जो पाप माना गया है, उसके फलस्वरूप बहुत से पुरुष एक पत्नी व्रत का पालन करते हैं। किन्तु मानव स्वभाव के कारण उनका मन अन्य सुन्दर स्त्रियों का रसास्वादन करने के लिए लालायित रहता है। इस अतृप्त लालसा से भी नपुंसकता का जन्म होता है।

अनेक बार देखा गया है जो पुरुष अपनी पत्नी के साथ संभोग करने में नपुंसकता का अनुभव करते हैं, वे दूसरी स्त्री के साथ संभोग करने में नपुंसकता का अनुभव नहीं करते। इसमें प्रायः कम व्यक्ति ही असफल होते हैं। कुछ व्यक्ति इतने धर्मभीरु होते हैं कि वे यह काम कर ही नहीं सकते। एक उदाहरण लीजिए :

आइवान एक व्यापारी है जिसकी आयु छियालीस वर्ष है। उसे अपनी चालीस वर्षीय पत्नी लौर्ना से अत्यधिक प्रेम है। विवाह के पश्चात् सोलह वर्ष तक उनका दाम्पत्य जीवन बड़ा सुखमय रहा। लौर्ना भी उदार और आदर्श पत्नी है। लज्जा और शील उसके गुण हैं। उसके पति ने उसे कभी वस्त्रहीन नहीं देखा। उनका संभोग भी अंधेरे में ही होता था। आइवान ने भी उसकी इस लज्जा का निवारण करने का प्रयत्न नहीं किया।

आइवान की ईवलिन नाम की एक तीस वर्षीया निजी सचिव थी। आवश्यकता होने पर वह प्रायः देर तक कार्यालय में रुककर कार्य किया करती थी। आइवान उसके कार्य से सन्तुष्ट था। वह अपने पति से तलाक ले चुकी थी। घने लम्बे केश; हरी-हरी आंखें, ये थीं उसकी कुछ विशेषताएं। चूंकि वह विवाहित रह चुकी थी इसलिए संभोग के आनन्द से परिचित थी। इतना ही नहीं काफी अर्से तक वह नियमित रूप से संभोग करती रही थी। पति से तलाक ले लेने के पश्चात् उसकी कामवासना उसे परेशान करती रहती थी। आइवान की ओर वह प्रायः लालसा भरी दृष्टि से देखती रहती थी।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आइवान उसकी योग्यता एवं शिष्ट व्यवहार के कारण उसका आदर करता था। प्रायः दोपहर का वे साथ ही भोजन किया करते थे। जब कार्यालय में अधिक देर हो जाती तो आइवान अपनी कार से ईवलिन को उसके घर पहुंचा दिया करता था।

एक दिन ईवलिन का मन बेकाबू हो उठा। उस समय वह आइवान के साथ बिल्कुल अकेली थी। वह इस अवसर को नहीं जाने देना चाहती थी। अतएव उसने एक हल्का पेय पीने के लिए गिलास उठाया और होंठों से लगाते-लगाते जानबूझकर ऐसे छोड़ दिया मानो वह अचानक हाथ से फिसल गया हो। उसके सारे कपड़े, ब्लाउज, स्कर्ट, मोजे आदि खराब हो गए। उसकी यह दशा देख आइवान सहायता के लिए दौड़ा। वह पेपर टॉवेल से ईवलिन के वस्त्रों पर लगे धब्बों को पोंछने का प्रयत्न करने लगा।

"रहने दीजिए। मैं इन्हें उतारकर सूखने के लिए डाल देती हूं। अभी थोड़ी ही देर में सूखकर ठीक हो जाएंगे।" यह कहते-कहते उसने अपना ब्लाउज उतार-कर आइवान को पकड़ा दिया। आइवान किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रह गया। इसके बाद उसने जिप खोलकर स्कर्ट उतार दिया और फिर जूते मोजे भी खोल डाले। स्कर्ट और मोजों को कुर्सी पर डाल कर बिल्कुल नंगी आइवान के पास आकर खड़ी हो गई और ब्लाउज के धब्बों को देखने लगी।

इस समय वह केवल ब्रैसियर और इलास्टिक वाला जांघिया पहने थी। इन दोनों की ओर देखते हुए बोली—"इन पर कोई धब्बा नहीं लगा है। इसलिए इन्हें उतारने की आवश्यकता नहीं है।"

ईवलिन को इस रूप में देखकर आइवान की कामवासना जाग उठी, परन्तु उसने अपने ऊपर नियन्त्रण करना चाहा, लेकिन अनजाने ही उसके हाथ ईवलिन की कमर की तरफ बढ़ गए। उसने ईवलिन को पकड़कर अपने सीने से लगा लिया। ईवलिन ने भी उसे अपने आलिंगन में कस लिया, मानो वह उसे आगे बढ़ने के लिए निमन्त्रण दे रही हो। आइवान ने उसकी आंखों में आंखें डाल दीं। फिर दोनों के गर्म, जलते हुए प्यासे होंठ आपस में चिपक गए।

सहसा आइवान दो कदम पीछे हटा। उसने अपना कोट, टाई और पैंट उतार कर फेंक दिए। फिर अपनी कमीज पर दृष्टि डाली कि उस पर लिपस्टिक का कोई चिह्न तो नहीं है। वस्ताव में उस पर कोई चिह्न नहीं था। अब उसने

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

ईवलिन की ओर देखा। वह ब्रैसियर और जांघिया भी उतार कर कौच के पास खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी संगमरमर-सी देह पर कठोर पीन पयोधर उबले पड़ रहे थे जिन पर आकर्षक चूचुक जड़े हुए थे।

ईवलिन की साहसपूर्ण मुद्रा को देखकर आइवान का साहस जवाब दे गया। वह चकित-सा देखता रहा। पूर्णतः वस्त्रहीन युवती को देखकर उसकी काम-वासना कुण्ठित हो गई।

इस प्रकार आइवान को निश्चल देखकर ईवलिन ने आगे बढ़कर उसके गले में बांहें डाल दीं। फिर उसके होंठों को चूम लिया। वे बिल्कुल ठंडे थे। उसकी भुजाएं शक्तिहीन-सी नीचे लटकी हुई थीं। उनमें भी ऊष्णता का अभाव था।

"क्या बात है प्रियतम !" ईवलिन ने पूछा।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं !" कहकर वह चुप हो गया। वह लज्जा के मारे यह भी नहीं कह सका कि 'तुम्हें बिल्कुल नंगी देखकर मैं घबरा गया हूं।'

ईवलिन ने उसे फिर उत्तेजित करने के लिए आइवान को अपने खुले उरोजों से चिपका लिया, किन्तु इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

"तुम्हें सर्दी लग जाएगी। जल्दी से कपड़े पहन लो।" कहता हुआ आइवान पीछे हट गया। ईवलिन की आंखों में आंसू भर आए। उसकी निराशा क्रोध में बदल गई। वह बोली—"आपने मुझे धोखा दिया।"

"मुझे दुःख है ईवलिन, मैं विवाहित हूं।"

"वह मैं जानती हूं।" ईवलिन की वाणी में व्यंग्य था।

दोनों ने चुपचाप अपने-अपने कपड़े पहन लिए।

"अब कोई काम नहीं हो सकेगा। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आऊं।"

"मैं चली जाऊंगी। आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।"

"जो कुछ हुआ, उसके लिए मुझे दुःख है ईवलिन ! जो होना था, हो चुका। अब इस बात को भूल जाओ। तुम अब भी मेरे सचिव के रूप में काम करती रहोगी।"

ईवलिन ने उदासी से कहा, "मैं बड़ी मूर्ख थी !"

"यह बात भूल जाओ। तुम अच्छी लड़की हो। मैं अपने कर्मचारियों में तुम्हारा सबसे अधिक आदर करता हूं।" कहते-कहते आइवान ने उसके कंधे थपथपाकर आश्वासन दिया।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

ईवलिन के होंठों पर आप ही एक हल्की-सी मुस्कान दौड़ गई, "अच्छा तो आप मुझे घर पहुंचा दें।"

ईवलिन को अचानक नंगी देखकर आइवान इतना घबड़ा गया था कि उसका पुंसत्व ही समाप्त हो गया। ऐसा क्यों हुआ ? इसका कारण यह था कि उसे किसी स्त्री को नंगी देखने का अभ्यास नहीं था। यदि कभी उसकी पत्नी लौर्ना इसी प्रकार उजाले में नंगी होकर उसके सामने आ जाती तब भी उसकी यही दशा होती।

किसी को नंगा देखकर जो लज्जा अनुभव होती है, उसका कारण वह संस्कार है जो बचपन से ही अवचेतन मन में घर कर लेता है और सदा के लिए स्थायी बनकर चेतन मन पर छा जाता है।

यह सवाल उठ सकता है कि क्या पति-पत्नी के रूप में आइवान और लौर्ना को इस संकोच की भावना को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए था ? इसके विषय में कुछ मनोवैज्ञानिकों का यह मत हो सकता है कि 'इसे अवश्य दूर करना चाहिए, क्योंकि इससे उनकी यौन-क्षमता में कमी आती जाती है जिससे जीवन नीरस हो सकता है।'

परन्तु यह धारणा तर्क संगत नहीं है। आइवान और लौर्ना का यौन सम्बन्धी जीवन नीरस नहीं है। इसमें परिवर्तन लाने की उन्हें कभी आवश्यकता नहीं होती। जब कभी ऐसा प्रतीत होगा कि उन्हें अपने यौन-सम्बन्धों में कुछ परिवर्तन लाना आवश्यक है तो उनके लिए मनोवैज्ञानिक चिकित्सा अनिवार्य हो जाएगी।

संसार के सभी धर्म एक पत्नीव्रत की व्यवस्था देते हैं। इसलिए धार्मिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति व्यभिचार से बचे रहते हैं। जब कभी किसी अन्य स्त्री के साथ सम्भोग करने का अवसर उपस्थित हो जाता है तो वे नपुंसक हो जाते हैं।

फ्रैंक ने जो अपनी कहानी इस पुस्तक के लेखक को सुनाई थी, उससे भी इस बात का समर्थन होता है। फ्रैंक, गोरा, स्वस्थ और सुन्दर युवक था। आयु तीस-बत्तीस वर्ष होगी। वह अपनी पत्नी पर्ल के विषय में चिन्तित रहता था। उसे अपने पुंसत्व पर सन्देह होने के कारण वह स्वयं को अयोग्य पति समझता था।

फ्रैंक पूर्णतया धर्मभीरु ईसाई था। वह अपने धर्म-कर्म का इतना पाबन्द था

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कि पर्ल के प्रति अपने यौन सम्बन्धों का पूर्णतया पालन करके उसे सन्तुष्ट नहीं कर पाता था। विवाह हुए आठ साल बीत जाने पर भी फ्रैंक अपनी पुंसत्व संबंधी त्रुटियों से अनभिज्ञ था। इन त्रुटियों का उसे तब पता चला जबकि पर्ल ने खुले शब्दों में उससे कह दिया कि यदि उसका यही रवैया रहा तो उसे लाचार होकर किसी दूसरे पुरुष की शरण लेनी होगी।

पहले तो फ्रैंक ने इस चेतावनी को केवल उपहास समझा, परन्तु जब बात-चीत ने तूल पकड़ा तो उसे मालूम हुआ कि यह बात केवल मजाक में ही नहीं कही गई है। उसे यह भी मालूम हुआ कि पर्ल की नजर उसके घनिष्ठ मित्र और पड़ोसी पाल पर थी।

गुस्से से फ्रैंक का पारा एकदम चढ़ गया। वह उसे दुराचारिणी मान कर उससे तलाक तक लेने को तैयार हो गया। जब उसका क्रोध कम हुआ तो उसने शांतिपूर्वक इस परिस्थिति पर विचार किया। उसे प्रतीत हुआ कि सम्बन्ध-विच्छेद ही इस समस्या का एकमात्र हल नहीं है। उसने सोचा कि वह स्वयं क्यों न दूसरी स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित करके काम-तकनीक का ज्ञान प्राप्त करे। संभव है उस ज्ञान की सहायता से वह अपनी पत्नी को सन्तुष्ट कर सके। यह सोचकर उसने अपनी नौकरानी ब्रैण्डा से मेल-जोल बढ़ा लिया। वह भी फ्रैंक से इतनी अधिक प्रभावित हुई कि वह उसके साथ कहीं अन्यत्र जाने के लिए प्रस्तुत गई हो।

फ्रैंक और ब्रैण्डा अनेक बार घर से बाहर एक साथ समय बिताने लगे। अब फ्रैंक धीरे-धीरे ब्रैण्डा को प्रणय क्रीड़ा के क्षेत्र में घसीटने लगा। कुछ प्रारम्भिक आपत्ति के पश्चात् वह फ्रैंक की मनमानियों का स्वागत करने लगी क्योंकि वह सभ्य, मिलनसार और मृदुभाषी युवक था।

जब ब्रैण्डा फ्रैंक के आलिंगन, चुम्बनों आदि का स्वागत करने लगी तो उसे विश्वास हो गया कि समागम करने का उपयुक्त अवसर आ गया है। यही सोच-कर एक रात्रि को वह ब्रैण्डा को पलंग पर लिटाकर सम्भोग करने लगा, परन्तु सफल नहीं हो सका, क्योंकि उसके शिश्न में उत्थान ही नहीं आया। इसी प्रकार उसने कई रात्रियों को अनेक बार प्रयत्न किया; परन्तु उसे बिल्कुल सफलता नहीं मिली। वह एक बार भी उसके साथ संभोग न कर सका।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मनोवैज्ञानिकों का मत था कि फ्रैंक के अन्तर्मन में बैठी हुई धार्मिक भावनाओं ने ही उसे ब्रैण्डा के साथ सम्भोग करने योग्य न रखा। जिस प्रकार शार्ट सर्किट के कारण बिजली का फ्यूज उड़ जाता है, उसी प्रकार अवचेतन मन में बैठी मान्यताएं उसकी उत्थान शक्ति को नष्ट कर देती थीं। उसके लिए एकमात्र सही मार्ग यह था कि वह मनोवैज्ञानिकों के परामर्श पर चलकर अपनी कमी दूर करता और उसने वैसा ही किया। एक दिन वह पर्ल को एक मनोचिकित्सक के पास ले गया। उसने अलग-अलग दोनों से बात करके उन्हें सही मार्ग से परिचित करा दिया। फल यह हुआ कि वह विवाहित जीवन के वास्तविक मूल्यों से परिचित होकर अपनी त्रुटियों को दूर करने में समर्थ हो गया। फिर वे सुखी दाम्पत्य जीवन निभाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 6

परिस्थिति-जन्य नपुंसकता

जिन लोगों के यौन सम्बन्ध निरन्तर सफल होते आए हैं, उनके जीवन में भी कभी-कभी ऐसे अवसर आ जाते हैं जब वे बिल्कुल शिथिल हो जाते हैं और उनके शिश्न में तनिक उत्थान नहीं आता। ऐसे पुरुष पुंसत्व रखते हुए भी कभी-कभी नपुंसकता का अनुभव करने लगते हैं। जब वे किसी परायी स्त्री के साथ संभोग कर रहे हों और उस समय कोई अचानक आ जाए तो उनका शिश्न एकदम दुर्बल पड़ जाता है। ऐसी कुछ और परिस्थितियां भी हैं जिनमें आकस्मिक नपुंसकता आ जाती है। परन्तु यह नपुंसकता स्थायी नहीं होती।

मनोचिकित्सक डाक्टर फ्रैंक कैपरियों का मत है कि लगभग सभी पुरुषों को कभी न कभी अपने यौवन अथवा प्रौढ़ावस्था में किसी-न-किसी प्रकार की नपुंसकता का सामना करना पड़ता है। डाक्टर कार्ल मैनिंजर का यह मत है कि परिस्थिति के कारण उत्पन्न होने वाली नपुंसकता अल्पकालिक होती है और आसानी से दूर की जा सकती है।

परिस्थितिजन्य नपुंसकता का मुख्य कारण शारीरिक या मानसिक थकावट या भारी निराशा होती है। इससे उन्हें सहवास के प्रति कुछ समय के लिए अरुचि हो जाती है। ऐसे लोगों को अपने रोग की अनुभूति तो होती है, परन्तु उसके विषय में उन्हें पूरी जानकारी नहीं होती।

परिस्थितिजन्य अस्थायी नपुंसकता अनेक प्रकार की होती है और इसके अनेक भेद होते हैं। क्लिफर्ड नामक व्यक्ति बहुत अधिक थकावट और निरन्तर परिश्रम शीलता के फलस्वरूप अल्पकालिक नपुंसकता का शिकार हो गया था। उसकी कहानी इस प्रकार है—

वह अपनी पत्नी लौरा के साथ आनन्दपूर्वक जीवन बिता रहा था। संभोग-क्रिया से दोनों ही को आनन्द और संतोष की प्राप्ति होती थी। एक दिन की बात

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

है क्लिफर्ड कारखाने में वहुत अधिक परिश्रम करके घर लौटा। स्नान कर सैण्ड-विच खाकर वह सोने के लिए पलंग पर लेट गया।

लौरा बगल में लेटी अपने मन में उसकी पुंसत्व शक्ति का चिन्तन कर रही थी। सोचते-सोचते उसके मन में कामवासना उभरने लगी। उसकी इच्छा हुई कि उस समय उसका पति उसके साथ प्रणय-क्रीड़ा करे, प्रेमालाप करे। मन में यह विचार आते ही उसने करवट लेकर क्लिफर्ड के होंठों को धीरे से चूम लिया और उससे चिपट गई।

लौरा की आन्तरिक इच्छा को समझकर क्लिफर्ड भी उसके साथ प्रणय-क्रिया करने लगा। चूमते प्यार करते हुए भी उसके मन में वह काम हिलोर नहीं उठ रही थी जो प्रायः ऐसे अवसर पर उठा करती थी। उसके शिश्न में भी उत्थान नहीं आ रहा था। थोड़ी देर तक वह उत्थान लाने का प्रयत्न करता रहा, अन्त में निराश होकर सो गया।

दूसरे दिन क्लिफर्ड वहुत जल्दी जाग गया। नित्यकर्मों से निवृत्त होकर फिर अपनी पत्नी की बगल में आकर लेट गया। इतने ही में लौरा की आंख खुल गई। उसे रात की घटना याद आई जब उसे अपनी वासना को अतृप्त रखकर ही सो जाना पड़ा था। किन्तु उसकी कामेच्छा अब भी सोई नहीं थी। उसने क्लिफर्ड से निःसंकोच कह दिया कि उसे संभोग करने की इच्छा हो रही है।

इधर रात्रि के विश्राम के पश्चात् क्लिफर्ड भी तरोताजा हो चुका था। वह पूरे उत्साह से प्रणय-क्रीड़ा एवं संभोग में जुट गया और जब वह सम्भोग करके पृथक हुआ तो उसकी पत्नी पूर्णतया सन्तुष्ट हो चुकी थी।

जैसा कि हम पहले भी लिख चुके हैं, सम्भोग करने से पुरुष को थकावट आ जाने की बात सही नहीं है। हां, अनेक बार सम्भोग करने से शिश्न में कुछ शिथिलता आ जाती है, परन्तु वह शिथिलता अस्थायी होती है। यदि एक रात्रि में दो-तीन बार सम्भोग कर लेने के पश्चात् फिर उस रात्रि को संभोग करने की इच्छा न हो तो उस अनिच्छा को नपुंसकता का नाम नहीं दिया जा सकता। शरीर में वीर्य अपने आप बनता रहता है। थोड़े से अन्तराल के पश्चात् आंतरिक वीर्य स्रोत अपने आप ही खुल जाते हैं। उसके खुल जाने पर काम-क्रीड़ा करने की इच्छा होने लगती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

यदि काफी समय तक सहवास न किया जाए तो भी अस्थायी नपुंसकता आ जाती है। उदाहरण के लिए एक युवक सैनिक को दो वर्ष तक अपनी सेना के साथ बाहर-ही-बाहर रहना पड़ा। जब वह घर वापस आया तो पहली रात्रि को वह अपनी पत्नी के साथ संभोग करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सका। जिस तेजी से शिश्न में उत्थान आया उसी तेजी से वह समाप्त भी हो गया। अगली रात्रि को वह संभोग करने में सफल रहा। उसके पश्चात् उसे फिर कभी शिकायत नहीं हुई।

कभी-कभी प्रौढ़ावस्था में यदि संभोग करते समय कोई कर्कश स्वर सुनाई दे जाए, जोर से बादल गरजने या बिजली कड़कने लगे तो भी अस्थाई नपुंसकता आ जाती है। कुछ लोग तो ऐसे गर्जन-तर्जन के फलस्वरूप सदा के लिए ही निकम्मे हो जाते हैं।

यहां एक प्रौढ़ व्यक्ति का उदाहरण देना अप्रासंगिक नहीं होगा। उसके संभोग से उसकी पत्नी सदा प्रसन्न और सन्तुष्ट रहती थी; परन्तु जब कभी संभोग करते समय उसे कोई कठोर स्वर सुनाई पड़ जाता तो उसी समय उसका उत्थान समाप्त हो जाता था और उसकी अतृप्त पत्नी छटपटाती रह जाती थी।

उस व्यक्ति की—जिसका नाम ब्रूस था—यह धारणा थी कि उसमें यह प्रवृत्ति उसकी मां से आई है। वह भी कठोर आवाज सुनकर एकदम स्तब्ध रह जाती थी। वह बिजली के गर्जन-तर्जन को सुनकर ऐसे करने लगती थी जैसे उस पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया हो।

अपनी इस दुर्बलता का कारण समझते हुए और मनोचिकित्सकों का पथ-प्रदर्शन पाकर भी ब्रूस अपने रोग से मुक्त न हो सका। अन्त में, वह शहर छोड़-कर एक गांव में जाकर बस गया जहां शोर-गुल प्रायः कम होता है। इसके अति-रिक्त उसने अपने सोने के कमरे को साउंड प्रूफ करा लिया ताकि बाहर की आवाज उस कमरे में न जा सके। इससे उसे कुछ लाभ हुआ, परन्तु इस रोग से पूरी तरह छुटकारा न मिल सका।

कभी-कभी यह दुर्बलता उस समय और भी बढ़ जाती है जब सम्भोग करने वाले व्यक्ति के मन में यह भय समा जाए कि कहीं दूसरों को यह न मालूम हो जाए कि इस समय मैं समागम कर रहा हूं। इसी रोग से पीड़ित एक नवयुवक लेखक से मिला। वह विश्वविद्यालय में लेखक का सहपाठी था। उसने कक्षा

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

समाप्त होते ही एकान्त में अनुरोध किया, "भाई, मेरी एक समस्या सुलझा दो।"

"बताओ, क्या समस्या है ?" मैंने पूछा।

"मैं और मेरी प्रेमिका हम एक साथ उसके घर में रहते हैं। समस्या यह है कि हम दोनों तो विवाह के लिए राजी हैं, परन्तु उसके माता-पिता इस विवाह के घोर विरोधी हैं। उनका कहना है कि, "तुम इस घर में तो रह सकते हो, परन्तु हमारी पुत्री के साथ विवाह नहीं कर सकते।" वे चाहते हैं कि जब तक मैं पढ़ लिख कर अपनी आजीविका आप न कमाने लगूं तब तक विवाह की बात भी न करूं। इस बात को लेकर वे कभी-कभी मेरा अपमान भी कर डालते हैं।

लेखक के सहपाठी रेमण्ड ने यह भी बताया "साथ रहने के कारण वह और उसकी प्रेमिका जार्जिया खुलकर सम्भोग भी नहीं कर सकते। जब संभोग करते हैं तो पलंग से चर्र-चर्र की आवाज होती है। इस आवाज को सुनकर बगल के कमरे में सोने वाले जार्जिया के पिता की नींद न खुल जाए, इस आशंका से मेरी कामेच्छा बीच में ही शिथिल पड़ जाती है।"

"इसका समाधान तो बहुत सरल है। शीघ्र ही तुम दूसरा मकान ले लो।" मैंने सुझाव दिया।

कुछ सप्ताह बीतने पर रेमण्ड से इस विषय पर फिर चर्चा हुई। मैंने पूछा, "अब क्या हाल है ?"

वह बोला, "अब आनन्द ही आनन्द है। नये मकान में जाते ही यह समस्या सुलझ गई। तुम्हारी सलाह मान कर मैंने फौरन एक मकान किराये पर लिया और उसमें पहुंच गया। अब आवश्यकतानुसार जार्जिया वहां आ जाती है। वहां हम लोग खुलकर काम-क्रीड़ा और सम्भोग करते हैं। परन्तु पहले वाली दुर्बलता कभी नहीं आती। अब यह भी भय नहीं रहा कि बगल के कमरे में सोने वाला कोई व्यक्ति जागकर हम से क्या कहेगा। अब आगे-पीछे हमारा विवाह हो ही जाएगा।"

यह बात केवल श्रवणेन्द्रिय तक ही सीमित नहीं है। अन्य ज्ञानेन्द्रियों पर भी लागू होती है। जो बातें अन्य ज्ञानेन्द्रियों को पसन्द नहीं होतीं, उनसे भी पुरुषों की कामेच्छा शिथिल पड़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

उदाहरण के लिए मेरा एक ऐसे व्यक्ति से परिचय है जिसकी सूंघने की शक्ति बड़ी विचित्र है। उसे कुछ विशेष इत्र की गंध से ऊबकाई आती है। जिस रात उसकी पत्नी वैसा इत्र या क्रीम लगाकर उसकी सेज पर आती है वह प्रयत्न करके भी उसके साथ सम्भोग नहीं कर पाता। उसके शिश्न में उत्थान ही नहीं आता। वह सुस्त-सा पड़ा रहता है।

इसी प्रकार मुख, सांस, बगलों से निकलने वाली दुर्गन्ध भी पुरुष को अस्थायी रूप से नपुंसक बना देती है। इस सन्दर्भ में मैं अपने आस्कर नामक रोगी की कहानी को नहीं भुला पाता। उसकी पत्नी पॉली के दांत खराब होने के कारण उसके मुंह में बुरी दुर्गन्ध आया करती थी। आस्कर ने अनेक बार प्रयत्न किया कि वह दंत-चिकित्सक से अपना इलाज कराये। परन्तु उसने यह कह कर टाल दिया कि इससे बहुत पैसा खर्च हो जाएगा।

परिणाम यह हुआ कि पॉली की इस हठधर्मी के कारण आस्कर की काम-वासना दिन प्रतिदिन शीतल होती गई। अन्त में वह नपुंसक हो गया। उधर पॉली अपनी हठ पर अड़ी रही, हालांकि उसके सारे मसूड़े सड़ गए और उनमें पीप पड़ गई।

एक दिन अचानक पॉली का दांत घर में टूट कर गिर गया। अब उसका चेहरा भद्दा दिखाई देने लगा। वह भागी-भागी दन्त-चिकित्सक के पास गई। लगातार छः सप्ताह तक उसकी चिकित्सा करके उसने दांतों की बदबू और रोग का अन्त किया। पॉली के मुख की बदबू मिटने के साथ ही आस्कर का पुंसत्व भी लौट आया।

ऐसा मालूम होता है कि पॉली ने अपने अज्ञान के कारण इस रोग को बढ़ने दिया जिसका बदला आस्कर को अपनी नपुंसकता के रूप में चुकाना पड़ा। यदि अचानक पॉली का दांत न टूटता और वह किसी दन्त-चिकित्सक के पास न जाती तो न जाने कब तक आस्कर नपुंसक बना रहता। यह अपनी किस्म की एक ही मिसाल नहीं है, ऐसे बहुत से उदाहरण भरे पड़े हैं।

लेखक एक ऐसे दम्पत्ति से परिचित है जिसमें पत्नी रात को अपनी सेज पर जाने से पहले खूब शराब पीती और धूम्रपान करती थी। ऐसा वह यह जानते हुए भी करती थी कि उसके पति को इन चीजों से भारी घृणा है। परिणाम यह हुआ कि उसके पति में नपुंसकता के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

बहुत-सी स्त्रियां अपने पतियों को ताने देती रहती हैं कि वे नपुंसक हैं। उनमें पति या प्रेमी बनने की क्षमता नहीं है। इस प्रकार की बातों का नतीजा यह होता है कि स्वस्थ निर्दोष पुरुष भी अपने अन्दर दुर्बलता का अनुभव करने लगता है।

इस संदर्भ में हमें सिडनी नामक रोगी का स्मरण आता है। उसकी पत्नी मिर्टल की नाक पर गुस्सा चढ़ा रहता था। उसके विवाह को सत्तरह वर्ष बीत चुके थे उनके दो पुत्रियां थीं। इतना सब कुछ होने पर सिडनी दाम्पत्य जीवन के सुख से वंचित था। वह मिर्टल को भी यौन सुख प्रदान नहीं कर सका था। इसका कारण सिडनी की यह धारणा थी कि उसका शिश्न छोटा है। ऐसा सोचता ही नहीं था, समय-समय पर अपनी पत्नी से भी कहता रहता था। इसका उसके मन पर इतना बुरा असर पड़ा कि वह दिन प्रति दिन संभोग के मामले में ठंडी पड़ने लगी।

एक दिन वे आपस में विचार-विमर्श करके एक मनोचिकित्सक के पास गए। मिर्टल ने अपने ठंडेपन को स्वीकार करते हुए चिकित्सक से कहा कि सिडनी का शिश्न छोटा होने के कारण उसे संभोग में उत्साह नहीं आता। मनोचिकित्सक ने सिडनी के शिश्न की परीक्षा करके बताया कि वह बिल्कुल ठीक है और उसका आकार भी काफी है। उसने यह भी कहा कि तुम्हारी पत्नी ने व्यर्थ ही तुम्हारे शिश्न के आकार की शिकायत करके तुम दोनों के आनन्द को ठेस पहुंचाई है।

जब एक स्त्री रोग चिकित्सक से परामर्श लिया गया तो उसने भी मिर्टल को ही दोषी बताया और उसे परामर्श दिया कि, "तुम अपनी इच्छा शक्ति और लगातार अभ्यास के द्वारा सैक्स में अपनी दिलचस्पी बढ़ाओ और अपने ठंडेपन को दूर करो।"

मनोचिकित्सकों के मार्ग दर्शन और सलाह पर अमल करने से उनमें एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ और वह ठंडापन दूर हो गया जो सत्तरह वर्ष तक उन्हें निकम्मा बनाये हुए था। फिर उन्हें संभोग द्वारा चरम सुख प्राप्त करने में कभी कठिनाई नहीं हुई।"

इस प्रकार की कठिनाइयां यौन-सम्बन्धी मिथ्या धारणाओं एवं अज्ञान के कारण होती हैं। फिर भी यह निर्विवाद है कि अज्ञान के कारण दाम्पत्य जीवन को नहीं यौन सम्बन्धों को भी आघात पहुंचता है। इससे और भी घातक यह

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

धारणा है कि "संभोग पाप है," "प्रणय क्रीड़ा घृणास्पद है" "काम भावना से आत्मा पतित हो जाती है।"

उदाहरण के लिए हम हस्तमैथुन को ले सकते हैं। इसके विषय में जितनी गलतफहमियां और भ्रांत धारणाएं फैली हुई हैं उतनी शायद ही किसी अन्य विषय में हों। ऐसा नहीं है कि केवल अविवाहित व्यक्ति ही हस्तमैथुन करते हों। यह एक साधारण और निर्दोष प्रवृत्ति है। यह यौन उत्तेजना को कम करके आत्म-संतुष्टि प्राप्त करने का सबसे आसान तरीका है किन्तु आधुनिक समाज इसे घृणा की दृष्टि से देखता है। किशोरावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक इसके विषय में बुराई सुनने को मिलती है।

डॉन नामक एक युवक अपनी पत्नी क्लारा के साथ लेखक के पास आया। डॉन को बचपन से ही क्लारा द्वारा किए जाने वाले हस्तमैथुन के कारण इतनी ग्लानि हो रही थी कि वह लज्जा से अपना सिर भी नहीं उठा पा रहा था। उस ग्लानि और अशान्ति से वह बहुत दुःखी था। इस दुःख से छुटकारा पाने के लिए वह मेरे पास आया था।

उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने विवाहित जीवन के प्रारम्भिक दो वर्ष बड़े आनन्द से बिताये थे। इस आनन्द में अचानक उस दिन बाधा पड़ी जब डॉन ने क्लारा को हस्तमैथुन करते देख लिया। पत्नी के इस कार्य से उसे इतनी घृणा हुई कि उसी दिन उसने पत्नी के साथ संभोग न करने की सौगंध ले ली। वह चुपचाप यह जानने का प्रयत्न करने लगा कि क्लारा की हस्तमैथुन की आदत कब से पड़ी और यह आदत नई थी अथवा पुरानी। इसी खोज-बीन के सिलसिले में उसे मालूम हुआ कि उसकी यह आदत बहुत पुरानी थी। लेखक द्वारा पूछताछ किए जाने पर ज्ञात हुआ कि क्लारा अपनी काम पिपासा को शान्त करने के लिए ही हस्तमैथुन किया करती थी।

संभोग करने से पूर्व प्रणय क्रीड़ाओं द्वारा पत्नी को 'तैयार' करने से डॉन अपरिचित था। इसलिए शिश्न में उत्थान आते ही वह क्लारा के साथ संभोग करने लगता। इस प्रकार जल्दी अपना वीर्य-स्खलित करके स्वयं तो आत्मसंतुष्टि प्राप्त कर लेता, परन्तु क्लारा की वासना अतृप्त ही रह जाती थी। इससे दुःखी होकर उसने अपनी स्थिति अपनी मां के सामने खोल कर रख दी, मां ने दुनिया देखी थी। वह सब कुछ जानती-समझती थी। इसलिए उसने सलाह दी कि वह

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

संभोग से पूर्व हस्तमैथुन करके स्खलित हो जाए, इसके पश्चात् वह पति के साथ संभोग करे। उन दिन से वह ऐसा ही करके आत्मतृप्ति पाने लगी।

लेखक ने डॉन को समझाया कि आत्म-संतुष्टि के लिए क्लारा द्वारा किया जाने वाला यह कार्य पूर्णतया-निर्दोष और स्वाभाविक है। इसके लिए दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है। उसे यह भी परामर्श दिया गया कि पत्नी को संतुष्ट करने के लिए उसे काम-कला का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। पत्नी को चरम सुख तभी प्राप्त हो सकता है जबकि वह पूरी तरह से उत्तेजित हो जाए। जिन पत्नियों की तृप्ति नहीं होती, उन्हें सभी कुछ करने का अधिकार है।

उसके पश्चात् डॉन ने यह नियम बना लिया कि वह संभोग करने से पूर्व विविध प्रणय-क्रीड़ाओं द्वारा पत्नी को उत्तेजित कर लेता। इसमें दोनों को ही संतोषप्रद आनन्द मिलता था। यदि वे काम-विज्ञान सम्बन्धी परामर्श के लिए लेखक के पास न आये होते तो स्पष्ट है कि उनका दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण हो जाता और आश्चर्य नहीं कि तलाक तक नौबत पहुंच जाती।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 7

धार्मिक कट्टरता

धार्मिक कट्टरता, चाहे पुरुष में हो या पत्नी में, पुरुष में नपुंसकता के लक्षण उत्पन्न कर देती है। धार्मिक कट्टरता अपने आप ओढ़ी हुई स्थिति होती है, और स्वयं प्रयत्न करके इससे छुटकारा पाया जा सकता है। जब आदमी इस कट्टरता के आगे हथियार डाल देता है तो उसका दाम्पत्य सुख सदा के लिए नष्ट हो जाता है।

अपनी अंतरात्मा पर अवांछनीय व अनुचित दबाव डाल कर कोई भी व्यक्ति अपने चरित्र का विकास नहीं कर सकता, संभोग-जन्य सुख प्राप्त करना तो दूर की बात है। यहां एक उदाहरण प्रस्तुत करना अप्रासंगिक न होगा।

मेरी एक महिला मित्र एक विवाह-संस्थान में कार्य करती है। इस संस्थान का मुख्य कार्य परिवार-नियोजन है। मेरी मित्र के कार्यों और विचारों को वहां बड़े सम्मान से देखा जाता है। एक दिन उन्होंने एक पति के नपुंसक हो जाने की बात सुनाई। उसने अपनी पत्नी को समस्त सुविधाएं दे रखी थीं किन्तु वह ऐसी कट्टर ईसाई थी कि प्रणय-सम्बन्धी प्रत्येक कार्य की धार्मिक दृष्टि से नापजोख किया करती थी। उसकी कुछ विचित्र धारणाएं थीं। जैसे चुम्बन लेना-देना पाप है, सहवास के लिए उत्तेजित होना या करना अधार्मिक है, नंगे होना या किसी को नंगा देखना पाप है, इत्यादि। तात्पर्य यह है कि उनके विचार से इस क्षेत्र में जो कुछ भी होता या किया जाता है वह पाप है। प्रारम्भ में पति ने अपनी पत्नी को समझाने के बहुत प्रयत्न किए। अंत में जब सारे प्रयत्न बिल्कुल निष्फल हो गये तो पति पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह काम वासना से ही हाथ धो बैठा और नपुंसक हो गया।

मुझे उस महिला मित्र से एक और भी कहानी मालूम हुई। आलम नामक उस पति की अपनी प्रथम पत्नी आइवी के साथ बहुत अच्छी तरह से निभ रही

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

थी। दोनों ही अपने यौन-जीवन से संतुष्ट थे। पुरुष में पूर्ण पुंसत्व था, दोनों एक दूसरे पर जान छिड़कते थे, और दिल खोल का संभोग का हर प्रकार से आनन्द लेते थे। परिवार नियोजन के लिए उन्होंने किसी भी गर्भ निरोधक साधन का उपयोग नहीं किया। इन साधनों का उपयोग उनकी दृष्टि में पाप था। वैवाहिक जीवन के केवल तीन वर्ष पश्चात् एक दुर्घटना में आइवी की मृत्यु हो गई।

अनेक वर्ष पश्चात् उसने इस नई स्त्री से विवाह किया जिसका नाम ओरा था। धार्मिक दृष्टि से दोनों की विचार धाराएं एक दूसरे से विपरीत थीं। धार्मिक मामलों में आलन कठोर था, तो ओरा उदार। ओरा आलन के परिवार नियोजन सम्बन्धी विचारों से सहमत न थी। वह नए विचारों की स्त्री थी, वह जन्म निरोध को पाप मानता था, तो ओरा परिवार नियोजन को आवश्यक मानती थी। इस बात को लेकर पति-पत्नी में इतना मतभेद हो गया कि ओरा ने उसके साथ तब तक सोने से इन्कार कर दिया जब तक कि वह गर्भ निरोधक साधनों का प्रयोग करने को तैयार न हो। अन्त में आलन विवश होकर बाजार से कुछ कंडोम लाया। पहले कंडोम का प्रयोग कुछ सफल हुआ, किन्तु कुछ समय पश्चात् वह अपने मन को कंडोम के अनुकूल बनाने में असफल होने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि कंडोम लगाने पर शिश्न में उत्थान आकर भी अधिक समय तक बना नहीं रह पाता था। इससे दोनों में से किसी को भी संभोग का आनन्द नहीं मिलता था।

मेरी मित्र महिला बड़ी मुश्किल से समझा बुझाकर इस दम्पत्ति को सही मार्ग पर लाई। उसने ओरा को समझाया कि, "परिवार नियोजन से पति की अपेक्षा पत्नी को लाभ अधिक होता है। इसलिए गर्भ निरोधक साधनों का प्रयोग तुम स्वयं करो और इस प्रकार करो कि तुम्हारे पति को इसके बारे में कुछ भी मालूम न होने पावे।"

यह परामर्श निःसन्देह बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से पुरुष गर्भ-निरोध के नाम से ऐसे चिढ़ जाते हैं कि उनका जी मिचलाने लगता है। अब आलन बड़े मजे से यौन-सुख का आनन्द लेता है उसके नपुंसकता के लक्षण लुप्त हो चुके हैं। ओरा भी अब काफी चतुर बन गई है। गर्भ-निरोध को पाप मानने वाला आलन अपनी पत्नी की प्रत्येक इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार रहता है। अब पत्नी ही उसके लिए सब कुछ है। न उसे अब पहले वाली विरक्ति रही है, और न उसका मन ही छोटा है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 8

नशीली चीजें और नपुंसकता

कार्ल पी० ऐसे हंसमुख और मिलनसार युवकों में से था जिन्हें नवयुवतियां जी-जान से चाहती हैं। उस सुन्दर युवक का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। एक बार वह मेरे पास बैठा था। जब मैंने उससे कहा कि 'तुम अपने यौन-जीवन के विषय में कुछ बताओ,' तो वह चकित रह गया। फिर कुछ संभल कर बोला, "इस मामले में सब ठीक-ठाक है। मैं और मेरी पत्नी डायना दोनों ही अपने दाम्पत्य-जीवन से सुखी हैं। विवाह की पहली रात्रि से आज तक हम पूर्ण संतुष्ट जीवन बिता रहे हैं। हमारी असली समस्या यौन-सम्बन्धी नहीं, सामाजिक और आर्थिक है।"

"और कुछ ?"

"मेरी तरफ से कभी यौन-सम्बन्धी शिकायत नहीं हुई। आजकल अनेक पत्र पत्रिकाओं में नपुंसक पुरुषों तथा ठंडी स्त्रियों से सम्बन्ध जिस प्रकार के विवरण छपते हैं, इस प्रकार की कोई कठिनाई कभी हमारे सामने नहीं आई।"

"यह सचमुच सन्तोष की बात है। मानसिक अनुभवों और बाहरी परिस्थितियों के कारण पुरुषों में पुंसत्व शक्ति घटती-बढ़ती अनुभव होती है। ऐसा होने पर भी नपुंसकता ऐसी बात नहीं है जिनके कारण लज्जित होना पड़े। यह ऐसी दुर्बलता है जो अनेक बार स्वस्थ से स्वस्थ पुरुष में भी आ जाती है। तुम इस दृष्टि से सचमुच भाग्यशाली हो।"

मेरी यह बात सुनकर कार्ल कुछ देर तक चिन्ता मग्न हो अपनी ठोढ़ी खुजाने लगा। फिर बोला, "इस प्रकार की दुर्बलता का अनुभव मुझे एक बार अवश्य हुआ था। वह एक घटना मुझे प्रायः स्मरण हो जाती है।"

"क्या नपुंसकता की ?"

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

"जी हां। आप चाहें तो नपुंसकता का नाम दे सकते हैं, किन्तु मैं इसे वास्तव में नपुंसकता नहीं समझता।"

"क्या डायना के साथ ऐसा हुआ ?"

"नहीं डायना के साथ नहीं।" कार्ल ने लजाते हुए कहा, "वह एक दूसरी युवती थी। उस समय तो मेरा डायना से परिचय भी नहीं हुआ था। उस युवती का नाम एली था। मैं कई मास तक उसे अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता रहा। परन्तु मुझे सफलता नहीं मिली। वह जरा भी हाथ नहीं रखने देती थी, फिर भी वह मेरे मन-प्राण में बस गई थी और मैं उसे पाने के लिए दीवाना हो गया था। बड़ी मजेदार लड़की थी वह, डाक्टर साहब ! उस समय मेरी आयु केवल चौबीस वर्ष की थी। मैं कोशिश करके भी सफलता नहीं पा सका। परन्तु एक दिन मैंने एक दुःसाहसिक कदम उठा लिया···।"

"वह क्या ?"

मैंने मित्रों से सुन रखा था कि यदि स्त्री को नशा करा दिया जाए तो उसके साथ वह सब कुछ किया जा सकता है जो साधारण स्थिति में स्त्री कराना पसंद नहीं करती। इसलिए मैंने सोचा कि उसे नशा कराके मैं अपनी इच्छा पूरी कर लूंगा। यह सोचकर मैंने उसे शराब पिला दी। उसने भी डटकर शराब पी। परन्तु नशे में आकर भी वह तैयार नहीं हुई। मैंने सोचा कि शायद इसे अभी हल्का नशा चढ़ा है। यह सोचकर मैंने एक प्रकार की तेज मदिरा उसे काफी मात्रा में पिला दी। इसका उस पर मन चाहा असर हुआ। वह एक-एक करके अपने कपड़े उतारने लगी। साथ ही अश्लील गीतों की पंक्तियां भी गाती जाती थी। उस समय उस पर पूरा नशा चढ़ चुका था।"

मैं मनोयोगपूर्वक उसकी कहानी सुन रहा था। मैंने संकेत किया, "फिर क्या हुआ ?"

"मैं सोफे पर पड़ा हंस रहा था। मुझे प्रतीत हो रहा था कि अब मैं अपनी सफलता के लक्ष्य तक पहुंचना चाहता हूं। मैंने उसे अपनी बगल में लेट जाने को कहा। वह मेरी बगल में आकर लेट गई। मैंने उसका चुम्बन लिया। उसने इस चुम्बन का इस प्रकार स्वागत किया जैसे वह उसी की प्रतीक्षा कर रही हो, तभी मैं उस स्थिति में पहुंच गया जिसका वर्णन मैं पहले कर चुका हूं। वह बगल में काम-विह्वल हुई लेटी थी और मुझे संभोग करने के लिए आमन्त्रित कर रही

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

थी, किन्तु मेरे शिश्न में उत्थान का नाम तक नहीं था, जैसे वह बिल्कुल निर्जीव हो गया हो।"

"इसके लिए तुमने कितनी देर तक प्रयत्न किया ?"

कार्ल ने उत्तर दिया, "मुझे याद नहीं, मैं उस समय नशे में चूर हो रहा था। समय तो मैं निश्चित रूप से नहीं बता सकता। संभवतः पांच सात मिनट तो कोशिश जरूर की ही होगी। लेकिन तब तक एली हताश हो चुकी थी। मेरी इस दयनीय स्थिति को देखकर उसने घृणा से मुझे फटकार दिया।

"संभव है कि वह होश में आ गई हो।"

"संभव है। इसके बाद मैंने फिर प्रयास करना चाहा, परन्तु एली तो निराश हो चुकी थी। उसने मुझे हाथ भी न धरने दिया और बुरी तरह मुझे फटकार बताई। केवल फटकार ही नहीं बताई बल्कि बड़ी गन्दी-गन्दी गालियां भी सुनाई। इसके पश्चात् उसने फिर मेरे साथ बैठकर मदिरा नहीं पी।"

कार्ल एली की कहानी अलभ्य उदाहरणों में से नहीं है। मादक-वस्तुओं का प्रभाव अलग-अलग व्यक्तियों पर अलग-अलग पड़ता है। नशे से कौन व्यक्ति कितना प्रभावित होता है, यह बात मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक कारणों पर निर्भर करती है। कुछ व्यक्ति केवल थोड़ी-सी मदिरा पीकर अपनी सुधि गंवा बैठते हैं, और किसी पर तेज से तेज मदिरा का अत्यधिक सेवन करने पर भी कोई असर नहीं होता।

इसमें संदेह नहीं कि मदिरा का प्रभाव पुरुष की यौन प्रकृति और प्रवृत्ति पर अवश्य ही पड़ता है। अनेक अनुभवी चिकित्सकों का मत है कि मदिरा से यौन उत्तेजना में कमी आती है। साथ ही यह भी सत्य है कि यदि थोड़ी मात्रा में पी जाए तो उससे अल्पकालिक लाभ हो सकता है। स्नायुओं पर तनाव कुछ घट जाता है, लोग थोड़ी देर के लिए अपनी परेशानियों को भूल जाते हैं। इसी-लिए बहुत से चिकित्सक मदिरा सेवन की राय देते हैं। सारे दिन की कठोर मेहनत के बाद रात्रि को सोने से पहले थोड़ी-सी मदिरा पी ली जाए तो वह लाभदायक होती है। पति-पत्नी के बीच का अलगाव मिट जाता है। मस्तिष्क कुछ शांत होकर तरोताजा हो जाता है। थोड़ी मदिरा पी लेने से संभोग में थोड़ी सहायता मिलती है। मन का भार हल्का हो जाने से मनुष्य खुल कर बातें करने लगता है, किन्तु लेनी थोड़ी ही मात्रा में चाहिए। यदि स्त्रियां भी एक दो

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

घूंट मदिरा का सेवन करें तो उनके लिए भी यह अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होती है। बहुत से दम्पति विस्तर पर जाने से पहले थोड़ी मदिरा पीना अनुचित नहीं समझते। वैसे भी प्राचीन काल से सुरा-सुन्दरी का अनन्य सम्बन्ध माना जाता रहा है।

बहुत से अविवाहित युवक-युवती प्रणय-वार्ता प्रारम्भ करने से पहले थोड़ी-सी मदिरा पी लेना उपयोगी समझते हैं। इससे खुलकर बातचीत करने में सहायता मिलती है। मन में कोई झिझक नहीं रहती। हां, बहुत अधिक शराब पी लेना हानिकारक है। इससे पुरुष में यौन-सम्बन्धी दुर्बलता आ जाती है, चाहे वह अस्थायी ही क्यों न हो। जो पक्के पियक्कड़ होते हैं, वे अपनी पत्नियों के लिए दुःखदायी बन जाते हैं। बहुत अधिक मदिरा सेवन से नपुंसकता आ जाती है। यह नपुंसकता स्थायी भी हो सकती है।

मदिरा पुरुष को नपुंसक ही नहीं समाज के लिए कलंक भी बना देती है। वह अपनी प्रेयसी का अपमान ही नहीं करता, उस पर अत्याचार भी करता है। इस अत्याचार के फलस्वरूप पति-पत्नी में सम्भोग करने की इच्छा का भी लोप हो जाता है।

डाक्टर वेंजामिन कर्पमैन, डाक्टर आर्थर वामबर्ग तथा अन्य चिकित्सकों ने भी अपने अनुभवों के आधार पर इस तथ्य का प्रतिपादन किया है कि अत्याधिक मदिरा पान कर लेने से मनुष्य में अपने ही सैक्स के व्यक्ति के साथ संभोग करने की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है।

शराब बन्दी समिति ने भी यह निष्कर्ष निकाला है कि नपुंसकता का श्री गणेश करने में मदिरा का बहुत बड़ा हाथ है। समिति ने यह भी घोषित किया है कि शरावी व्यक्ति व्यक्तिगत, सामाजिक और शारीरिक मर्यादाओं को भी भूल जाता है। इन अवगुणों से परिचित होते हुए भी मदिरापान करने वाला व्यक्ति आसानी से मदिरा का परित्याग नहीं कर सकता। जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं, शराबी व्यक्ति को नपुंसकता का ही नहीं, आगे चलकर तलाक का भी सामना करना पड़ सकता है। अमेरिका की ओरेगन अल्कोहल शिक्षा समिति ने कुछ वर्ष पूर्व इस विषय पर अनुसंधान करने के लिए तीन सौ व्यक्तियों की साक्षियां ली थीं। इसके सर्वेक्षण के अनुसार छप्पन प्रतिशत शरावी व्यक्तियों के विवाह-सम्बन्धों की समाप्ति तलाकों से हुई थी। यह बात है पुरुषों के सम्बन्ध में, स्त्रियों

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

की नशा खोरी के आंकड़े और भी रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। अस्सी प्रतिशत शराबी स्त्रियों के विवाह-सम्बन्ध इसी नशे की आदत के कारण टूटे थे।

वैवाहिक सम्बन्धों पर जितना बुरा प्रभाव शराब खोरी का पड़ता है, उतना शायद ही और किसी चीज का पड़ता है। फिर भी पियक्कड़ मदिरा को अपनी पत्नी से अधिक महत्व देते हैं। मदिरा के सामने वे अपने निजी स्वास्थ्य तथा परिवार के सुख-कल्याण को कोई महत्व नहीं देते। वे स्वयं तो नपुंसक हो ही जाते हैं। अपने नाते-रिश्तों, प्यार-स्नेह के सभी बन्धनों को भुला बैठते हैं। उनकी सारी कमाई इस बोतल के पानी में घुल जाती है। जब वह अपने परिवार का पालन-पोषण नहीं कर पाता तो उससे सम्बन्ध विच्छेद हो जाना स्वाभाविक ही है। जो विवाह सब प्रकार से सफल होकर आदर्श सिद्ध हो सकता था, वह शराब की गर्मी से पिघलकर हवा में उड़ जाता है। इसलिए प्रत्येक पुरुष के लिए यह आवश्यक है कि वह यदि अपने परिवार व निजी स्वास्थ्य के लिए ऐसा न कर सके तो कम-से-कम अपने पुंसत्व की खातिर ही इस सर्वभक्षी मदिरा का परित्याग कर दे।

दूसरे मादक पदार्थ

पिछले दिनों नारकोटिक (Narcotic) पदार्थों के विषय में वैज्ञानिकों ने गहरी खोज की है। वे इस बात का पता लगाना चाहते थे कि इनके सेवन से नवयुवकों पर क्या प्रभाव पड़ता है। अन्त में वे सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अफीम और उससे बनने वाली सभी वस्तुएं—जिनकी गणना नारकोटिक पदार्थों में होती है, मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु हैं।

कुछ लोगों की वह मिथ्या धारणा है कि नारकोटिक पदार्थ इतने हानिकारक नहीं होते जितनी कि मदिरा। परन्तु वास्तविकता यह है कि मनुष्य के स्वास्थ्य और बल पर जितना दुष्प्रभाव इन चीजों का पड़ता है, उसका शतांश भी मदिरा सेवन से नहीं पड़ता। इन पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्ति अन्त में ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जिससे वे इनके सेवन के बिना जीवित ही नहीं रह सकते और किसी भी मूल्य पर नारकोटिक पदार्थों को उपलब्ध करने के लिए कटिबद्ध रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

एक सर्वेक्षण द्वारा अमेरिका की सरकार इस निष्कर्ष पर पहुंची थी कि चोरी, लूटमार, डाकेवाजी आदि करने वाले व्यक्तियों में आधे से अधिक ऐसे होते हैं जो नारकोटिक नशे के व्यसनी होते हैं।

नारकोटिक पदार्थों में अफीम, चरस, मेरिजुआना आदि कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं, जिनका नशा प्रारम्भ में बड़ा अच्छा लगता है। इनके व्यसनी को ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह बड़ा सुखी हो। इसका कारण यह है कि उसे थोड़ी देर तक शारीरिक चेतना और दुःख दर्द की अनुभूति नहीं होती। यह अनुभूति अस्थायी होती है। ज्यों ही नशे की खुमारी कम होती है, वह बहुत अधिक थकावट, उदासी, अन्यमनस्कता और पीड़ा की भयंकरता का अनुभव करने लगता है। इस पदार्थ की एक खुराक लेने के पश्चात् क्रमशः दूसरी, तीसरी और चौथी खुराक लेने की आवश्यकता महसूस होने लगती है। इस प्रकार पहली खुराक के बाद ली जाने वाली खुराकों की मात्रा बढ़ती जाती है, और बढ़ते-बढ़ते एक दिन इतनी बढ़ जाती है कि इसके दुष्प्रभाव के फलस्वरूप हृदय की गति ही सदा के लिए बन्द हो जाती है। अमेरिका की लोक स्वास्थ्य सेवा का अनुमान है कि वहां की वयस्क जनसंख्या का कम-से-कम एक प्रतिशत नारकोटिक पदार्थों का सेवन करता है। चिकित्सकों के परामर्श और पथ-प्रदर्शन से ही इस भयानक लत से छुटकारा पाया जा सकता है। वास्तव में यह समस्या है भी चिकित्सा से संबंधित। लेखक ने इस विषय पर एक अधिकारी विशेषज्ञ से जो वार्तालाप किया था, उसका संक्षिप्त विवरण पाठकों के लाभ के लिए यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

डाक्टर एस० से बातचीत

प्रश्न—डाक्टर साहब, क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि आपको नारकोटिक पदार्थों के व्यसन से सम्बन्धित समस्या में रुचि कैसे उत्पन्न हुई?

उत्तर—अपने चिकित्सा सम्बन्धी प्रशिक्षण के दौरान संयोग से ही मुझे इस विषय में रुचि हो गई। एक बार मुझे जनरल अस्पताल में नारकोटिक पदार्थों के सम्बन्ध में अनुसंधान करने वाली एक टुकड़ी के साथ कार्य करने का अवसर मिला। उस टुकड़ी से पृथक होने पर भी मैंने इस विषय में अपनी खोज जारी रखी।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रश्न—कितने समय तक आप खोज करते रहे ?

उत्तर—लगभग बारह वर्ष तक। इसके पश्चात् मैं लोक स्वास्थ्य सेवा में भर्ती हो गया। इस बात को आज अठारह मास हो चुके हैं। वहां मैं प्रशिक्षण भी ले रहा हूं और इस बुराई को रोकने का प्रयास भी कर रहा हूं।

प्रश्न—जरा यह बताइये कि यौन जीवन पर इन पदार्थों का कुप्रभाव कैसे पड़ता है ? चूंकि आपको साड़े तेरह वर्ष का गंभीर अनुभव प्राप्त है, इसलिए आप इस विषय पर अधिकारपूर्वक प्रकाश डाल सकते हैं।

उत्तर—भिन्न-भिन्न प्रकार के नारकोटिक पदार्थों का प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है फिर भी प्रभाव लगभग समान ही पड़ता है। केवल थोड़ा-सा अन्तर है। कुछ पदार्थों के सेवन से कुछ अंगों में नपुंसकता आती है जबकि शेष पदार्थ कामवासना को ही जड़ से समाप्त कर देते हैं।

प्रश्न—तो दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कुछ विशिष्ट पदार्थों का प्रभाव विशेष प्रकार का होता है ?

उत्तर—जी हां। आपका अनुमान ठीक है। साथ ही भिन्न-भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न—कृपया साधारण प्रयोग में आने वाले पदार्थों के विषय में बताइए इनसे पुरुषों की यौन प्रवृत्तियों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर—यदि इनके समस्त बुरे परिणामों का विश्लेषण किया जाए तो इनमें यौन सम्बन्धी दुर्बलता का भी समावेश हो जाएगा। वास्तव में यौन दुर्बलता का सम्बन्ध सभी मानसिक और शारीरिक दुर्बलताओं से होता है। नारकोटिक पदार्थों पर विचार करने के लिए हमें उसकी उत्पत्ति, संरचना, प्रयोग विधि तथा अन्य सम्बन्धित बातों पर विचार करना होगा। सबसे पहले मैं उन बुरे प्रभावों की चर्चा करूंगा जो शरीर की क्रिया प्रणाली पर पड़ते हैं। यौन क्रिया प्रणाली का सम्बन्ध शरीर के अवयवों से है। नारकोटिक पदार्थों के दो भेद हैं: (1) उत्तेजक, जो उत्तेजना को बढ़ाते हैं और (2) शामक अर्थात् जो उत्तेजना को समाप्त करके शांति देते हैं।

उत्तेजक पदार्थों का काम होता है सेवन कर्त्ता को जाग्रत रखना, अर्थात् उसकी यौन प्रवृत्ति को उत्तेजित करना। इसके फलस्वरूप आदमी थककर सुस्त

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

हो जाता है और मृत्यु के द्वार पर पहुंच जाता है। परन्तु मरते समय तक वह बेहोश नहीं होता। उसकी चेतना बनी रहती है।

शामक पदार्थों का कार्य. इसके सर्वथा विपरीत होता है। ये शीतलता व निराशा उत्पन्न करते हैं। इनके सेवन से गहरी नींद और बेहोशी आ जाती है। अधिक मात्रा में इसका सेवन करने से मृत्यु भी हो सकती है।

प्रश्न—सम्भवतः नींद लाने वाली गोलियों की गणना शामक पदार्थों में ही होती है?

उत्तर—आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है। बार्बिचुरेट्स शक्तिशाली मादक पदार्थ है। जो लोग प्रारम्भ में इसका प्रयोग करते हैं, वे लोग आगे चलकर फेनी-बार्बीटल, सीफोनल तथा एमिटल का प्रयोग करने लगते हैं। ये सभी शक्तिशाली और बहुत हानिप्रद पदार्थ हैं। ये पदार्थ कैपसूलों में दिए जाते हैं जो साबित ही निगल लिए जाते हैं। बहुत से लोग मदिरा का नशा बढ़ाने के लिए इनका प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त मदिरा भी अपने आप में एक प्रकार की शामक वस्तु है।

प्रश्न—बहुत से लोग सोने से पहले नियमित रूप से नींद लाने वाली गोलियों का प्रयोग कर रहे हैं। नियमित रूप से और कभी-कभी प्रयोग करने वालों में क्या अन्तर है?

उत्तर—जो लोग इसका साधारण रूप से प्रयोग करते हैं, वे गहरी नींद लाने के लिए करते हैं और जिन्हें इसका व्यसन पड़ जाता है, वे यथार्थता से दूर भागने के लिए कठिनाइयों से मुंह छुपाने के लिए ऐसा करते हैं।

प्रश्न—लत पड़ जाने के पश्चात् बार्बिचुरेट्स का प्रभाव कैसा होता है?

उत्तर—इसका प्रभाव विभिन्न शारीरिक गठन और संरचना के कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न-भिन्न पड़ता है। यदि आपको इसका व्यसन लग जाए तो आपका केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र प्रभावित हो जाएगा और आप नशे में मदमस्त हो जाएंगे। आपके मस्तिष्क में धुंधलापन, कुहासा जैसा छा जाएगा। आपकी विचार शक्ति मंद पड़ जाएगी, आपको कोई भी निर्णय लेने में कठिनाई अनुभव होगी। आपके मन पर निराशा-सी छा जाएगी। जीवन के प्रति आप उदासीन हो जाएंगे। न आपको इस बात की परवाह रहेगी कि आपकी दाढ़ी बड़ी हुई है या आपके कपड़े गंदे हो रहे हैं। यदि आप सिगरेट पीते हैं तो उसके टुकड़े

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

इधर-उधर फेंक देंगे। लापरवाही से अपने कपड़ों, बिस्तर व सामान में आग लगा सकते हैं। ऐसे लोग बहुधा सिगरेट पीते-पीते सो जाते हैं और सुलगती हुई सिगरेट बिस्तर पर गिरकर आग लगा देती है। इससे वे स्वयं भी जलकर मर सकते हैं।

प्रश्न—क्या बार्बिचुरेट्स के प्रयोग से आदमी का व्यक्तित्व भी बदल जाता है। मेरे पूछने का मतलब यह है कि क्या ऐसा आदमी वह सब कार्य कर सकता जो वह होश में रहने पर न करता ?

उत्तर—नहीं, ऐसा नहीं होता; इस दृष्टि से बार्बिचुरेट्स और मदिरा में विशेष अन्तर नहीं होता। इससे आदमी अपने वास्तविक रूप में आ जाता है।

प्रश्न—क्या शराबियों की भांति बार्बिचुरेट्स का प्रयोग करने वाले व्यक्ति भी खाने-पीने के मामले में लापरवाह होते हैं ?

उत्तर—नहीं वे लोग खूब खाते-पीते हैं इसलिए हृष्ट-पुष्ट भी खूब होते हैं।

प्रश्न—बार्बिचुरेट्स का पुरुषों की संभोग क्रिया पर कैसा प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर—बिल्कुल वैसा ही प्रभाव पड़ता है जैसा कि मदिरा का, इससे पुरुष में नपुंसकता आ जाती है। हां, प्रायः वह अस्थायी होती है।

प्रश्न—यदि कोई बार्बिचुरेट्स खासकर नपुंसक हो जाए तो क्या उसका प्रयोग बन्द कर देने से उसमें पुनः पुंसत्व आ सकता है ?

उत्तर—जरूर आ सकता है। किन्तु इस व्यसन से छुटकारा पाना ही बहुत मुश्किल है। इस लत को छोड़ने में काफी कष्ट होता है। इसलिए इसे किसी योग्य चिकित्सक की देख-रेख में ही छोड़ना चाहिए।

प्रश्न—आपके विचार से इस व्यसन को कैसे छोड़ा जा सकता है ?

उत्तर—मान लीजिए, आपको इसकी लत पड़ गई है और आप इसे छोड़ना चाहते हैं तो सबसे पहले आपको प्रयोग का तरीका बदलना होगा। जिस समय आप यह पदार्थ सेवन करते हैं उस समय से दो-तीन घंटे बाद लीजिए। इस प्रकार इसके समय में व्यवधान डालते जाइए। फिर एकाध दिन नागा कर जाइए। इसका परिणाम यह होगा कि आपकी तबियत खराब नहीं होगी, मस्तिष्क में भारीपन महसूस नहीं होगा, किन्तु लगभग चौबीस घंटे बाद आपको अपनी तबियत खराब होती मालूम होगी। दुर्बलता भी आएगी। पेट खराब होगा। जी भी मिचलाएगा। उल्टी आएगी तथा अंतड़ियों में मरोड़ उठेगी। रात को नींद नहीं

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आएगी। आपका भार कम हो जाएगा। खड़े होने पर आंखों के आगे अंधेरा आ जाएगा।

दूसरे, तीसरे या चौथे दिन आपको मिरगी जैसा दौरा पड़ेगा। यह दौरा ऐसा भयंकर होगा कि आपको समय या स्थान का कोई ध्यान नहीं रहेगा। आपका चिड़चिड़ापन बढ़ जाएगा। आपको ऐसी-ऐसी वस्तुएं दिखाई देने लगेंगी जिनका कोई अस्तित्व आपके आस-पास न होगा। रात को ड्रग सेवन छोड़ने के चौथे और सातवें दिन के बीच ये कुप्रभाव अवश्य दिखाई देने लगते हैं।

प्रश्न—क्या यह मनोवैज्ञानिक दशा है ?

उत्तर—निःसंदेह। वैसे सभी मरीजों की यह स्थिति नहीं होती, परन्तु अधिकांश व्यक्ति इसके शिकार होते हैं। कुछ को तो इस रोग से छुटकारा ही नहीं मिलता, बार्बिचुरेट्स का परित्याग करने के पश्चात् भिन्न-भिन्न लोगों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव होते हैं जो उनके शारीरिक गठन पर निर्भर करते हैं। किसी के लिए इनका एकदम परित्याग करना लाभदायक होता है और किसी के लिए धीरे-धीरे करना।

प्रश्न—ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थितियां कब तक रहती हैं ?

उत्तर—अधिक समय तक नहीं। यदि समुचित चिकित्सा न की जाए तो भी दो-तीन सप्ताह में स्थिति सुधरने लगती है।

प्रश्न—अभी थोड़ी देर पहले जब मैंने आपसे पूछा था कि क्या बार्बिचुरेट्स का परित्याग करने के पश्चात् पुरुष पुनः पुंसत्व को प्राप्त कर सकता है, तो आपने कहा था कि बहुधा कर सकता है। कृपया अपने इस कथन को अधिक स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मैंने वास्तव में ऐसा ही कहा था। कोई भी पुरुष बार्बिचुरेट्स का परित्याग करके पुंसत्व प्राप्त कर सकता है, उसे मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण देना आवश्यक है। किसी भी प्रकार का नशा हो, उसमें उन्माद अवश्य रहता है। इसलिए उसका प्रभाव यौन प्रवृत्ति तथा यौन क्रिया पर पड़ता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि बार्बिचुरेट्स का परित्याग कर देने से पुंसत्व प्राप्त नहीं हो जाता। इसके लिए मनोवैज्ञानिक पद्धति से मनोदशा बदलने की आवश्यकता है।

प्रश्न—अलकोहल और बार्बिचुरेट्स इन दोनों में से किसका प्रचार अधिक है ?

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

उत्तर—प्रचार तो अलकोहल का ही अधिक है। सच तो यह है कि अलकोहल भी एक प्रकार का नारकोटिक पदार्थ है। इतना होते हुए भी बार्बिचुरेट्स का प्रचार कम है। यही कारण है कि इसकी बुराइयों और बुरे प्रभावों की ओर साधारण लोगों की तो बात ही क्या चिकित्सकों का भी ध्यान कम ही गया है।

प्रश्न—क्या बार्बिचुरेट्स के अतिरिक्त कुछ और भी खतरनाक शामक नारकोटिक हैं?

उत्तर—हां, हैं तो। मेरीजुआना या भारतीय गांजा और भांग हैं। इनके अतिरिक्त अफीम या अफीम से बनने वाली अन्य वस्तुओं की गणना भी इनमें की जा सकती है। कुछ दूसरे सिंथेटिक पदार्थों का प्रभाव भी अफीम के समान ही हानिकारक होता है।

प्रश्न—कृपया मेरीजुआना के बारे में कुछ बताइए। विशेषकर इस बात पर रोशनी डालिए कि यह सैक्स की प्रवृत्तियों को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर—सबसे पहले मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि मेरीजुआना के बारे में बहुत-सी गलत फहमियां हैं। मेरीजुआना भांग की पत्तियों से बनाया जाता है। वैसे तो इसे लत डालने वाली वस्तु नहीं कहा जा सकता, यह लगभग तम्बाकू के समान ही है। मेरीजुआना का प्रयोग करने वाला जब इसका परित्याग कर देता है तो कोई असाधारण स्थिति उत्पन्न नहीं होती। कुछ अनुभवी व्यक्तियों का तो यह भी मत है कि मेरीजुआना का परित्याग करना सिगरेट छोड़ने से भी आसान है फिर भी यह अलग-अलग व्यक्तियों की प्रकृति पर निर्भर करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसके प्रयोग से व्यक्ति और समाज दोनों को ही भारी हानि होती है। मदिरा की अपेक्षा इससे यौन-स्वच्छंदता अधिक मात्रा में बढ़ जाती है। मेरीजुआना की पार्टियां वास्तव में व्याभिचार के जबरदस्त अड्डे होते हैं। यौन प्रवृत्ति के लिए यह उत्तेजक है, शामक नहीं; इससे कामोत्तेजना में वृद्धि होती है। यदि आप जैसा गंभीर व्यक्ति भी सिगरेट में मेरीजुआना भर कर पिए तो वह भी स्कूली बच्चों की तरह अट्ठहास करने और ठहाके मारने लगेगा। मस्तिष्क पर हल्का-सा नशा छा जाएगा, आंखें लाल हो जाएंगी। पियक्कड़ की भांति भूख लगने लगेगी। समय और स्थान का बोध नहीं रहेगा। मिनट घंटों के समान और घंटे मिनटों के समान लगने-लगेंगे। चीजों के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आकार परिवर्तित रूप में दिखाई देंगे। स्त्रियों से छेड़-छाड़ करने की इच्छा होगी और आप यौन चेष्टाओं में लग जायेंगे।

प्रश्न—आपके मतानुसार चरस, गांजा, भांग आदि की आदत ऐसी नहीं है जिसे छोड़ा न जा सके। फिर भी आप कहते हैं कि वैयक्तिक और सामाजिक दृष्टि से यह बहुत हानिकारक है। यह कैसे ?

उत्तर—इन वस्तुओं को सिगरेट, तम्बाकू आदि में मिलाकर पीने से मनुष्य का झुकाव ऐसे बुरे कार्यों की ओर हो जाता है जिनकी ओर सामान्य मनःस्थिति में नहीं होता। इनके उपयोग से मनुष्य दुराचारी हो जाता है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि मेरीजुआना का सेवन करने वाले लोग अन्य नारकोटिक पदार्थों के भी आदी हो जाते हैं। पहले वे धूम्रपान करने लगते हैं, फिर चरस, गांजा और उसके पश्चात् अफीम का नशा करने लगते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका सारा जीवन ही मिट्टी में मिल जाता है।

प्रश्न—संभवतः इस दिशा में सबसे पहले नवयुवक ही कदम उठाते हैं क्योंकि वे साहसी होते हैं।

उत्तर—जी हां, वे साहसी ही नहीं होते अज्ञानी, भावुक और चंचल भी होते हैं।

प्रश्न—संभवतः आप यह कहना चाहते हैं कि मेरीजुआना अपने आप में इतना हानिकारक नहीं है जितना कि उसके अनुगामी पदार्थ; अर्थात् मेरीजुआना की लत पड़ जाने के बाद शनैः-शनैः अन्य नशों की भी लत पड़ जाती है जिससे शरीर को अनेक प्रकार की हानियां पहुंचती हैं और अंत में वे मृत्यु का कारण भी बन जाते हैं।

उत्तर—जी हां, आपने मेरा मतलब ठीक ही समझा है।

प्रश्न—यदि पति-पत्नी दोनों ही मेरीजुआना का उपयोग करें तो क्या यह उचित होगा ?

उत्तर—बिल्कुल नहीं। उन्हें उसका उपयोग नहीं करना चाहिए। यदि कभी उन्हें इसके उपयोग की आवश्यकता प्रतीत हो तो उन्हें किसी मनोचिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। यह ठीक है कि इससे नपुंसकता को दूर करने में सहायता मिलती है। इसकी लत मदिरा के समान ही है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को स्त्री के साथ नृत्य करने में भय लगता है या उसे क्लब में भाषण करने

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

का साहस नहीं होता या अपनी वेतन वृद्धि के लिए अपने स्वामी से अनुरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता तो वह थोड़ी-सी मदिरा पीकर अपने अन्दर साहस संचित कर लेता है। ऐसे व्यक्ति मदिरा पान कर लेना इसलिए आवश्यक समझते हैं कि वे पिये बिना कुछ काम करने की बात सोच ही नहीं सकते। यदि कोई पुरुष संभोग करने से पहले थोड़ा-सा मेरीजुआना लेता है तो यह भी शराब पीने जैसी ही बात है। वास्तव में ऐसे लोगों को तो इसे छूना भी नहीं चाहिए।

प्रश्न—संभवतः आपके कहने का तात्पर्य यह है कि संभोग जब स्वयं ही आनन्दप्रद होता है तो इसके लिए बाहरी साधनों का प्रयोग क्यों किया जाये ?

उत्तर—बिल्कुल यही बात है।

प्रश्न—आपने अफीम और उससे बनने वाली वस्तुओं को शामक कहा है। ऐसा क्यों ?

उत्तर—आधुनिक साहित्य में अफीम की प्रशंसा में बड़े लम्बे-चौड़े पुल बांधे गये हैं। पहले लोग खाकर या सूंघकर अफीम का सेवन करते थे। अब सुई द्वारा अफीम का सत शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है।

अफीम से जो-जो वस्तुएं बनती हैं, उन सब में मारफीन होता है जो वास्तव में अफीम का ही प्रमुख अल्कलाइड रूप है। यह सफेद रंग का पारदर्शक पदार्थ होता है जो चखने में कड़वा लगता है। इसका प्रयोग करने से आलस्य और तन्द्रा आने लगती है। यदि इसका उपयोग औषधि के रूप में किया जाए तो कुछ आराम मिलता है। फिर भी इस शक्तिशाली पदार्थ का व्यसन अत्यन्त हानिकारक होता है। इससे निर्मित 'हेरोइन' की लत तो बहुत ही नुकसान देती है। इसका नाम मारफीन क्यों पड़ा, इसकी भी एक मनोरंजक कहानी है। ग्रीक साहित्य में स्वप्न एवं निद्रा की अधिष्ठात्री देवी का नाम मारफीयस है। मारफीन के सेवन से आदमी को आलस्य और खुमारी आने लगती है और पिनक में उसका मस्तिष्क जमीन आसमान के कुलावे मिलाने लगता है, इसलिए उस ग्रीक देवी के नाम पर इसका नाम मॉरफीन रख दिया गया।

कोई भी चतुर चिकित्सक आसानी से अफीमची को पहचान सकता है, चाहे वह कितने ही व्यक्तियों के बीच में बैठा हो। उसकी सिकुड़ी पलकें, फैली हुई पुतलियां उसकी ओर संकेत कर ही देती हैं। इसकी लत इतनी बुरी होती है कि इसका सेवनकर्त्ता इसके बिना रह नहीं सकता। वह अपने सारे खर्च बन्द कर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

देगा, परन्तु अफीम के लिए पैसे जरूर जुटा लेगा। मारफीन का सेवन करने वालों को स्थायी रूप से अपच रहने लगती है।

प्रश्न—डाक्टर साहब यह भी बताने की कृपा कीजिए कि अफीम और उससे निर्मित अन्य पदार्थ यौन-सक्रियता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? क्या इसके प्रभाव से कोई पुरुष नपुंसक बन सकता है?

उत्तर—जरूर बन सकता है। मारफीन का प्रयोग पुरुष की ही नहीं स्त्री की यौन सक्रियता को भी कम कर देता है। अत्यन्त अल्पकाल में ही उनकी कामवासना मन्द पड़ जाती है। पुरुषों की तो शारीरिक स्थिति ही बिगड़ जाती है। स्त्रियों का मासिक धर्म होना बन्द हो जाता है जिससे उनमें गर्भ धारण करने की क्षमता ही समाप्त हो जाती है। अनेक दम्पत्तियों की तो इसके फलस्वरूप आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि स्त्रियों को विवश होकर वेश्यावृत्ति की शरण देनी पड़ती है।

मारफीन अथवा उससे बनी हुई वस्तुओं का जो लोग निरन्तर सेवन करते हैं उनकी काम प्रवृत्ति धीरे-धीरे दुर्बल हो जाती है। यही बात शारीरिक स्थिति पर भी लागू होती है। उनकी एकमात्र इच्छा, अभिलाषा यही रह जाती है कि उन्हें अधिक-से-अधिक मात्रा में मारफीन मिल जाए।

प्रश्न—जब उनकी ऐसी स्थिति हो जाती है तो वे इस लत को पालते ही क्यों हैं?

उत्तर—वे क्यों पालते हैं, अफीम स्वयं उन्हें इस स्थिति में घसीट ले जाती है। एक बार जब उनके शरीर में अफीम पहुंच जाती है तो उन्हें कुछ विचित्र-सा आनन्द आने लगता है। इसका नतीजा यह होता है कि पहले तो उसके मन में अफीम के लिए लालसा जाग्रत होती है और कुछ दिन बाद वह उसके लिए बेचैनी अनुभव करने लगता है। उसकी यह बेचैनी निरन्तर बढ़ती रहती है और अफीम मिलती रहने पर भी उसकी लालसा समाप्त नहीं होती, बल्कि अधिकाधिक उत्कट ही होती जाती है।

प्रश्न—क्या आप यह बता सकते हैं कि मारफीन लेने पर कैसा अनुभव होता है?

उत्तर—कल्पना कीजिए कि आप मारफीन लेने के अभ्यस्त हो गए हैं और आपको इसकी आवश्यकता है। यद्यपि आप इसकी गोली खा सकते हैं तो भी

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आप इसे सुई (इंजेक्शन) के द्वारा लेना ही अधिक पसन्द करेंगे । इसलिए आप सुई ही लेंगे ।

सुई लेने के थोड़ी देर बाद ही आपको ऐसा अनुभव होगा कि जिस स्थान पर आपके सुई लगी थी वहां की त्वचा सूज गई है और वहां खुजली मचने लगती है। फिर आप देखेंगे कि वहां दाग पड़ गया है। फिर आप एक आरामदेह आलस्य में निमग्न हो जाते हैं। अन्दर ही अन्दर एक नशीली गर्मी की लहर दौड़ने लगती है। अब न कोई पीड़ा अनुभव होती है और न कोई बेचैनी, सारी चिन्ताएं भी आपसे दूर भागती नजर आती हैं। यह दशा आपको बड़ी अच्छी लगती है, परन्तु यह अधिक समय तक नहीं टिकती। अब सुई का प्रभाव समाप्त हो चुका होगा। आपको फिर सुई लगवाने की आवश्यकता अनुभव होने लगती है। इसके बिना बेचैनी बढ़ने लगेगी। परिणाम यह होगा कि आप दूसरी सुई लेने की तैयारी करेंगे। यदि आप अस्पताल में रोगी के रूप में रह रहे होते तो डाक्टर आपकी पीड़ा दूर करने के लिए एक हल्की-सी खुराक—उदाहरण के लिए सोलह घंटे के लिए एक ग्रेन—देता। परन्तु आप जिस स्थिति में पहुंच चुके हैं, उसमें आपको कम से कम 75 ग्रेन की आवश्यकता है। इस मात्रा से दस-पन्द्रह आदमियों को आसानी से मौत के घाट उतारा जा सकता है।

प्रश्न—यदि मारफीन से छुटकारा पाने की कोशिश की जाए तो क्या यह अवधि सचमुच बहुत दुखदायी सिद्ध होगी ?

उत्तर—जी हां। यह अवधि साधारण रूप से ही नहीं, अत्यन्त दुखदायी सिद्ध होगी। यदि इसका प्रयोग अकस्मात् बन्द कर दिया जाए तो आपको पहले तो अस्थायी निद्रा आएगी। चार-छः घंटे बाद जब नींद टूट जाएगी तो भयानक तड़पन शुरू हो जाएगी। आंखों से आंसू बहने लगेंगे। नाक से इस प्रकार पानी बहेगा जैसे जुकाम हो गया हो। शरीर में कंपकंपी उठेगी। बार-बार जंभाई और गहरा पसीना आएगा। खाने की बिल्कुल इच्छा नहीं होगी। सारे शरीर पर चकत्ते पड़ जायेंगे और आंखों की पुतलियां फैल जाएंगी ।

दूसरे दिन कंपकंपी और बढ़ जाएगी। मांसपेशियां ऐंठने लगेंगी । कमर, बांहों और पैरों में दुःसह पीड़ा होगी। पैरों में तो इतनी ऐंठन होगी कि आप उन्हें जोर-जोर से पटकने लगेंगे।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

गर्मी की ऋतु में भी आपको इतने जोर की ठंड लगेगी कि आपको भारी कंबल ओढ़ना पड़ेगा। मिचली आएगी, उल्टी व पतले दस्त लग जाएंगे। एक दिन में ही आपका भार दो से पांच किलो तक घट जाएगा।

प्रश्न—कितने समय तक यह भयानक स्थिति चलेगी ?

उत्तर—लगभग चार दिन तक। इसके बाद आपको कुछ चैन मिलेगा। सातवें दिन दुर्बलता और घबराहट होगी। उस दिन आपको नींद भी नहीं आएगी परन्तु ऐसा प्रतीत होगा कि आपकी संकट की घड़ी टल गई है। फिर भी कुछ महीनों तक कभी-कभी मन में उदिग्नता आती रहेगी। इस लत से छुटकारा दिलाने के लिए चिकित्सक प्रायः हल्के रूप में मारफीन देते हैं और उसकी भी मात्रा धीरे-धीरे कम करते जाते हैं। इस हल्के रूप को 'मैथाडोन' कहते हैं। इससे रोगी के कष्ट में कमी आ जाती है।

प्रश्न—अब तक केवल मारफीन की ही चर्चा हुई है। क्या 'हेरोइन' आदि का भी इसी प्रकार बुरा प्रभाव पड़ता है और क्या उससे भी इसी प्रकार छुटकारा पाया जा सकता है ?

उत्तर—जी हां। केवल समय अधिक लगता है और कष्ट भी अधिक होता है।

प्रश्न—जबकि मारफीन, हेरोइन आदि के निरन्तर प्रयोग से पुरुष नपुंसक हो जाता है तो फिर उसे सुजाक कैसे हो जाता है ?

उत्तर—इसके अनेक कारण हैं। कुछ लोग अशुद्ध सुई लगाने से सुजाक के शिकार हो जाते हैं। कल्पना कीजिए एक सुई सुजाक के रोगी को लगाई गई। यदि उसी सुई को बिना भली-भांति साफ और स्टरलाइज्ड किए किसी दूसरे पुरुष के शरीर में लगा दिया जाए तो निस्संदेह इस दूसरे रोगी को भी सुजाक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त बहुत से व्यक्ति नारकोटिक के आदी होने से पहले ही सुजाक से पीड़ित होते हैं। कुछ लोग सम-यौन सम्भोग के आदी होते हैं। ऐसे लोगों में यह संक्रामक रोग आसानी से फैल जाता है। सम-यौन सम्भोग कराने वाले पुरुष बहुधा नारकोटिक पदार्थों के व्यसनी होते हैं, और वे उसके लिए धन प्राप्त करने के उद्देश्य से ऐसा कुकर्म करते हैं।

प्रश्न—क्या बार्बिचुरेट्स, मेरीजुआना, मारफीन तथा हेरोइन के अतिरिक्त कुछ और भी शामक पदार्थ हैं ?

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

उत्तर—हां, ऐसे कई शामक हैं। इनमें काडेलिन, डिलांडिड, डीमेरल आदि की गणना की जा सकती है। इन सभी का प्रभाव एक जैसा ही पड़ता है। शामकों की बात छोड़कर आइए, उत्तेजकों की चर्चा करें। जैसा कि मैं बता चुका हूं, उत्तेजक नारकोटिक पदार्थ थकान को दबाकर रोगी को उस समय भी जाग्रत रखते हैं जबकि उसे नींद की बहुत आवश्यकता होती है। ऐसे पदार्थों में कोकीन का प्रचार बहुत अधिक है। यह कोका नामक पौधे से प्राप्त की जाती है। पुराने जमाने में लोग अपनी थकान और भूख मिटाने के लिए इसके पत्तों को चबाया करते थे। आजकल इसे इंजेक्शन के द्वारा शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है। कुछ लोग इसे सूंघते भी हैं।

आजकल युवक पहले कोकीन का उपयोग करते हैं। इसके बाद वे हेरोइन के अभ्यस्त हो जाते हैं। वैसे भी केवल कोकीन का प्रयोग बहुत कम होता है। अधिकतर यह मारफीन या हेरोइन के साथ ली जाती है ?

प्रश्न—यौन प्रवृत्ति पर कोकीन का क्या असर होता है।

उत्तर—कोकीन का सेवन करने वालों का कहना है कि इसका इन्जेक्शन लगवाने के पश्चात् वैसा ही आनन्द प्राप्त होता है जैसा कि सम्भोग करते समय होता है किन्तु यह आनन्द स्थायी नहीं होता। इसके लिए फिर दूसरी और तीसरी खुराक लेनी पड़ती है। निरन्तर होने वाली इन आवृतियों के फलस्वरूप रोगी भयभीत हो जाता है; पसीना आने लगता है और आंखों की पुतलियां फैल जाती हैं। रोगी के हाथ कांपने लगते हैं। आवाज बहुत मन्द और अस्पष्ट हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अध्याय 9

शारीरिक नपुंसकता

शारीरिक नपुंसकता के अनेकों कारण हो सकते हैं परन्तु इसके लिए मुख्य रूप से नीचे लिखे कारण उत्तरदायी हैं—

1. मूत्रमार्ग का अपने ठीक स्थान पर होने की वजाय किसी अन्य स्थान पर होना।
2. प्रोस्टेट ग्रन्थि में विकार उत्पन्न हो जाना।
3. जननेन्द्रीय में कोई रोग उत्पन्न हो जाना।
4. केन्द्रीय तन्त्रिका-तन्त्र का कोई दोष।
5. शारीरिक कमजोरी।
6. नये या पुराने रोग।
7. मदिरा व नारकोटिक पदार्थों का अधिक मात्रा में सेवन करना।
8. हारमोन उत्पादन में कमी।
9. वढ़ती हुई आयु, आदि-आदि।

वैसे तो अधिकांश चिकित्सक मदिरा और नारकोटिक दवाओं के अभ्यस्त पुरुषों में पाई जाने वाली नपुंसकता को भी शारीरिक नपुंसकता की श्रेणी में रखते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि इन लोगों में यौन दुर्बलता का कारण मनोवैज्ञानिक होता है और इनका उपचार भी मनोवैज्ञानिकों द्वारा ही होना चाहिए। चिकित्सकों का मत है कि चालीस वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों की यौन सामर्थ्य में कमी शारीरिक दुर्बलता के कारण आती है। इन डाक्टरों ने यह भी कहा है कि पचास-साठ तथा इससे भी अधिक आयु के स्त्री-पुरुषों के लिए यौन समागम आवश्यक है। डाक्टर हेरी वेन्जामिन, एम० डी०, जो एक प्रसिद्ध यौन विशेषज्ञ हैं, उनका कहना है कि अधेड़ आयु और वृद्ध व्यक्तियों के लिए यौन सम्प्रयोग स्वास्थ्यवर्धक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

सामान्यतः लोग ऐसा विचार रखते हैं कि अधेड़ आयु नपुंसकता लाती है क्योंकि इस आयु में जननेन्द्रीय छोटी और दुर्बल हो जाती है परन्तु यह धारणा गलत है।

पिछले वर्षों में अमेरिका में बुढ़ापे के कारण पुंसत्व शक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच करने के लिए विशेषज्ञों की एक कमेटी बनाई गई थी जिसने 60 वर्ष से लेकर 90 वर्ष तक की आयु वाले 832 पुरुषों की विस्तृत जांच करके नपुंसकता के सम्बन्ध में कुछ आंकड़े एकत्रित किए थे। इस दल की रिपोर्टों के अनुसार 69 वर्षीय वृद्धों में केवल 16 प्रतिशत, 74 वर्षीय वृद्धों में केवल 30 प्रतिशत और 90 वर्षीय वृद्धों में केवल 45 प्रतिशत ही नपुंसक थे। इस रिपोर्ट से तथा बाद में की गई अन्य खोजों से यह तथ्य सिद्ध हो जाता है कि वृद्धावस्था में भी पुंसत्व शक्ति बनी रहती है।

शारीरिक नपुंसकता का इलाज मेडीकल डाक्टरों अर्थात् वे चिकित्सक जो औषधियों या शल्य क्रिया से चिकित्सा करते हैं उनके द्वारा होना चाहिए क्योंकि इन समस्याओं के विशेषज्ञ ये लोग होते हैं। इसलिए लेखक ने एक प्रसिद्ध मेडीकल डाक्टर से इस सम्बन्ध में परामर्श करना उचित समझा। इस उद्देश्य से लेखक ने डाक्टर बी० से काफी देर तक विचार विनिमय किया। इस बातचीत का टेप रिकार्ड यहां दिया जा रहा है।

प्रश्न—डाक्टर साहब ! आप यूरोलॉजी और एन्डोक्रिनोलॉजी के विशेषज्ञ हैं। इस नाते आप दोनों विज्ञानों की परिभाषा बताने का कष्ट करें।

उत्तर—डाक्टर साहब ! यूरोलॉजी चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा है जिसमें जननांग सम्बन्धी शिकायतों और दोषों का अध्ययन व उपचार किया जाता है। एन्डोक्रिनोलॉजी में ऐन्डोक्राइन ग्लैण्डस अर्थात् हारमोन उत्पन्न करने वाली ग्रन्थियों तथा हारमोनों का अध्ययन किया जाता है। चूंकि मैं ऐन्डोक्रिनोलॉजिस्ट हूं अतः मेरे लिए इन दोनों ही शाखाओं का ज्ञान रखना जरूरी है।

प्रश्न—क्या आपके रोगियों में केवल पुरुष ही होते हैं ?

उत्तर—नहीं ! स्त्री और पुरुष दोनों ही मेरे मरीजों में ही होते हैं क्योंकि यूरोलॉजी का सम्बन्ध दोनों से ही है। परन्तु स्त्रियां मेरे पास बहुत कम आती हैं। वे अपने उपचार के लिए गैनेकालॉजिस्टों के पास जाती हैं क्योंकि स्त्री रोगों

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

के विशेषज्ञ ये डाक्टर ही होते हैं। इसलिए आप कह सकते हैं कि मेरे अधिकतर रोगी पुरुष ही होते हैं।

प्रश्न—आपके पास अधिकतर किस आयु के मरीज आते हैं ?

उत्तर—मेरे मरीजों में हर उम्र के लोग शामिल हैं।

प्रश्न—तो क्या बच्चे भी आपके पास आते हैं ?

उत्तर—जी हां। बात यह है कि जनन अंग सम्बन्धी कुछ त्रुटियों को दूर करने के लिए सर्जरी कुछ आवश्यक-सी है और आपरेशन यदि बचपन में किए जाएं तो सफलता अच्छी मिलती है इसलिए हर उम्र के लोग मेरे पास आते हैं।

लेकिन सच्चाई यह है कि वृद्ध लोगों की समस्याओं के सम्बन्ध में आजकल के चिकित्सकों ने काफी कार्य किया है अतः बुढ़ापे के कारण उत्पन्न होने वाली सैक्स सम्बन्धी उलझनों के समाधान के लिए मेरे पास काफी संख्या में वृद्ध लोग आते हैं।

प्रश्न—ये वृद्ध लोग आमतौर पर क्या समस्या लेकर आते हैं ?

उत्तर—इनमें अधिकतर पुरुष प्रोस्टेट वृद्धि की समस्या लेकर आते हैं। चालीस वर्ष से अधिक आयु के अधिकांश पुरुषों में प्रोस्टेट ग्रन्थि बढ़ जाती है। जब यह ग्रन्थि बढ़ जाती है तो यह मूत्रमार्ग को दबा देती है जिससे मूत्र थोड़ा-थोड़ा करके निकलता है और मूत्राशय में हर समय कुछ मात्रा मूत्र की एकत्रित रहती है जिसके कारण रोगी को हर समय मूत्राशय में भारीपन महसूस होता रहता है और पीड़ा भी होती है। फलस्वरूप रोगी पुरुष यौन समागम करने में असमर्थ हो जाता है।

प्रश्न—बढ़ी हुई प्रोस्टेट ग्रन्थि को ठीक करने का इलाज किस प्रकार होता है ?

उत्तर—इसकी एकमात्र सफल चिकित्सा शल्य-क्रिया ही है। शिश्न-मुण्ड के छोर की तरफ मूत्रमार्ग में स्टैनलैस स्टील की एक पतली-सी नली डाली जाती है। जब यह नली प्रोस्टेट ग्रंथि के उस भाग तक पहुंच जाती है जिसने बढ़कर मूत्रमार्ग को अवरुद्ध कर रखा है तो इसके अन्दर लगे हुए नन्हें-नन्हें ब्लेडों को घुमाया जाता है जो प्रोस्टेट के फूले हुए मांस को काट देते हैं और इस प्रकार मूत्रमार्ग साफ हो जाता है। रोगी का कष्ट समाप्त हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रश्न—क्या प्रोस्टेट पर उपरोक्त शल्यक्रिया होने से पुंसत्व शक्ति मारी जाती है ?

उत्तर—शल्यक्रिया से उसकी पुंसत्व शक्ति पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। वास्तव में बहुत से रोगी जो काफी समय से बढ़ी हुई प्रोस्टेट ग्रंथि के कारण कष्ट उठा रहे थे और उन्होंने सैक्स में दिलचस्पी लेना ही छोड़ दिया था, इस शल्यक्रिया हो जाने से कष्ट मुक्त हो जाते हैं, उन्हें बड़ी राहत महसूस होती है और उनकी यौन सक्रियता पुनः सामान्य स्तर पर आ जाती है।

प्रश्न—आपने अभी बताया था कि आपके रोगियों में बच्चे भी होते हैं। बच्चों के साथ मुख्यतः क्या समस्या होती है ?

उत्तर—मेरे मरीज बच्चों में केवल वे ही होते हैं जिनके शिश्न की रचना में जन्म से ही कोई त्रुटि होती है। जैसाकि आप जानते हैं कि मूत्रमार्ग शिश्न के नीचे के भाग में से गुजरता हुआ शिश्नमुण्ड (सुपारी) के मुंह पर थोड़ा नीचे की ओर खुलता है। कभी-कभी ऐसा रोगी आ जाता है जिसका मूत्रमार्ग शिश्न मुण्ड पर न खुलकर लिंग की ऊपर की सतह पर खुलता है। कई केसों में ऐसा भी होता है कि मूत्र मार्ग शिश्न के नीचे के भाग में खुलता है। इन त्रुटियों के कारण आगे चलकर शिश्न प्रायः टेढ़ा पड़ सकता है, पेशाव करते समय उसे पीड़ा हो सकती है और रोगी यौन समागम नहीं कर सकता। वैसे मूत्रमार्ग यदि अपने ठीक स्थान पर न खुले तो यह जरूरी नहीं है कि आगे चलकर उसका शिश्न टेढ़ा ही हो जाए लेकिन रोगी के मन में हमेशा यह धारणा बनी रहती है कि उसको निकम्मा शिश्न मिला है अतः वह हीनता की भावना का शिकार हो जाता है जिसका परिणाम नपुंसकता है।

प्रश्न—इन केसों में आप क्या करते हैं ?

उत्तर—हम प्लास्टिक सर्जरी द्वारा मूत्रमार्ग को उसी स्थान पर खोल देते हैं जहां उसे होना चाहिए। इस प्रकार रोगी कष्ट से भी बच जाता है और भविष्य में सन्तान उत्पन्न भी कर सकता है।

प्रश्न—क्या आपके पास ऐसे केस भी आए हैं जिनमें बच्चे का शिश्न जन्म से ही गायब हो ?

उत्तर—मेरे पास अब तक ऐसा केस कोई नहीं आया। अलबत्ता मैंने ऐसे केस जरूर देखे हैं जिनमें शिश्न अपेक्षाकृत छोटा होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रश्न—शिश्न में और किस प्रकार की त्रुटियां आ सकती हैं।

उत्तर—कई बार ऐसा होता है कि चोट लग जाने से शिश्न की मांस-पेशियां कुचल जाती हैं जिससे शिश्न में रक्त संचालन भली-भांति न होने के कारण उत्थान नहीं आ सकेगा और पुरुष नामर्द बन जाएगा।

प्रश्न—तो क्या कुचली हुई मांस-पेशियां कभी ठीक नहीं होतीं ?

उत्तर—स्पष्ट है कि उपचार न किए जाने पर वे स्वयं ठीक नहीं हो सकतीं। यदि शिश्न पर मामूली चोट आई है तो केवल मरहम-पट्टी से काम चल जाता है परन्तु यदि इसकी पेशियां कुचल गई हैं तो सर्जरी द्वारा उन्हें ठीक-ठाक करना पड़ता है क्योंकि आप जानते ही होंगे कि शिश्न में उत्थान लाने के लिए इसकी मांस-पेशियों का स्वस्थ रहना बड़ा जरूरी है।

प्रश्न—क्या शिश्न की मांस-पेशियों को व्यायाम द्वारा सबल बनाया जा सकता है ताकि शिश्न में दृढ़ता और उत्थान दोनों ही समुचित मात्रा में आ सकें ?

उत्तर—ऐसा संभव तो हो सकता है डाक्टर साहब लेकिन मेरी जानकारी में ऐसा हुआ नहीं है। अलबत्ता औरतों के लिए कुछ व्यायाम ऐसे जरूर हैं जिनसे योनि की कमजोर मांस-पेशियां सुदृढ़ हो जाती हैं और ढीली योनि सामान्य स्वस्थ अवस्था में आ जाती है। हो सकता है कि भविष्य में पुरुषों के लिए भी इस प्रकार के व्यायाम बनाए जा सकें।*

प्रश्न—क्या यह संभव है कि बहुत अधिक समय तक शिश्न में उत्थान बना रहे ?

उत्तर—बड़ा दिलचस्प सवाल पूछा है आपने डाक्टर साहब। पुरुष अपनी इच्छा से तो अधिक समय तक उत्थान बनाकर नहीं रख सकता, परन्तु लाखों में से किसी एक पुरुष को प्रकृति उपहार में उत्थान दे देती है। पुरुष यौन समागम करता है परन्तु वीर्य स्खलित नहीं होता। शिश्न में उत्थान बना रहता है। पुरुष कई-कई बार समागम करता है परन्तु न तो स्खलित होता है और न उत्थान में कमी आती है। उत्थान कई दिनों बल्कि हफ्तों तक कायम रहता है।

---

*पुरुषों के लिए कई प्रकार के व्यायामों का आविष्कार अब हो चुका है। देखिए डाक्टर कालीचरन का 'सैक्स ऐफीशियन्सी ट्रेनिंग कोर्स'।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

यह एक विचित्र प्रकार की बड़ी कष्टदायक नपुंसकता है जिसको 'प्रियापिज्म' कहते हैं।

प्रश्न—प्रियापिज्म की अवस्था किस कारण से उत्पन्न हो जाती है ?

उत्तर—प्रियापिज्म साधारणतः इस बात का संकेत देता है कि किसी गम्भीर रोग ने शरीर पर आक्रमण कर दिया है जिसके कारण मेरुरज्जू (Spinal chord) तथा इससे निकलकर जननांगों में जाने वाली उन तन्त्रिकाओं में जो शिश्न के उत्थान पर नियन्त्रण रखती हैं—क्षोभ (Irritation) उत्पन्न हो गया है। कभी-कभी शिश्न में आने वाली रक्तवाहिनियों में कुछ गड़बड़ हो जाने के कारण भी प्रियापिज्म उत्पन्न हो जाता है।

प्रश्न—तो आपके कहने का यह अर्थ है कि शिश्न मेरुरज्जु के नियन्त्रण में रहता है ?

उत्तर—जी हां ! कुछ ऐसी ही बात है। मेरुरज्जु में चोट लग जाने पर पुरुष नपुंसक भी हो सकता है।

प्रश्न—मेरुरज्जु में चोट लग जाने पर पुरुष नामर्द कैसे हो जाता है ?

उत्तर—देखिए यह तो आप जानते ही हैं कि शरीर में समस्त कार्य हमारे केन्द्रीय तन्त्रिका-तन्त्र अर्थात मस्तिष्क से लेकर मेरुरज्जु तक के भाग—के आधीन रहते हैं। हमारे सैक्स सम्बन्धी क्रिया-कलापों पर भी इसी का नियन्त्रण रहता है। चूंकि यह केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है अतः प्रकृति ने भी इसे मजबूत आवरण के अन्दर—मस्तिष्क को खोपड़ी में और मेरुरज्जु को मेरुदण्ड या रीढ़ के अन्दर—सुरक्षित करके रखा है। मेरुरज्जु के उस भाग में जो रीढ़ के कटि क्षेत्र (Lumbar area) में होता है वहां तन्त्रिकाओं का एक जंकशन स्टेशन जैसा होता है जिसे 'उत्थान केन्द्र' कहते हैं। यह केन्द्र शिश्न के उत्थान पर नियन्त्रण रखता है। जब मस्तिष्क में सैक्स सम्बन्धी विचार उठते हैं तो ये विचार आवेगा या समाचार के रूप में उत्थान केन्द्र में पहुंचते हैं और यह केन्द्र तन्त्रिकाओं द्वारा शिश्न में उद्दीपन भेजता है जिससे शिश्न में उत्थान आ जाता है। यदि रीढ़ पर इस केन्द्र से ऊपर या इस केन्द्र पर चोट लग जाए तो मस्तिष्क से इस केन्द्र तक आवेग न पहुंच पाने के कारण शिश्न में न तो उत्थान ही आ सकता है और न स्खलन हो सकता है। यदि मेरुरज्जु इस केन्द्र से नीचे क्षतिग्रस्त होता है तो पुंसत्व शक्ति पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रश्न—तो आपके कहने का मतलव यह है कि मस्तिष्क में कामोत्तेजक विचार आने पर ही शिश्न में उत्थान आ सकता है ?

उत्तर—नहीं ! उत्थान के लिए मस्तिष्क से सम्पर्क रहना हमेशा जरूरी नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि किसी पुरुष को दवा सुंघाकर वेहोश कर दिया जाए, या कोई पुरुष सो रहा हो अथवा किसी को पक्षाघात (लकवा) हो गया हो और इस अवस्था में ऐसे पुरुष के शिश्न को आहिस्ता-आहिस्ता सहलाया जाए तव भी शिश्न में उत्थान आ जाता है। इस दशा में शिश्न से उद्दीपन (समाचार) मेरुरज्जु के उत्थान केन्द्र में पहुंचते हैं और यहां से उत्थान की आज्ञा लेकर शिश्न में आ जाते हैं जिससे तुरन्त शिश्न में उत्थान आ जाता है। यदि स्त्री उत्थित शिश्न को योनि में लेकर समागम करने लगे तो मशीनी कार्य की तरह समागम होता रहेगा, वीर्य भी स्खलित हो जाएगा परन्तु पुरुष को मानसिक आनन्द नहीं मिल सकेगा।

प्रश्न—क्या हस्तमैथुन करने अथवा अधिक यौन समागम करने से मेरुरज्जु के उत्थान केन्द्र पर आघात पहुंचता है ?

उत्तर—जी नहीं ! वहुत-से रोगी जो मानसिक रूप से नपुंसक हैं अक्सर यही कहते रहते हैं कि चढ़ती जवानी के दिनों में उन्होंने वहुत अधिक हस्तमैथुन या सम्भोग किया था और अव ढलती उम्र में उसकी सजा भुगत रहे हैं। यह वास्तव में उनका भ्रम है। इन लोगों की नपुंसकता मानसिक है, शारीरिक नहीं।

प्रश्न—क्या मधुमेह के रोगी नपुंसक हो जाते हैं ?

उत्तर—जी नहीं ! मधुमेह के सव ही रोगी नपुंसक नहीं होते। जो रोगी उचित दवा और उचित भोजन द्वारा इस रोग पर नियन्त्रण रखे रहते हैं उनकी पुंसत्व शक्ति किसी अन्य पुरुष की तरह सामान्य स्तर पर वनी रहती है।

दरअसल मधुमेह ग्रस्त रोगी अपने को कमजोर समझने लगता है और यह हीनता की भावना ही उसे नपुंसक वनाए रखती है।

प्रश्न—सुना है मोटापा नामर्दी लाता है। क्या यह सच है ?

उत्तर—इसमें कोई शक नहीं कि मोटापा एक गम्भीर समस्या है। मोटे आदमियों की सैक्स में दिलचस्पी अवश्य ही बहुत घट जाती है; परन्तु उसमें पुंसत्व शक्ति कम नहीं होती। स्पष्ट शब्दों में यह कहना चाहिए कि मोटे लोगों के लिए यौन समागम करना आसान नहीं है। मोटे आदमी सुस्त होते हैं उनमें

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

फुर्ती और चुस्ती नहीं होती और वे हमेशा थके-थके से रहते हैं। मोटापे के कारण ये लोग परिश्रम से भागते हैं और आप जानते ही हैं कि यौन समागम भी एक मेहनत का ही काम है इसलिए वे इससे बचने की कोशिश करते हैं। परन्तु इन लोगों में न तो पुंसत्व शक्ति की कमी होती है और न पुरुष हारमोन की। ये लोग अगर अपना वजन घटा लें तो इनकी यौन सक्रियता फिर बढ़ जाती है।

प्रश्न—डाक्टर साहब ! हारमोन उपचार पद्धति के विशेषज्ञ होने के नाते क्या आप हमें यह बताने का कष्ट करेंगे कि नपुंसकता किन हारमोन की कमी से आती है ?

उत्तर—इसके लिए आप अपने सामने मस्तिष्क की रचना का चित्र रखिए। आप जानते हैं कि मस्तिष्क के नीचे के भाग में एक ग्रन्थि होती है जिसे पिचुइटरी या पीयूष ग्रन्थि कहते हैं। इस ग्रन्थि को मास्टर ग्लैण्ड इसलिए कहा जाता है कि शरीर की अन्य अन्तःस्रावी ग्रन्थियों को—जिसमें यौन ग्रन्थियां भी सम्मिलित हैं—यही ग्रन्थि अपने नियन्त्रण में रखती है। यदि पीयूष ग्रन्थि में कोई दोष उत्पन्न हो जाए तो उस व्यक्ति के शारीरिक विकास और पुंसत्व शक्ति पर घातक प्रभाव पड़ता है।

यद्यपि सैक्स क्रिया को सफल रूप से सम्पन्न करने के लिए कई हारमोनों की जरूरत होती है परन्तु इनमें सबसे महत्वपूर्ण पुरुष हारमोन है जिसे 'टेस्टोस्टीरोन' कहते हैं। इसका उत्पादन वृषण करते हैं। यदि शरीर में यह हारमोन कम मात्रा में उत्पन्न होने लगता है तो पुंसत्व शक्ति भी उसी मात्रा में कम हो जाती है।

साधारणतः चालीस वर्ष से कम आयु के पुरुषों में टेस्टोस्टीरोन की कमी नहीं होती। इसलिए अगर किसी युवक नपुंसक को दवा के रूप में इस हारमोन का सेवन कराया जाए तो उसमें यौन-दुर्बलता ज्यों-की-त्यों बनी रहती है। जिस पुरुष में पुरुष हारमोन की कमी हो जाती है उसी को 'टेस्टोस्टीरोन' सेवन कराने से लाभ होता है।

प्रश्न—दवा के रूप में इस हारमोन का सेवन किस प्रकार कराया जाता है ?

उत्तर—इसका इन्जेक्शन मांस पेशी में लगाया जाता है। वैसे आजकल टेस्टोस्टीरोन युक्त टेब्लेटस भी मिलती हैं। परन्तु मैं इंजेक्शन को ज्यादा पसन्द करता हूं क्योंकि इसका प्रभाव शीघ्रता से पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रश्न—क्या प्रौढ़ पुरुषों को इसकी अधिक आवश्यकता होती है ?

उत्तर—जी हां ! क्योंकि चालीस से अधिक उम्र के पुरुषों में पुरुष हारमोन का उत्पादन कम होने लगता है।

प्रश्न—क्या करीब-करीब सब ही प्रौढ़ पुरुषों की पुंसत्व शक्ति घट जाया करती है ?

उत्तर—जी हां ! फिर भी जहां चालीस से पचास वर्ष के बीच की आयु के कुछ पुरुषों को यौन सामर्थ्य कम होती नजर आती है, वहां 80 और उससे भी अधिक आयु के ऐसे पुरुष भी मौजूद हैं जिनमें पुंसत्व शक्ति बराबर बनी रहती है और वे लोग बड़ी सफलता के साथ सप्ताह में दो बार सम्भोग करते रहते हैं।

प्रश्न—इस अन्तर का क्या कारण है ?

उत्तर—मेरा ख्याल है कि आयु का सम्बन्ध व्यक्ति के वंश से भी है। मेरी समझ में दीर्घायु वंशागवत चीज है जो बाप से बेटे को विरासत के रूप में मिलती है। देखा गया है लम्बी उम्र वाले लोग अधिक सक्रिय भी होते हैं, जबकि छोटी उम्र वाले आमतौर पर आलसी स्वभाव के होते हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि सैक्स सक्रियता और उम्र दोनों साथ-साथ चलते हैं।

परन्तु अधिक उम्र वाले पुरुषों के साथ एक बहुत बड़ी समस्या यह है कि इन्हें सहयोग करने वाली औरत नहीं मिल पाती। अगर प्रोत्साहन और सहयोग देने वाली नारी मिल जाए और नियमित रूप से सम्भोग होता रहे तो मर्द में सैक्स सम्बन्धी कमजोरी नहीं आती चाहे वह सौ साल का भी क्यों न हो जाए।

प्रश्न—पचास-साठ या सत्तर की आयु के पुरुष जो हारमोन की कमी के कारण नपुंसक हो जाते हैं उन्हें टेस्टोस्टीरोन क्या लाभ पहुंचाता है ?

उत्तर—जैसा कि मैं अभी बता चुका हूं बहुत से प्रौढ़ों में पुरुष हारमोन का उत्पादन इतनी मात्रा में होता रहता है कि उन्हें इसकी कोई कमी नहीं रहती। इसलिए उन्हें यह हारमोन सेवन कराने की जरूरत भी नहीं पड़ती। अन्य पुरुषों को जिन्हें आवश्यकता हो उन्हें टेस्टोस्टीरोन देना उचित ही रहेगा।

आजकल बाजार में सब ही अच्छे कैमिस्टों के यहां टेस्टोस्टीरोन युक्त दवाओं की टेब्लेटस मिल जाती हैं। एक टेब्लेट लगभग 30-35 पैसे की पड़ती है और आमतौर पर केवल एक ही टेब्लेट रोजाना सुबह को नाश्ते के बाद खाई

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

जाती है। इन टिकियों को नियमित रूप से खाते रहने से शरीर में नई ताजगी और स्फूर्ति आ जाती है। पुरुष हारमोन की कमी से उत्पन्न लक्षण जैसे कि पेशियों में ढीलापन आ जाना, याददाश्त कम हो जाना, भूख कम हो जाना तथा चिड़चिड़ापन आदि खत्म हो जाते हैं और कामेच्छा बढ़ने लगती है। ऐसा लगने लगता है कि बुढ़ापा भाग गया है और जवानी फिर से लौट आई है।

प्रश्न—ये टेब्लेटस कितने दिनों तक खाई जाती हैं?

उत्तर—जब तक भी बुढ़ापे में युवक जैसे बने रहना चाहें इन्हें खाते रहिए।

प्रश्न—क्या विटामिन युक्त पौष्टिक आहार से पुंसत्व शक्ति बढ़ती है?

उत्तर—नहीं। ऐसा कोई नियम तो नहीं है परन्तु फिर भी प्रौढ़ व्यक्तियों को समुचित मात्रा में पौष्टिक आहार और विटामिनों की आवश्यकता रहती ही है। इन लोगों को भोजन कम मात्रा में लेना चाहिए और अनाज व दालों की मात्रा कुछ कम करके दूध, अण्डा व मांस जैसे प्रोटीन युक्त पदार्थ अवश्य लेते रहना चाहिए।

प्रश्न—क्या प्रौढ़ आदमियों को संयम बरतना चाहिए और यौन समागम कम-से-कम करना चाहिए ताकि उनकी पुंसत्व शक्ति सुरक्षित रहे?

उत्तर—बिल्कुल नहीं! मैं इस धारणा के खिलाफ हूं कि प्रौढ़ लोगों को स्वेच्छा से यौन समागम में कमी कर देना चाहिए। जितनी कमी की जरूरत होती है उतनी कमी प्रकृति ही कर देती है। आदमी को परिस्थितियों और इच्छा के अनुसार काम तृप्ति तब तक प्राप्त करते रहना चाहिए जब तक वह इसमें सक्षम और समर्थ हो।

ब्रह्मचर्य का पालन करने से शारीरिक शक्ति की रक्षा कभी नहीं होती। इसके विपरीत लम्बी अवधि तक मैथुन से वंचित रहने पर स्वास्थ्य में गिरावट आती है और यौन दुर्बलता घेर लेती है। दरअसल किसी भी आयु के लिए मैथुन क्रिया स्वास्थ्यवर्धक और स्फूर्तिदायक है। बुढ़ापे में तो मैथुन टानिक दवा का काम करता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

माडर्न एलोपैथिक ट्रीटमेन्ट

लेखक—डा० शिवकुमार व्यास, डीन आफ तिब्बिया कालेज, दिल्ली तथा डा० कालीचरन

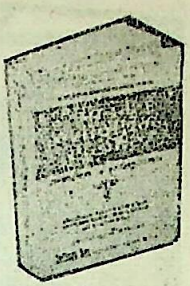

पुस्तक में बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक होने वाले समस्त प्रमुख रोगों की प्रभावशाली चिकित्सा बताई है। रोग निदान पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। बड़ा साइज 422 पृष्ठ अनेकों चित्र 1983 का द्वितीय संस्करण। मूल्य 30.00

इन्जेक्शन चिकित्सा

लेखक—डा० विजय रिख

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ऐलोपैथी के ढाई सौ के लगभग इन्जेक्शनों का पूर्ण विवरण, गुण-अवगुण, मात्रा, प्रयोग विधि आदि पुस्तक में दिए हैं। इन्जेक्शन लगाने की विधियां चित्र देकर समझाई हैं। पृष्ठ संख्या 408 मूल्य 20.00

पुरुषों के रोग और उनकी आधुनिक चिकित्सा

ले० : डा० कालीचरन A R.S.H. (London)

पुरुषों को होने वाले रोगों जैसे स्वप्नदोष शीघ्रपतन, नपुंसकता, सूजाक, आतशक, हर्निया, छोटी जननेन्द्री, अण्डकोष के रोग, काम-शक्ति की कमी आदि का पेटेण्ट डाक्टरी इलाज तथा वृद्ध पुरुषों को नवयौवन देने वाली हारमोन युक्त औषधियों का विस्तृत परिचय। मूल्य 10/-

स्त्रीरोग एवं प्रसूति विज्ञान

लेखक—डा० विजय रिख

यह पुस्तक स्त्रीरोग विज्ञान (गायनाकोलोजी) का सम्पूर्ण कोर्स हिन्दी भाषा में है। चिकित्सा कार्य का साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी इस पुस्तक की सहायता से सब प्रकार के स्त्री रोगों की मेडीकल और सर्जीकल चिकित्सा सफलता-पूर्वक कर सकता है। अनेकों चित्र। मूल्य 15.00

वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मेडीकल सैक्स गाइड

लेखक—डा० कालीचरन A.R.S.H.(London)

इस पुस्तक में सैक्स से सम्बन्धित 200 से अधिक ऐसे प्रश्नों के उत्तर दिए गये हैं जिन्हें आप लज्जा के कारण किसी से भी नहीं पूछ सकते जैसे ☐सुहाग रात्रि कैसे सफल बनाई जाए ☐संभोग करने तथा नारी का मन मोह लेने की कला ☐विभिन्न प्रकार के आसन तथा इनका सही प्रयोग ☐छोटे काम अंगों को ठीक करना ☐पुरुष गुप्त रोगों की चिकित्सा ☐संभोग शक्ति बढ़ाने वाली औषधियां इत्यादि। मूल्य 10.00

सैक्स की मेडीकल समस्याएं

लेखक—डा० कालीचरन

जवानी से लेकर बुढ़ापे तक उत्पन्न होने वाली सैक्स सम्बन्धी पचासों समस्याओं जैसे छोटा शिश्न, छोटे स्तन, शीघ्रपतन और नामर्दी, सन्तान न होना, बुढ़ापे में काम-शक्ति में कमी आदि पर ऐक्सपर्ट डाक्टरों की सलाह। सचित्र। मूल्य 5.00

शीघ्रपतन : कारण और उपचार

लेखक—पी० के० प्रदीप, एम० ए०

विद्वान लेखक ने पुस्तक में विस्तार से बताया है कि शीघ्रपतन किन कारणों से होता है तथा बिना किसी औषधि के केवल प्राकृतिक उपायों द्वारा किस प्रकार इस लज्जाजनक स्थिति से छुटकारा पाया जा सकता है। सचित्र। मूल्य 5.00

काम शक्ति वर्धक औषधियां

लेखक—डा० कालीचरन

नपुंसकता नाशक, बल-वीर्य वर्धक और स्वप्नदोष नाशक बताए जाने वाले स्वादिष्ट लड्डू, पंजीरी, हलुए, खीर, बर्फी, पाक आदि ताकत बढ़ाने वाली दवाएं घर पर बनाने के सरल आयुर्वेदिक नुस्खे। पांचवां एडीशन। मूल्य 5.00

क कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नपुंसकता : कारण और उपचार

लेखक—डा० गोलीवर M. D.

पुस्तक में नपुंसकता उत्पन्न होने के कारण तथा वे सरल उपाय बताए गए हैं जिनके द्वारा हजारों नपुंसक पुरुषों ने अपनी खोई हुई यौन सामर्थ्य फिर से हासिल कर ली हैं। मूल्य 5.00

स्तन सौन्दर्य कैसे बढ़ाएं

लेखक—डा० कालीचरन

स्तनों को स्वस्थ रखने और ढलके हुए वक्षस्थल को दृढ़ तथा उन्नत बनाने के सरल घरेलू उपाय जिनसे कई-कई बच्चों की माताएं भी अपने स्तन सौन्दर्य में नया निखार ला चुकी हैं।

चौथा एडीशन अनेकों चित्र मूल्य 5.00

काम कला के भेद

लेखक : डा० लीमन क्लार्क, M. D.

पुस्तक में सैक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है तथा दाम्पत्य जीवन का भरपूर आनन्द प्राप्त करने के लिए सैक्स की सही तकनीक अनेकों चित्रों के साथ समझाई है। लेखक अमेरिका के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। मूल्य 5.00

विवाहित जीवन में सैक्स पावर

लेखक—डा० कालीचरन

विवाहित जीवन की सफलता के रहस्य तथा काम-कला की सही ट्रेनिंग और वे वैज्ञानिक उपाय जिनको प्रयोग करके पुरुष शीघ्रपतन और कम-जोरी से छुटकारा पाकर समुचित यौन आनन्द उठा सकते हैं। अनेकों चित्र मूल्य 10.00

वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

यौगिक चिकित्सा

लेखक—शिवगोविन्द त्रिपाठी, एम० ए०

अनेकों प्रकार के रोगों को नष्ट करने तथा स्वास्थ्य और सौन्दर्य बढ़ाने के लिए अनुभव पूर्ण योगासन तथा यौगिक विधियां दी गई हैं। यौन दुर्बलताग्रस्त पुरुषों की पुरुषत्व शक्ति बढ़ाने के लिए कुछ चमत्कारी यौगिक क्रियाएं भी बताई हैं। अनेकों चित्र। मूल्य 10.00

घरेलू डाक्टर

लेखक—डा० कालीचरन

घरों में होती रहने वाली अनेकों तरह की बीमारियों का देशी और अंग्रेजी की पेटेन्ट दवाओं से इलाज तथा चोट फेंट की एमरजेन्सी चिकित्सा पुस्तक में बताई है। घर में यह पुस्तक रहने से आपको छोटे-मोटे रोगों के लिए डाक्टरों के पास नहीं भागना पड़ेगा। सचित्र। मूल्य 7.50

लहसुन महाराजा

लेखक—डा० कालीचरन

पुस्तक में अनेकों देशों के प्रसिद्ध डाक्टरों ने बताया है कि यक्ष्मा, निमोनिया, रक्त के रोग, श्वास, हृदय तथा पेट आदि के रोग नष्ट करने के लिए वे रोगियों को लहसुन का सेवन किस प्रकार कराते हैं। लहसुन से बनने वाली बहुत-सी घरेलू दवाओं के नुस्खे भी दिए हैं। मूल्य 6.00

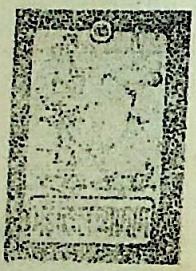

मेडीकल व्यायाम

लेखक—डा० ऐडविन फ्लैटो

कब्ज, गैस, दमा, मोटापा, गठिया, डायबिटीज, नपुंसकता, नेत्रों में ज्योति की कमी जैसे असाध्य रोगों से छुटकारा दिलाने तथा स्वास्थ्य और सुन्दरता बढ़ाने वाले अनेकों घरेलू व्यायाम जिनसे अमेरिका के मेडीकल कालिजों में हजारों निराश रोगियों को नवजीवन दिया जा चुका है। एक सौ से अधिक फोटोग्राफ मूल्य 15.00

वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

टेली-रेस्पान्स पावर

आपके शरीर में छुपी हुई वह अदृश्य शक्ति जिसके द्वारा आपकी इच्छित प्रत्येक वस्तु आपको मिल सकती है, जिसके द्वारा आप किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं; जिसके द्वारा कौडियां, पासे और ताश भी आपकी इच्छानुसार पलट जाते हैं, इसी शक्ति को जाग्रत करने की शिक्षा देने वाला रहस्यमय वैज्ञानिक कोर्स जो अमेरिका में आज भी 850 रुपये का बिक रहा है। मूल्य 12.00

हिप्नाटिज्म के चमत्कार

लेखक—डा० कालीचरन

इस पुस्तक से घर बैठे सम्मोहन विद्या सीख कर स्त्री-पुरुषों का मन मोह लेना, आंखें बन्द करके हजारों मील की दूरी पर घट रही घटनाओं को देख लेना, लोगों की बीमारियां व कष्ट दूर कर देना आदि कार्य कर सकते हैं। मूल्य 10.00

चमत्कारिक मंत्र-तंत्र और टोटके

लेखक—के०ए० दुबे 'पदमेश'

तन्त्र विद्या तथा ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान तथा 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के स्थायी लेखक पदमेश जी ने इस पुस्तक में ऐसे मंत्र,तंत्र, तावीज और टोटके आदि दिये हैं जिनसे आपके बिगड़े काम बन सकते हैं और समस्त मनोकामनाएं पूरी हो सकती हैं। मूल्य 12.00

अलौकिक शक्तियां

घरेलू साधनाएं जिनके द्वारा आप रहस्यमयी अलौकिक शक्तियों के स्वामी बनकर लोगों को अपने वश में कर लेना, मृत आत्माओं को बुलाकर उनसे बातचीत करना, दिव्य दृष्टि प्राप्त करके वर्तमान, भूत व भविष्य की बातें बता देना आदि चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं। विघ्न बाधाएं दूर करके मनोकामना पूर्ति के लिए यंत्र, मंत्र और तंत्र आदि भी दिए हैं। मूल्य 12.00

वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मैरिज गाइड

लेखक—डा० कालीचरन

विवाह के योग्य जीवन साथी का चुनाव, स्त्री-पुरुष के काम अंग, उनकी बनावट और कार्य, सुहागरात, संभोग की विधि, प्रेम करने की कला, गर्भाधान और शिशु जन्म, सैक्स सम्बन्धी उलझनें तथा उनका हल आदि बातें सरल भाषा में समझाई हैं। अनेकों चित्र मूल्य 10.00

बिना हथियारों के आत्मरक्षा

न्यूयार्क के एक रिटायर्ड पुलिस कमिश्नर की लिखी इस पुस्तक से जूडो और जु-जित्सू के पचासों प्रभावशाली दांव-पेच घर बैठे सीख कर अपने से दो गुने भारी हमलावर को पलक झपकते में जमीन पर पटक सकते हैं। चाकू-छुरे के हमले से बचने के दांव भी बताए हैं। मूल्य 12.00

करते-कुंगफू फाईटिंग कोर्स

भयंकर जापानी युद्ध-कलाएं—करते और कुंगफू—घर बैठे इस कोर्स द्वारा सीखिए। शरीर को गैंडे जैसा सख्त बनाने के गुप्त रहस्य तथा गुण्डों के साथ जम कर मार-धाड़ करने और उनको पछाड़ने के पचासों दांव-पेच व पैंतरे भी दिए हैं। चौथा एडीशन 175 चित्र मूल्य 10.00

10.00

12.00

6.00

वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ल्ड बुक कम्पनी के गौरवशाली प्रकाशन

५५ चमत्कारी जड़ी-बूटियां

लेखक—कविराज शिव गोविन्द त्रिपाठी, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य

पुस्तक के लेखक भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय में एक उच्च अधिकारी रह चुके हैं। उन्होंने जड़ी-बूटियों पर वर्षों तक अनुसंधान करने के पश्चात् ५५ ऐसी जड़ी-बूटियों का चुनाव किया है जो हमारे गांवों में आसानी से मिल जाती हैं और जिनमें अनेकों रोगों को नष्ट करने के गुण चमत्कार की तरह भरे पड़े हैं। पुस्तक में इन जड़ी-बूटियों के पैदा होने के क्षेत्र, इनका विस्तृत विवरण और पहचान तथा किस-किस रोग में इनको किस प्रकार और किस मात्रा में प्रयोग करें इत्यादि बातों की जानकारी दी है। इन जड़ी-बूटियों से अनेकों प्रकार के चूर्ण, गोलियां, पाक, मुरब्बे, दन्त मंजन, सुगन्धित केश तेल आदि बनाने के नुस्खे भी दिए हैं जिनको घर में इस्तेमाल करके सैकड़ों रुपयों की बचत की जा सकती है या इनका व्यापार करके लाखों रुपये कमाए जा सकते हैं। अनेकों जड़ी बूटियों के दुर्लभ चित्रों सहित। मूल्य 15 रुपए

सूर्य चिकित्सा

लेखक—कविराज शिव गोविन्द त्रिपाठी, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य

लाल, नीले या हरे रंग की कांच की बोतल में पानी भर कर कुछ घंटे तक धूप में रख दीजिए और फिर देखिए कि सूर्य की किरणों से किस प्रकार इन रंगीन बोतलों में रखा पानी चमत्कारी औषधि बन जाता है। इस पानी को पिला कर छोटे मोटे से लेकर बड़े से बड़े असाध्य रोग तक कुछ ही दिनों में दूर हो जाते हैं। संसार में लाखों व्यक्ति इस बिना खर्च की चिकित्सा से लाभ उठा रहे हैं। इस चिकित्सा पद्धति की पूरी जानकारी लेखक ने इस पुस्तक में दी है। मूल्य 6 रुपए

रत्न विज्ञान

लेखक—खान आलीजाह, बी० एस-सी०

पुस्तक में 84 प्रकार के मूल्यवान पत्थरों तथा रत्नों का वैज्ञानिक विश्लेषण और विस्तृत परिचय; उनके पैदा होने के स्थान, उनका रंग-रूप, अच्छे बुरे और असली-नकली की पहचान; ज्योतिष विद्या के अनुसार कौन से रत्न कब और कैसे धारण किए जाएं; रत्नों की तौल कैसे होती है; रत्नों का व्यापार कैसे आरंभ करें; रत्नों के भारतीय व्यापारियों के पते; आजकल किन-किन रत्नों का ठीक-ठीक मूल्य क्या चल रहा है; रत्नों द्वारा असाध्य रोगों की चिकित्सा की कुछ नई वैज्ञानिक विधियां आदि जानकारी दी गई है। सचित्र। मूल्य 15 रु०

वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

माडर्न ऐलोपैथिक ट्रीटमेन्ट (१९८३ का एडी०)	३०.००
एलोपैथिक निदान और चिकित्सा	२०.००
स्त्री रोग एवं प्रसूति विज्ञान (१९८३ का एडी०)	२०.००
इन्जेक्शन चिकित्सा (१९८२ का एडी०)	२०,००
पुरुषों के रोग और उनकी आधुनिक चिकित्सा	१०.००
मेडीकल बैक्टीरियोलोजी (जीवाणु विज्ञान)	७.५०
माडर्न मिक्स्चर्स एण्ड प्रेस्क्रिप्शन्स	८.००
५५ चमत्कारी जड़ी बूटियां	१५.००
मेडीकल व्यायाम (ले०-डा० ऐडविन फ्लैटो)	१५.००
भोजन द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य	६.००
लहसुन महाराजा	६.००
यौगिक चिकित्सा	१०.००
घरेलू डाक्टर	७.५०
हिप्नाटिज्म के चमत्कार	१०.००
कद लम्बा कैसे करें	१०.००
मेडीकल सैक्स गाइड	१०.००
कामशक्ति वर्धक औषधियां	५.००
सैक्स की मेडीकल समस्याएं	५.००
स्तन सौन्दर्य कैसे बढ़ाएं	५.००
शीघ्रपतन : कारण और उपचार	५.००
नपुंसकता : कारण और उपचार	५.००
यौन दुर्बलता और उसका इलाज	४.००
चालीस की आयु के बाद यौन जीवन	४.००
अलौकिक शक्तियां	१०.००
तंत्र विद्या	१२.००
चमत्कारी मंत्र-तंत्र और टोटके	१२.००
रत्न विज्ञान	१५.००

आपके नगर के पुस्तक-विक्रेताओं तथा रेलवे बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। यदि न मिलें तो 10 रु० एडवांस भेजकर वी० पी० द्वारा हमसे मंगा लें।

वर्ल्ड बुक कम्पनी

पत्र व्यवहार का पता : ३०१-चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

सेल्स आफिस : ४५३१-दाईवाड़ा, नई सडक, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection